

परिवहन विशेष



RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number : F.2 (P-2)
Press/2023

वर्ष 03, अंक 302, नई दिल्ली, बुधवार 01 जनवरी 2026, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

03 2026 का अंकज्योतिष भविष्यफल - यूनिवर्सल वर्ष 1

06 शिक्षा का स्वरूप: बदलते समय में बदलती प्रणाली

08 PUC इंस्पेक्शन मार्च तक के लिए टाल दिया गया, 1 अप्रैल से एक्शन लिया जाएगा

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

परिवहन विशेष दैनिक समाचार पत्र की ओर से

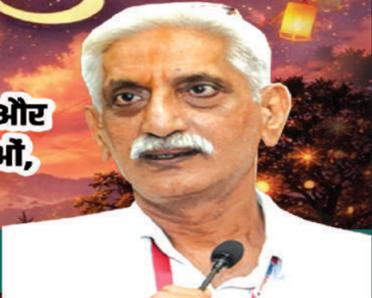
2026

की

शुभकामनाएं

यह नव वर्ष आपको समृद्धि, उत्तम स्वास्थ्य, सुख-शांति और निरंतर सफलता प्रदान करे। आपका जीवन नई आशाओं, नई उपलब्धियों और खुशियों से भरा रहे।

संजय बाटला पब्लिशर / मुख्य संपादक



जनकल्याण परिवहन सीरीज: राष्ट्र की सड़कों पर जनस्वास्थ्य की आवाज

(लेखक: संजय कुमार बाटला)

भाग 1: मिलावट का ट्रैफिक - भोजन से ईंधन तक विष का सफर

मुख्य विचार:
भोजन ही नहीं, बल्कि ईंधन और ऑटोमोबाइल उद्योग में भी मिलावट की प्रवृत्ति खतरनाक रूप से बढ़ रही है। नकली या निम्न-गुणवत्ता वाले पेट्रोल, डीजल और ल्यूब्रिकेंट्स न केवल इंजन को नुकसान पहुंचाते हैं, बल्कि वातावरण में जहरीले प्रदूषक छोड़ते हैं।

संदेश:
ईंधन गुणवत्ता नियंत्रण, BIS मानक, और निरीक्षण प्रणाली की सख्ती ही मिलावट की जड़ों पर प्रहार करेगी।

भाग 2: धुआँ और सांस - वाहन प्रदूषण से बढ़ता सार्वजनिक स्वास्थ्य संकट

मुख्य विचार:
दिल्ली सहित भारत के प्रमुख शहरों में वाहन प्रदूषण फेफड़ों, हृदय और मस्तिष्क संबंधी बीमारियों का सबसे बड़ा कारण बनता जा रहा है।

संदेश:
स्वच्छ ईंधन नीति, इलेक्ट्रिक वाहनों को प्रोत्साहन, और सार्वजनिक परिवहन की मजबूती जनस्वास्थ्य की बुनियाद है। नागरिक का जिम्मेदार व्यवहार - जैसे नियमित वाहन जांच और साइड सफर - भी बदलाव ला सकता है।

भाग 3: सड़कें या रणभूमि -



सुरक्षा में लापरवाही की कीमत

मुख्य विचार:
भारत में हर वर्ष लगभग 1.5 लाख लोग सड़क दुर्घटनाओं में अपनी जान गंवाते हैं। दोष सिर्फ सड़कों का नहीं, बल्कि हमारी मानसिकता, अधुरी व्यवस्था और ट्रैफिक अनुशासन की कमी का भी है।

संदेश:
सड़क सुरक्षा केवल नीति नहीं, यह आचरण का प्रश्न है। हेलमेट, सीट बेल्ट, और औपचारिक ड्राइविंग शिक्षा - यही जीवनरक्षक राष्ट्रभक्ति है।

भाग 4: परिवहन और जनस्वास्थ्य - हर सांस की कीमत

मुख्य विचार:
प्रदूषित हवा सिर्फ पर्यावरणीय नहीं, बल्कि चिकित्सा आपदा (Public Health Disaster) बन चुकी है। बच्चे, बुजुर्ग और यात्री सबसे अधिक प्रभावित हैं।

संदेश:
समय आ गया है कि परिवहन व्यवस्था को स्वास्थ्य नीति का हिस्सा

माना जाए। "क्लीन ट्रांसपोर्ट, हेल्दी सिटीज" अब केवल नारा नहीं, राष्ट्रीय जननीति बने।

भाग 5: नैतिकता की गाड़ी - नागरिक ही असली चालक

मुख्य विचार:
कानून और नीतियाँ अपनी जगह हैं, पर नैतिकता और जिम्मेदारी ही बदलाव का इंजन हैं। नागरिक व्यवहार में ईमानदारी, दूसरों की सुरक्षा का सम्मान और जिम्मेदार उपभोग ही मिलावट-मुक्त भारत का रास्ता दिखाएँगे।

संदेश:
सच्ची देशभक्ति वही है, जो अपने कर्तव्य से राष्ट्र और मानवता - दोनों की रक्षा करे।

(श्रृंखला निष्कर्ष): परिवहन केवल गति नहीं, बल्कि जनजीवन की धड़कन है। यदि इस धड़कन में ईंधन, वायु, और नैतिकता की शुद्धता बनी रहे - तो राष्ट्र का शरीर स्वस्थ और आत्मा सशक्त रहेगी। यही सच्चा "परिवहन में जनकल्याण" होगा।

जनकल्याण परिवहन सीरीज, भाग:- 5

“नैतिकता की गाड़ी — नागरिक ही असली चालक”

वास्तव में “जनकल्याण परिवहन सीरीज” का नैतिक और दार्शनिक केंद्र है। यह वह कड़ी है जो तकनीकी नीतियों के बजाय नागरिक चेतना और नैतिक जिम्मेदारी पर ध्यान केंद्रित करती है

जनकल्याण परिवहन सीरीज: राष्ट्र की सड़कों पर जनस्वास्थ्य की आवाज

(लेखक: संजय कुमार बाटला)

परिवहन विशेष, हिंदी दैनिक (आरएनआई मान्यता प्राप्त)

भारत की सड़कों पर गति और सुविधा की होड़ में कहीं ईंसानियत पीछे छूटती जा रही है। यातायात नियमों के उल्लंघन से लेकर ईंधन की मिलावट और प्रदूषण फैलाने तक - हर गलती का एक साझा सूत्र है

नैतिकता का क्षरण। कानून और नीति अपने स्थान पर हैं, पर जब तक नागरिक खुद अपने कर्तव्यों के चालक नहीं बनते, तब तक बदलाव का इंजन नहीं चलेगा।

नैतिकता: नीति की आत्मा, नागरिकता की परीक्षा नियम पुस्तकों में सड़क सुरक्षा, प्रदूषण नियंत्रण और ईंधन गुणवत्ता के स्पष्ट बिंदु हैं, लेकिन इनका वास्तविक अमल नागरिक व्यवहार पर निर्भर है।

* जब कोई चालक सिग्नल पर रुकता है, * प्रदूषण जांच करवाता है, या * सड़क पर पैदल यात्री को रास्ता देता है - तो वह केवल नियम नहीं निभा रहा होता, * बल्कि राष्ट्र के प्रति अपना



नैतिक कर्तव्य निभा रहा होता है।

नैतिकता का अर्थ केवल ईमानदारी नहीं - यह जिम्मेदारी, सहयोग, और दूसरों के जीवन के प्रति सम्मान का व्यवहार है। सड़क पर यही व्यवहार सबसे बड़ा 'जनकल्याण' है।

नागरिक आचरण ही असली कानून कानून व्यवस्था तब ही प्रभावी होती है जब नागरिक उसे आंतरिक रूप से अपनाते हैं।

* हेलमेट लगाने के पीछे डर नहीं,

बल्कि आत्म-सम्मान हो; * प्रदूषण जांच करवाना मजबूरी नहीं, बल्कि पर्यावरण-जागरूकता का प्रतीक हो।

*** यही वह परिवर्तन है जो किसी भी राष्ट्र को अनुशासनशील और सुरक्षित बना सकता है।**

सच्चा नागरिक वह नहीं जो केवल नियम जानता है, बल्कि वह है जो उन्हें अपने आचरण में उतारता है - चाहे कैमरा हो या न हो।

# 5 कर्तव्य, 5 लाभ		
कर्तव्य	कार्य	लाभ
ट्रैफिक अनुशासन	हर सिग्नल पर रुकें	30% दुर्घटनाएँ कम
PUC जांच	हर 6 माह अनिवार्य	प्रदूषण 20% घटा
सुरक्षित उपकरण	हेलमेट/सीटबेल्ट	40% मौतें रोकीं
साइड सफर	कारपूलिंग अपनाएँ	ईंधन+धुआँ बचत
ईमानदार उपभोग	शुद्ध ईंधन लें	मिलावट पर अंकुश

जन-नैतिकता से जनकल्याण की दिशा विकसित देशों में सुरक्षित सड़कें केवल बेहतर इंफ्रास्ट्रक्चर से नहीं बनीं - बल्कि वहाँ की जनता ने नियमों को अपनी संस्कृति बना लिया।

भारत में भी यही क्रांति संभव है, यदि हर व्यक्ति यह समझे कि उसके आचरण का असर किसी अनजान परिवार की सुरक्षा, किसी बच्चे के भविष्य और किसी शहर की वायु पर पड़ता है।

हर नागरिक यदि अपने हिस्से का

ट्रैफिक अनुशासन निभाए, तो सड़कें रणभूमि से फिर से सार्वजनिक जीवन की धमनियाँ बन सकती हैं।

निष्कर्ष: सच्ची राष्ट्रभक्ति, जिम्मेदारी का पालन

* देशभक्ति झंडों या नारों से नहीं, बल्कि अपने दायित्वों के सटीक पालन से झलकती है।

* सड़कों पर सुरक्षा, * पेट्रोल पंपों पर ईमानदारी, और

* प्रदूषण पर नियंत्रण - *** यही आधुनिक युग की सच्ची देश सेवा है।**

* मिलावट-मुक्त ईंधन जितना आवश्यक है, उतना ही मिलावट - मुक्त आचरण भी।

* नागरिक ही इस गाड़ी का असली चालक है, और जब वही ईमानदारी से स्टीयरिंग संभालेगा - तब "परिवहन में जनकल्याण" केवल नीति नहीं, एक आंदोलन बन जाएगा।

TEMPLE OF LIBERALIZATION AND WELFARE ALLIED TRUST (REGD.) TOLWA

की ओर से सभी देशवासियों को

नववर्ष की हार्दिक शुभकामनाएं!

2026

संजय बाटला
चेयरमैन / राष्ट्रीय अध्यक्ष

पिंकी कुंडू
राष्ट्रीय महासचिव

ट्रांसपोर्ट विशेष न्यूज लिमिटेड

की ओर से भारत देश के सभी वासियों और देश में परिवहन क्षेत्र से जुड़े साथियों को

2026

की हार्दिक शुभकामनाएं!

संजय कुमार बाटला प्रिंस बाटला अंश बाटला

ट्रांसपोर्ट ऑपरेटर्स एंड लेबर वेलफेयर एसोसिएशन (पंजी.)

की ओर से भारत देश के सभी वासियों और देश में परिवहन क्षेत्र से जुड़े साथियों को

नव वर्ष 2026 की हार्दिक शुभकामनाएं!

HAPPY NEW YEAR 2026

TOLWA

संजय बाटला
चेयरमैन / राष्ट्रीय अध्यक्ष

PARIVAHAN VISHESH NEWS

098117 32095
www.newsparivahan.com

HAPPY NEW YEAR 2026

टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट पंजीकृत

<https://tolwa.com/about.html> | tolwaindia@gmail.com, tolwadelhi@gmail.com



पिंकी कुंडू

फर्जी ई-चालान पोर्टल्स तेजी से बढ़ रहे हैं।

Cyble Research & Intelligence Labs (US आधारित) ने एक फ्रिशिंग अभियान का खुलासा किया है जो भारत की ट्रैफिक प्रवर्तन प्रणाली पर भरोसे का दुरुपयोग कर रहा है।

घोटाला कैसे काम करता है

- धोखेबाज SMS अलर्ट भेजते हैं जिनमें बकाया चालान का दावा होता है।
- लिंक आपको फर्जी

आज का साइबर सुरक्षा विचार, ट्रैफिक चालान घोटाला अलर्ट!

पोर्टल्स पर ले जाते हैं जो सरकारी साइट्स की नकल करते हैं।

- पीडिटों को नकली उल्लंघन और छोटे जुर्माने दिखाए जाते हैं।
- भुगतान केवल क्रेडिट/डेबिट कार्ड से होता है पूरी कार्ड जानकारी चोरी।
- बार-बार भुगतान प्रयासों से कई बार संवेदनशील डेटा चुराया जाता है।
- यही ढांचा बैंकों, कूरियर सेवाओं और परिवहन प्लेटफॉर्मों की नकल में भी इस्तेमाल होता है।

फर्जी चालानों से बचाव के सुरक्षित उपाय

स्टेप 1: नकली SMS तुरंत पहचानें

संदेश प्रकार कोड उदाहरण अर्थ

✓ सेवा JD-FINABC-S

स्टेप 2: संदिग्ध APK फ़ाइल कभी डाउनलोड न करें

- ट्रैफिक पुलिस, बैंक या सरकारी एजेंसी सभी WhatsApp/SMS से APK नहीं भेजती।

स्टेप 3: घबराने से पहले सत्यापित करें

- चालान केवल यहाँ देखें: echallan.parivahan.gov.in
- संदेह होने पर जारी करने वाले प्राधिकरण को कॉल करें।
- स्टेप 4: अपने फोन को सुरक्षित करें
- सेटिंग्स सिक्वोरिटी Install from Unknown Sources बंद करें
- स्टेप 5: अगर आपने दुर्भावनापूर्ण APK इंस्टॉल किया है

प्रदाताओं से

- सरकारी TRAI-NG
- सरकारी विभागों से प्रचार AIRTEL-P
- विज्ञापन/ऑफर लेन-देन AXISBK-T
- बैंकिंग/OTP घोटाला अलर्ट CP-VEDING कोई कोड नहीं = संभवतः नकली!
- TRAI की मैसेज ऑथेंटिकेशन तकनीक असली भेजने वालों की पहचान में मदद करती है। क्लिक करने से पहले कोड जरूर देखें!

स्टेप 6: तुरंत रिपोर्ट करें

- कॉल/SMS करें: TRAI हेलपलाइन 1909
- रिपोर्ट करें: Sanchar Sathi Portal
- शिकायत दर्ज करें: cybercrime.gov.in सतर्क रहें। सुरक्षित रहें। सशक्त बनें।

इसे अपने परिवार, दोस्तों और सहकर्मियों के साथ साझा करें।

एक फॉरवर्ड = हजार लोगों की सुरक्षा!

APK लिंक दिखे → नज़र अंदाज़ करें, डिस्लिट करें, रिपोर्ट करें।

स्टेप 3: घबराने से पहले सत्यापित करें

चालान केवल यहाँ देखें: echallan.parivahan.gov.in

संदेह होने पर जारी करने वाले प्राधिकरण को कॉल करें।

स्टेप 4: अपने फोन को सुरक्षित करें

सेटिंग्स सिक्वोरिटी Install from Unknown Sources बंद करें

स्टेप 5: अगर आपने दुर्भावनापूर्ण APK इंस्टॉल किया है

1. → तुरंत Airplane Mode पर स्विच करें

2. APK फ़ाइल डिस्लिट करें

3. फ़ैक्टरी रीसेट करें (बैकअप के बाद)

4. सभी पासवर्ड एक साफ़ डिवाइस से बदलें

स्टेप 6: तुरंत रिपोर्ट करें

कॉल/SMS करें: TRAI हेलपलाइन 1909

रिपोर्ट करें: Sanchar Sathi Portal

शिकायत दर्ज करें: cybercrime.gov.in सतर्क रहें। सुरक्षित रहें। सशक्त बनें।

इसे अपने परिवार, दोस्तों और सहकर्मियों के साथ साझा करें।

एक फॉरवर्ड = हजार लोगों की सुरक्षा!

1. → तुरंत Airplane Mode पर स्विच करें

2. APK फ़ाइल डिस्लिट करें

3. फ़ैक्टरी रीसेट करें (बैकअप के बाद)

4. सभी पासवर्ड एक साफ़ डिवाइस से बदलें

स्टेप 6: तुरंत रिपोर्ट करें

कॉल/SMS करें: TRAI हेलपलाइन 1909

रिपोर्ट करें: Sanchar Sathi Portal

शिकायत दर्ज करें: cybercrime.gov.in सतर्क रहें। सुरक्षित रहें। सशक्त बनें।

इसे अपने परिवार, दोस्तों और सहकर्मियों के साथ साझा करें।

एक फॉरवर्ड = हजार लोगों की सुरक्षा!

1. → तुरंत Airplane Mode पर स्विच करें

2. APK फ़ाइल डिस्लिट करें

3. फ़ैक्टरी रीसेट करें (बैकअप के बाद)

4. सभी पासवर्ड एक साफ़ डिवाइस से बदलें

स्टेप 6: तुरंत रिपोर्ट करें

कॉल/SMS करें: TRAI हेलपलाइन 1909

रिपोर्ट करें: Sanchar Sathi Portal

शिकायत दर्ज करें: cybercrime.gov.in सतर्क रहें। सुरक्षित रहें। सशक्त बनें।

इसे अपने परिवार, दोस्तों और सहकर्मियों के साथ साझा करें।

एक फॉरवर्ड = हजार लोगों की सुरक्षा!

1. → तुरंत Airplane Mode पर स्विच करें

2. APK फ़ाइल डिस्लिट करें

3. फ़ैक्टरी रीसेट करें (बैकअप के बाद)

4. सभी पासवर्ड एक साफ़ डिवाइस से बदलें

स्टेप 6: तुरंत रिपोर्ट करें

कॉल/SMS करें: TRAI हेलपलाइन 1909

रिपोर्ट करें: Sanchar Sathi Portal

शिकायत दर्ज करें: cybercrime.gov.in सतर्क रहें। सुरक्षित रहें। सशक्त बनें।

इसे अपने परिवार, दोस्तों और सहकर्मियों के साथ साझा करें।

एक फॉरवर्ड = हजार लोगों की सुरक्षा!

1. → तुरंत Airplane Mode पर स्विच करें

2. APK फ़ाइल डिस्लिट करें

3. फ़ैक्टरी रीसेट करें (बैकअप के बाद)

4. सभी पासवर्ड एक साफ़ डिवाइस से बदलें

स्टेप 6: तुरंत रिपोर्ट करें

कॉल/SMS करें: TRAI हेलपलाइन 1909

रिपोर्ट करें: Sanchar Sathi Portal

शिकायत दर्ज करें: cybercrime.gov.in सतर्क रहें। सुरक्षित रहें। सशक्त बनें।

इसे अपने परिवार, दोस्तों और सहकर्मियों के साथ साझा करें।

एक फॉरवर्ड = हजार लोगों की सुरक्षा!

1. → तुरंत Airplane Mode पर स्विच करें

2. APK फ़ाइल डिस्लिट करें

3. फ़ैक्टरी रीसेट करें (बैकअप के बाद)

4. सभी पासवर्ड एक साफ़ डिवाइस से बदलें

स्टेप 6: तुरंत रिपोर्ट करें

कॉल/SMS करें: TRAI हेलपलाइन 1909

रिपोर्ट करें: Sanchar Sathi Portal

शिकायत दर्ज करें: cybercrime.gov.in सतर्क रहें। सुरक्षित रहें। सशक्त बनें।

इसे अपने परिवार, दोस्तों और सहकर्मियों के साथ साझा करें।

एक फॉरवर्ड = हजार लोगों की सुरक्षा!

स्वास्थ्य विशेष

स्वास्थ्य आपका कोशिश हमारी

जानकारी जिसका ज्ञान सबको होना चाहिए

- योग, भोग और रोग ये तीन अवस्थाएं हैं।
- लकवा - सोडियम की कमी के कारण होता है।
- हाई बी पी में - स्नान व सोने से पूर्व एक गिलास जल का सेवन करें तथा स्नान करते समय थोड़ा सा नमक पानी में डालकर स्नान करें।
- लो बी पी - सेंधा नमक डालकर पानी पीयें।
- कूबड़ निकलना - फास्फोरस की कमी।
- कफ - फास्फोरस की कमी से कफ बिगड़ता है, फास्फोरस की पूर्ति हेतु आर्सेनिक की उपस्थिति जरूरी है। गुड़ व शहद खाएं।
- दमा, अस्थमा - सल्फर की कमी।
- सिंजैरियन आपरेशन - आयरन, कैल्शियम की कमी।
- सभी क्षारीय वस्तुएं दिन डूबने के बाद खायें।
- अम्लीय वस्तुएं व फल दिन डूबने से पहले खायें।
- जम्भाई - शरीर में आक्सीजन की कमी।
- जुकाम - जो प्रातः काल जूस पीते हैं वो उस में काला नमक व अदरक डालकर पीयें।
- ताम्बे का पानी - प्रातः खड़े होकर नंगे पाँव पानी ना पियें।
- किडनी - भूलकर भी खड़े होकर गिलास का पानी ना पियें।
- गिलास एक रेखीय होता है तथा इसका सर्फेस अधिक होता है। गिलास अंग्रेजी (पुर्नगाल) की सभ्यता से आया है अतः लोटे का पानी पियें, लोटे का कम सर्फेस होता है।
- अस्थमा, मधुमेह, कैंसर से गहरे रंग की वनस्पतियाँ बचाती हैं।
- वास्तु के अनुसार जिस घर में जितना खुला स्थान होगा उस घर के लोगों का दिमाग व हृदय भी उतनी ही खुला होगा।
- परम्परायें वहीं विकसित होंगी जहाँ जलवायु के अनुसार व्यवस्थायें विकसित होंगी।
- पथरी - अर्जुन की छाल से पथरी की समस्यायें ना के बराबर हैं।
- RO का पानी कभी ना पियें यह गुणवत्ता को स्थिर नहीं रखता। कुएँ का पानी पियें। बारिश का पानी सबसे अच्छा, पानी को सफाई के लिए सहजिन की फली सबसे बेहतर है।
- सोकर उठते समय हमेशा दायीं करवट से उठें या जिंघर का स्वर चल रहा हो उभर करवट लेकर उठें।
- पेट के बल सोने से हिनिया, प्रोस्टेट, एंथेडक्स की समस्या आती है।
- भोजन के लिए पूर्व दिशा, पढाई के लिए उत्तर दिशा बेहतर है।
- HDL बढ़ने से मोटापा कम होगा LDL व VLDL कम होगा।
- गैस की समस्या होने पर भोजन में अजवाइन मिलाता शुरू कर दें।
- चीनी के अन्दर सल्फर होता जो कि पटाखों में प्रयोग होता है, यह शरीर में जाने के बाद बाहर नहीं निकलता है। चीनी खाने से पित्त बढ़ता है।
- चीनी के अन्दर में नौद कम आती है।
- कफ के प्रभाव में व्यक्ति प्रेम अधिक करता है।
- कफ के असर में पढाई कम होती है।
- पित्त के असर में पढाई अधिक होती है।
- आँखों के रोग - कैरेट्स, मोतियाबिन्द, ग्लूकोमा, आँखों का लाल होना आदि ज्यादातर रोग कफ के कारण होता है।
- शाम को वात-नाशक चीजें खानी चाहिए।
- प्रातः 4 बजे जाग जाना चाहिए।
- सोते समय रक्त दवाव सामान्य या



- सामान्य से कम होता है।
- व्यायाम - वात रोगियों के लिए मालिश के बाद व्यायाम, पित्त वालों को व्यायाम के बाद मालिश करनी चाहिए। कफ के लोगों को स्नान के बाद मालिश करनी चाहिए।
- भारत की जलवायु वात प्रकृति की है, दौड़ की बजाय सूर्य नमस्कार करना चाहिए अजवाइन मिलाता शुरू कर दें।
- जो माताएं घरेलू कार्य करती हैं उनके लिए व्यायाम जरूरी नहीं।
- निद्रा से पित्त शांत होता है, मालिश से वायु शांत होती है, उल्टी से कफ शांत होता है तथा उपवास (लंघन) से बुखार शांत होता है।
- भारी वस्तुयें शरीर का रक्तदाव बढ़ाती हैं, क्योंकि उनका गुरुत्व अधिक होता है।
- दुनिया के महान वैज्ञानिक का स्कूली शिक्षा का सफर अच्छा नहीं रहा, चाहे वह 8 वीं फेल न्यूटन हों या 9 वीं फेल आइस्टीन हों।
- मांस खाने वालों के शरीर से अम्ल-साव करने वाली ग्रंथियाँ प्रभावित होती हैं।
- तेल हमेशा गाढ़ा खाना चाहिए सिर्फ लकड़ी वाली पाणी का, दूध हमेशा पतला पीना चाहिए।
- छिलके वाली दाल-सब्जियों से कोलेस्ट्रॉल हमेशा घटता है।
- कोलेस्ट्रॉल की बढ़ी हुई स्थिति में

- इन्सुलिन खून में नहीं जाता है। ब्लड शुगर का सम्बन्ध ग्लूकोस के साथ नहीं अपितु कोलेस्ट्रॉल के साथ है।
- मिर्गौ दौरे में अमोनिया या चूने की गंध सूंघनी चाहिए।
- सिरदर्द में एक चुटकी नौसादर व अदरक का रस रोगी को सुखायें,
- भोजन के पहले मीठा खाने से बाद में खट्टा खाने से शुगर नहीं होता है।
- भोजन के आधे घंटे पहले सलाद खाएँ उसके बाद भोजन करें।
- अवसाद में आयरन, कैल्शियम, फास्फोरस की कमी हो जाती है। फास्फोरस गुड़ और अमरुद में अधिक है।
- पीले केले में आयरन कम और कैल्शियम अधिक होता है। हरे केले में कैल्शियम थोड़ा कम लेकिन फास्फोरस ज्यादा होता है तथा लाल केले में कैल्शियम कम आयरन ज्यादा होता है। हर हरी चीज में भरपूर फास्फोरस होती है, वही हरी चीज पकने के बाद पीली हो जाती है जिसमें कैल्शियम अधिक होता है।
- छोटे केले में बड़े केले से ज्यादा कैल्शियम होता है।
- रसौली की गलाने वाली सारी दवाई चूने से बनती हैं।
- हेपेटाइटिस A से E तक के लिए चूना बेहतर है।
- एंटी टिनेस के लिए हाइपेरियम 200 की दो-दो बूंद 10-10 मिनट पर तीन बार दे।
- ऐसी चोट जिसमें खून जम गया हो उसके लिए नैटमसलफ दो-दो बूंद 10-10 मिनट पर तीन बार दें। बच्चों को एक बूंद पानी में डालकर दें।
- मोटे लोगों में कैल्शियम की कमी होती है अतः त्रिफला दें। त्रिकूट (सोंठ+कालीमिर्च+ मधा पीपली) भी दे सकते हैं।
- अस्थमा में नारियल दें। नारियल फल होते हुए भी क्षारीय है। दालचीनी + गुड़ + नारियल दें।
- चूना बालों को मजबूत करता है तथा आँखों की रोशनी बढ़ाता है।
- दूध का सर्फेस टेन्शन कम होने से त्वचा का कचरा बाहर निकाल देता है।
- गाय की घी सबसे अधिक पित्तनाशक फिर कफ व वायुनाशक है।
- जिस भोजन में सूर्य का प्रकाश व हवा का स्पर्श ना हो उसे नहीं खाना चाहिए।
- गौ-मूत्र अर्क आँखों में ना डालें।
- गाय के दूध में घी मिलाकर देने से कफ की संभावना कम होती है लेकिन चीनी मिलाकर देने से कफ बढ़ता है।
- मासिक चक्र के दौरान वायु बढ़ जाता है, 3-4 दिन स्त्रियों को उल्टा सोना चाहिए इससे गर्भाशय फैलने का खतरा नहीं रहता है। दर्द की स्थिति में गर्म पानी में देशी घी दो चम्मच डालकर पियें।
- रात में आलू खाने से वजन बढ़ता है।
- भोजन के बाद बज्जसन में बैठने से वात नियंत्रित होता है।
- भोजन के बाद कंधी करें कंधी करते समय आपके बालों में कंधी के दांत चुभने चाहिए। बाल जन्म सफेद नहीं होगा।
- अजवाइन अपान वायु को बढ़ा देता है जिससे पेट की समस्यायें कम होती हैं।
- अगर पेट में मल बंध गया है तो अदरक का रस या सोंठ का प्रयोग करें।
- कब्ज होने की अवस्था में सुबह पानी पीकर कुछ देर एंड्रियों के बल चलाना चाहिए।

- रास्ता चलने, श्रम कार्य के बाद थकने पर या धातु गर्म होने पर दायीं करवट लेटना चाहिए।
- जो दिन में दायीं करवट लेता है तथा रात्रि में बायीं करवट लेता है उसे थकान व शारीरिक पीड़ा कम होती है।
- बिना कैल्शियम की उपस्थिति के कोई भी विटामिन व पोषक तत्व पूर्ण कार्य नहीं करते हैं।
- स्वस्थ व्यक्ति सिर्फ 5 मिनट शौच में लगाता है।
- भोजन करते समय डकार आपके भोजन को पूर्ण और हाजम को संतुष्टि का संकेत है।
- सुबह के नाश्ते में फल, दोपहर को दही व रात्रि को दूध का सेवन करना चाहिए।
- रात्रि को कभी भी अधिक प्रोटीन वाली वस्तुयें नहीं खानी चाहिए। जैसे - दाल, पनीर, राजमा, लोबिया आदि।
- शौच और भोजन के समय मुंह बंद रखें, भोजन के समय टी वी ना देखें।
- मासिक चक्र के दौरान स्त्री को ठंडे पानी से स्नान, व आग से दूर रहना चाहिए।
- एलोपैथी एक ही चीज दी है, दर्द से राहत। आज एलोपैथी की दवाओं के कारण ही लोगों की किडनी, लीवर, आँतें, हृदय खराब हो रहे हैं। एलोपैथी एक विमारी खत्म करती है तो दस विमारी देकर भी जाती है।
- खाने की वस्तु में कभी भी ऊपर से नमक नहीं डालना चाहिए, ब्लड-प्रेसर बढ़ता है।
- रंगों द्वारा चिकित्सा करने के लिए इंद्रधनुष को समझ लें, पहले जामुनी, फिर नीला..... अंत में लाल रंग।
- छोटे बच्चों को सबसे अधिक सोना चाहिए, क्योंकि उनमें वह कफ प्रवृत्ति होती है, स्त्री को भी पुरुष से अधिक विश्राम करना

- सुख निकलने के बाद उठते हैं, उन्हें पेट की भयंकर बीमारियाँ होती हैं, क्योंकि बड़ी आंत मल को चूसने लगती है।
- बिना शरीर की गंदगी निकाले स्वास्थ्य शरीर की कल्पना निरर्थक है, मल-मूत्र से 5%, कार्बन डाई ऑक्साइड छोड़ने से 22%, तथा पसीना निकलने लगभग 70% शरीर से विजातीय तत्व निकलते हैं।
- चिंता, क्रोध, ईर्ष्या करने से गलत हार्मोन्स का निर्माण होता है जिससे कब्ज, बवासीर, अजीर्ण, अपच, रक्तचाप, थायरायड की समस्या उत्पन्न होती है।
- गर्मियों में बेल, गुलकंद, तरबूजा, खरबूजा व सर्दियों में सफेद मूसली, सोंठ का प्रयोग करें।
- प्रसव के बाद माँ का पीला दूध बच्चे की प्रतिरोधक क्षमता को 10 गुना बढ़ा देता है। बच्चों को टीके लगाने की आवश्यकता नहीं होती है।
- रात को सोते समय सर्दियों में देशी मधु लगाकर सोयें त्वचा में निखार आएगा।
- दुनिया में कोई चीज व्यर्थ नहीं, हमें उपयोग करना आना चाहिए।
- जो अपने दुखों को दूर करके दूसरों के भी दुःखों को दूर करता है, वही मोक्ष का अधिकारी है।
- सोने से आधे घंटे पूर्व जल का सेवन करने से वायु नियंत्रित होती है, लकवा, हार्ट-अटैक का खतरा कम होता है।
- स्नान से पूर्व और भोजन के बाद पेशाब जाने से रक्तचाप नियंत्रित होता है।
- तेज धूप में चलने के बाद, शारीरिक श्रम करने के बाद, शौच से आने के तुरंत बाद जल का सेवन निषिद्ध है।
- त्रिफला अमृत है जिससे वात, पित्त, कफ तीनों शांत होते हैं। इसके अतिरिक्त भोजन के बाद पान व चूना।
- इस विश्व की सबसे महँगी दवा। लार है, जो प्रकृति ने तुम्हें अनमोल दी है, इसे ना थूकें।

खाना पचेगा या सड़ेगा

पिकी कुंठू

खाना पचने के बाद पेट में खाना पचेगा या खाना सड़ेगा, यह जानना बहुत जरूरी होता है। हमने रोटी खाई, हमने दाल खाई, हमने सब्जी खाई, हमने दही खाया लस्सी पी, दूध, दही छाछ, लस्सी फल आदि यह सब कुछ भोजन के रूप में हमने ग्रहण किया। यह सब कुछ हमें उर्जा देते हैं और पेट उस उर्जा को आगे ट्रांसफर करता है।

पेट में एक छोटा सा स्थान होता है, जिसको हम हिन्दी में रेआमाशय कहते हैं। इसका संस्कृत नाम है रजतरा। यह एक थैली की तरह होता है। यह जठर हमारे शरीर में सबसे महत्वपूर्ण है, क्योंकि सारा खाना सबसे पहले इसी में आता है। यह बहुत छोटा सा स्थान है। हम जो कुछ भी खाते हैं, वह सब इस आमाशय में आ जाता है। आमाशय में जो अग्नि प्रदीप्त होती है उसे जठराग्नि कहते हैं।

यह जठराग्नि आमाशय में प्रदीप्त होने वाली आग है। जैसे ही हम खाना खाना खाते हैं, जठराग्नि प्रदीप्त हो जाती है। यह ऑटोमेटिक है, जैसे ही हमने रोटी का पहला टुकड़ा मुँह में डाला, कि इधर जठराग्नि प्रदीप्त हो गई। यह अग्नि तब तक जलती है जब तक खाना पचता है। अब हमने खाना खाते ही गटागत पानी पी लिया और खूब ठंडा पानी पी लिया। अब जो आग (जठराग्नि) जल रही थी, वह बुझ गयी। आग अगर बुझ गयी, तो पचने की जो क्रिया है वह रुक जाती है।

अब हमें हमेशा याद रखना चाहिए कि खाना पेट में जाने पर पेट में दो ही क्रियाएँ होती हैं, एक क्रिया है

#खाना_पचेगा या सड़ेगा

स्वस्थ जीवन के लिए जठराग्नि का महत्व!

जठराग्नि

पाचन पण्य ल शक्ति

पाचन पण्य ल शक्ति

रक्त, रक्त, मांस, मेद, अस्ती

सड़न

सड़न सड़न

सड़न पित्त ल शक्ति

सुरिक एण्डिड, खनक किलेरोजेन, हार्ट अटैक

“भोजनान्ते विषं वारी”

भोजन के तुरंत बाद पानी = जहर!

फिर पियें पानी

जिसको हम कहते हैं पचना, और दूसरी है, सड़ना।

आयुर्वेद के हिसाब से आग जलेगी तो खाना पचेगा, खाना पचेगा तो उससे रस बनेगा। रस से मांस, मज्जा, रक्त, वीर्य, हड्डियाँ, मल, मूत्र और अस्थि बनेगा और सबसे अंत में मेद बनेगा। यह तभी होगा जब खाना पचेगा। खाना सड़ने पर सबसे पहला जहर जो बनता है वह है यूरिक एसिड। यूरिक एसिड बढ़ने से ही घुटने, कंधे, कमर में दर्द होता है। जब खाना सड़ता है, तो यूरिक एसिड जैसा ही एक दूसरा विष बनता है जिसको हम कहते हैं एलडीएल (खराब कोलेस्ट्रॉल)। खराब कोलेस्ट्रॉल के बढ़ने से ही ब्लड प्रेशर (बीपी) बढ़ता है। ये सभी बीमारियाँ तब आती हैं जब खाना पचता नहीं है, बल्कि सड़ता है।

खाना पचने पर किसी भी प्रकार का कोई भी जहर नहीं बनता है। खाना पचने पर जो बनता है वह है मांस, मज्जा, रक्त, वीर्य, हड्डियाँ, मल, मूत्र, अस्थि और खाना नहीं पचने पर बनता है यूरिक एसिड, कोलेस्ट्रॉल, एलडीएल, वीएलडीएल और यही हमारे शरीर को रोगों का घर बनाते हैं। पेट में बनने वाला यही जहर जब ज्यादा बढ़कर खून में आता है, तो खून दिल की नाड़ियों में से निकल नहीं पाता और रोज थोड़ा थोड़ा कचरा जो खून में आया है, इकट्ठा होता रहता है और एक दिन नाड़ी को ब्लॉक कर देता है। इसी से हार्ट अटैक होता है।

अतः हमें ध्यान इस बात पर देना चाहिए कि जो हम खा रहे हैं, वह ठीक से पचना चाहिए, इसके लिए पेट में ठीक से आग (जठराग्नि) प्रदीप्त होनी ही चाहिए, क्योंकि बिना आग के खाना पचता नहीं है और खाना पकता भी नहीं है। महत्व की बात खाने को खाना नहीं खाने को पचना है। हमने क्या खाया, कितना खाया यह महत्वपूर्ण नहीं है। खाना अच्छे से पचे इसके लिए वाग्भट्ट जी ने सूत्र दिया है- “भोजनान्ते विषं वारी” (खाना खाने के तुरंत बाद पानी पीना जहर पीने के बराबर है)। इसलिए खाने के

अगर आपकी हड्डियों से चटकने की आवाज आ रही है, तो आज से ही ये चीजें खाना शुरू कर दें।

भागदौड़ भरी जिंदगी और गलत खान-पान, पौष्टिक खाने की कमी से शरीर अंदर से खोखला हो सकता है और कई गंभीर बीमारियाँ हो सकती हैं। इतना ही नहीं, यह हमारे शरीर की हड्डियों को भी कमजोर करता है। इसी वजह से आजकल कुछ लोग कम उम्र में ही हड्डियों से जुड़ी समस्याओं से परेशान हैं।

दरअसल, अगर शरीर में पोषक तत्वों की कमी हो जाए, तो हड्डियों से जुड़ी बीमारियाँ होने लगती हैं। ऐसे में अगर आप अपनी डाइट (Healthy Bones Diet) में कुछ चीजें शामिल करते हैं, तो हड्डियों की सेहत बेहतर होगी और वे मजबूत या मजबूत बनेंगी। आइए जानते हैं वे कौन सी चीजें हैं।

रचनी...



100 ग्राम चने में 345 mg कैल्शियम होता है। इसलिए, अपनी डाइट में चने को शामिल करने से शरीर को भरपूर कैल्शियम मिलता है। इसके लिए आप चने के आटे से रोटी, डोसा या लड्डू बनाकर खा सकते हैं।

बीन्स...

हड्डियों को खोखला होने से बचाने के लिए, प्रोटीन, फाइबर और कैल्शियम से भरपूर बीन्स को डाइट में जरूर शामिल करना चाहिए। बीन्स को सुपरफूड माना जाता है और जिनके पैरों से क्लिक की आवाज आती है, उन्हें तुरंत बीन्स खाना शुरू कर देना चाहिए।

सोयाबीन...

अपनी हड्डियों को मजबूत करने के लिए, आपको अपनी डाइट में सोयाबीन शामिल करना चाहिए, इसके अलावा, आप टोफू का भी इस्तेमाल कर सकते हैं। 100 ग्राम टोफू में 350 mg कैल्शियम होता है। आप टोफू को अपने सलाद में शामिल कर सकते हैं।

सूखे मेवे...

हड्डियों की सेहत को बेहतर बनाने के लिए, अपनी डाइट में सूखे मेवे शामिल करना जरूर फायदेमंद होगा। बादाम और अखरोट खाना भी जरूरी है। बादाम को पिगोकर दूध के साथ खाने से ज्यादा फायदेमिलते हैं। इससे हड्डियाँ मजबूत होती हैं।

देशी गाय का घी...

साथ ही, हमें रोज अपनी डाइट में घी जरूर शामिल करना चाहिए। रोज दूध, घी और हल्दी पीना फायदेमंद हो सकता है। तो न सिर्फ हड्डियाँ मजबूत होती हैं बल्कि हमारा शरीर भी हेल्दी रहता है।

हाई फ्रक्टोज कॉर्न सिरप (High Fructose Corn Syrup – HFCS) क्या है?

हाई फ्रक्टोज कॉर्न सिरप एक अत्यधिक प्रसंस्कृत (processed) कृत्रिम मिठास है, जिसका उपयोग आजकल अनेक पैकड और रेडी-टू-ईट फूड पदार्थों में किया जाता है।

इसका मुख्य उद्देश्य

- * भोजन को अधिक मीठा बनाना, उसकी शेल्फ-लाइफ बढ़ाना और उत्पादन लागत को कम करना होता है।
- * यह साधारण चीनी से अधिक मीठा, सस्ता और लंबे समय तक खराब न होने वाला होता है, इसी कारण यह खाद्य उद्योग के लिए अत्यंत लाभकारी बन गया है।

यह कैसे बनाया जाता है?

- * हाई फ्रक्टोज कॉर्न सिरप की उत्पत्ति मकई (कॉर्न) के स्टार्च से होती है।
- * सबसे पहले मकई के स्टार्च को ग्लूकोज में तोड़ा जाता है।
- * इसके बाद एक रासायनिक एवं एंजाइम आधारित प्रक्रिया के माध्यम से ग्लूकोज के एक हिस्से को फ्रक्टोज में परिवर्तित कर दिया जाता है।
- * इस प्रक्रिया के अंत में यह एक तरल सिरप बन जाता है, जिसे आसानी से खाद्य पदार्थों में मिलाया जा सकता है।
- * यही कारण है कि यह सिरप ठोस चीनी की तुलना में उपयोग में सरल और उद्योग के लिए अधिक सुविधाजनक होता है।

किन खाद्य पदार्थों में पाया जाता है? हाई फ्रक्टोज कॉर्न सिरप प्रायः निम्नलिखित उत्पादों में



पाया जाता है:

- * कोल्ड ड्रिंक्स और सॉफ्ट ड्रिंक्स
- * पैकड जूस और एनर्जी ड्रिंक्स
- * बिरिकेट, केक, पेस्ट्री और चॉकलेट
- * रेडी-मेड सॉस, केचप और जैम
- * पैकड स्नैक्स और फास्ट फूड

स्वास्थ्य की दृष्टि से चिंता हालाँकि यह स्वाद को बढ़ाता है, लेकिन इसका सेवन स्वास्थ्य के लिए हानिकारक माना जाता है।

कई शोधों में इसे मोटापा, मधुमेह, फैटी लिवर, हृदय रोगों और कैंसर से जोड़ा गया है।

निष्कर्ष हाई फ्रक्टोज कॉर्न सिरप आधुनिक खाद्य उद्योग की एक सुविधा-जन्य खोज है, लेकिन यह प्राकृतिक मिठास का सुरक्षित विकल्प नहीं है। बेहतर स्वास्थ्य के लिए प्राकृतिक और सीमित मात्रा में मिठास का चयन ही विवेकपूर्ण मार्ग है।

स्वाद क्षीणक सुख देता है, पर स्वास्थ्य जीवन भर साथ निभाता है।

सर्दी-जुखाम के लिए घरेलू काढ़ा

- पिकी कुंठू
- सामग्री**
- * पानी - 2 कप
 - * तुलसी के पत्ते - 5-7 (एंटी-वायरल गुणों से भरपूर)
 - * अदरक - 1 इंच का टुकड़ा (कहकस किया हुआ)
 - * काली मिर्च - 3-4 (हल्की कुटी हुई)
 - * लौंग - 2
 - * दालचीनी - 1 छोटा टुकड़ा
 - * हल्दी - 1 चुटकी (हल्दी पाउडर या कच्ची हल्दी)
 - * गुड़ या शहद - स्वादानुसार (ध्यान दें: शहद हमेशा गैस बंद करने के बाद ही डालें)
- बनाने की विधि**
1. एक बर्तन में 2 कप पानी डालकर गैस पर रखें।
 2. पानी में तुलसी, अदरक, काली मिर्च, लौंग और दालचीनी डाल दें।
 3. अब इसमें हल्दी डालकर धीमी आंच पर उबालें।
 4. काढ़े को तब तक पकाएँ जब तक पानी आधा (लगभग 1 कप) न रह जाए।



5. गैस बंद करें और काढ़े को छान लें।
6. इसमें गुड़ मिलाएँ।
7. अगर शहद डालना हो, तो काढ़ा हल्का गुनगुना होने पर मिलाएँ।
- सेवन का तरीका**
- * काढ़े को गरम-गरम चाय की तरह पीएँ।
- * दिन में 1-2 बार सेवन पर्याप्त है।
- * काढ़ा पीने के बाद कम से कम 30 मिनट तक पानी न पीएँ।
- खास टिप्स**
- * सूखी खांसी में: छोटा चम्मच मुलहठी पाउडर मिलाने से ज्यादा फायदा होता है।
- * गले में खराब है: एक चुटकी सेंधा नमक डालने से तुरंत राहत मिलती है।
- * “सावधानी अगर शरीर में ज्यादा गर्मी महसूस होती है, तो अदरक और काली मिर्च को मात्रा थोड़ी कम रखें।

धर्म अध्यात्म



2026 का अंकज्योतिष भविष्यफल – यूनिवर्सल वर्ष 1

परिचय : अंकज्योतिष के अनुसार प्रत्येक वर्ष की अपनी एक विशेष ऊर्जा होती है, जो व्यक्तिगत जीवन के साथ-साथ वैश्विक घटनाओं को भी प्रभावित करती है।



डॉ पूजाप्रसाद एन (गोल्ड मेडलिस्ट)

वर्ष 2026 का योग्य है:
2 + 0 + 2 + 6 = 10 → 1
इस प्रकार 2026 एक यूनिवर्सल वर्ष 1 है, जो नए 9-वर्षीय चक्र की शुरुआत का प्रतीक है। यह वर्ष नए आरंभ, नेतृत्व, नवाचार, स्वतंत्रता और साहसिक निर्णयों को दर्शाता है।

2026 का मुख्य विषय – नए आरंभ का वर्ष

यूनिवर्सल वर्ष 1 को बीज बोने का वर्ष माना जाता है। 2026 में जो भी आप आरंभ करेंगे, वही आने वाले वर्षों (2027-2034) की नींव बनेगा। यह वर्ष प्रेरित करता है:

नए कार्यों की शुरुआत करने, स्वतंत्र निर्णय लेने, नेतृत्व की भूमिका निभाने, पुराने और निष्क्रिय पैटर्न को तोड़ने और आत्मविश्वास और मौलिकता विकसित करने के लिए जो लोग पहल करते हैं, उनके लिए यह वर्ष अत्यंत सहायक है।

वैश्विक और सामूहिक प्रभाव सामूहिक स्तर पर 2026 में:

नए राजनीतिक नेतृत्व और सुधार, तकनीकी नवाचार और स्टार्टअप, युवा नेतृत्व का उदय, विज्ञान, एआई और अंतरिक्ष में प्रगति, आत्मनिर्भरता और व्यक्तिवाद पर जोर,

युद्ध की भी संभावनाएँ हैं उन देशों में जहाँ मंगल का प्रभाव है (भारत में भी युद्ध जैसी संभावनाओं को नकारा नहीं जा सकता है)।

हालाँकि, संख्या 1 की ऊर्जा में अहंकार और शक्ति संघर्ष की संभावना भी रहती है, इसलिए संतुलन आवश्यक है।

करियर और व्यवसाय

2026 करियर के लिए अत्यंत अनुकूल वर्ष है, यदि आप पहल करने को तैयार हैं।

अनुकूल क्षेत्र: नया व्यवसाय या स्टार्टअप नौकरी परिवर्तन या पदोन्नति फ्रीलांस और स्वतंत्र पेशे



प्रशासन, सरकार, तकनीक, रक्षा और उद्योगिता

सलाह: यह प्रतीक्षा का नहीं, बल्कि कार्रवाई का वर्ष है।

धन और वित्त वित्तीय दृष्टि से 2026 साहसिक और योजनाबद्ध निर्णयों का फल देता है। आय के नए स्रोत बन सकते हैं। इस वर्ष किए गए निवेश दीर्घकाल में लाभ दे सकते हैं। नवाचार और नेटवर्किंग से अवसर मिल सकते हैं।

सावधानी: अहंकार या जल्दबाजी में वित्तीय निर्णय न लें।

रिश्ते और पारिवारिक जीवन वर्ष 1 आत्मविकास पर केंद्रित होता है, इसलिए रिश्तों में संतुलन बनाए रखना आवश्यक है।

नए रिश्तों की शुरुआत संभव पुराने और ठहरे हुए रिश्तों का अंत स्पष्ट संवाद और सम्मान अत्यंत महत्वपूर्ण

यह वर्ष रिश्तों में स्वस्थ स्वतंत्रता सिखाता है।

स्वास्थ्य ऊर्जा से भरपूर वर्ष, पर अत्यधिक कार्य से तनाव संभव, सिरदर्द, रक्तचाप या चिंता की समस्या हो सकती है, रक्त संबंधित समस्याएँ जैसे हृदय-विषयक समस्याएँ भी हो सकती हैं, नियमित व्यायाम, ध्यान और अनुशासन आवश्यक।

आध्यात्मिक दृष्टिकोण आध्यात्मिक रूप से 2026 आत्मबोध और आत्मबल का वर्ष है।

मंत्र साधना, योग और ध्यान आरंभ करने के लिए उत्तम

सूर्य उपासना (सूर्य अर्घ्य, गायत्री मंत्र) लाभकारी

आत्मविश्वास और उद्देश्य की स्पष्टता विकसित करें

2026 के लिए शुभ तत्व और उपाय

शासक अंक: 1 (सूर्य) शुभ रंग: लाल, नारंगी, सुनहरा

शुभ दिन: रविवार, सोमवार शुभ रत्न: माणिक्य (उचित सलाह के बाद)

मंत्र: ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं सूर्याय नमः आदित्य हृदय स्तोत्र का पाठ अत्यंत लाभकारी होगा।

पिता या पिता स्वरूप व्यक्ति का आशीर्वाद लें।

2026 में मूलांक 1 से 9 का अलग-अलग भविष्यफल

मूलांक 1 (जन्म तिथि: 1, 10, 19, 28) 2026 आपके लिए अत्यंत शक्तिशाली वर्ष है। करियर में नई शुरुआत, प्रमोशन या नया व्यवसाय संभव

नेतृत्व और आत्मनिर्भरता बढ़ेगी धन में वृद्धि के योग अहंकार और जल्दबाजी से बचें

सलाह: स्पष्ट लक्ष्य बनाकर आगे बढ़ें

मूलांक 2 (जन्म तिथि: 2, 11, 20, 29) भावनात्मक उतार-चढ़ाव संभव

रिश्तों में संतुलन बनाना आवश्यक साझेदारी में सोच-समझकर निर्णय लें

करियर में धीरे-धीरे प्रगति सलाह: आत्मविश्वास बढ़ाएँ, दूसरों पर अत्यधिक निर्भर न रहें

मूलांक 3 (जन्म तिथि: 3, 12, 21, 30) रचनात्मकता और संवाद में वृद्धि शिक्षा, लेखन, मीडिया, प्रशिक्षण में सफलता

सामाजिक प्रतिष्ठा बढ़ेगी खर्च बढ़ सकता है सलाह: धन प्रबंधन पर ध्यान दें

मूलांक 4 (जन्म तिथि: 4, 13, 22, 31) 2026 नींव रखने का वर्ष कार्यक्षेत्र में बदलाव संभव

मेहनत अधिक, फल धीरे मिलेगा धैर्य की परीक्षा सलाह: नियम, अनुशासन और योजना बनाए रखें

मूलांक 5 (जन्म तिथि: 5, 14, 23) सबसे शुभ मूलांकों में से एक

अवसर, यात्रा और परिवर्तन करियर व व्यापार में तेजी नए संपर्क लाभ देगे

जोखिम सोच-समझकर लें सलाह: फोकस बनाए रखें, बिखराव से बचें

मूलांक 6 (जन्म तिथि: 6, 15, 24) परिवार और रिश्तों पर ध्यान प्रेम जीवन में निर्णय का समय कला, फैशन, सौंदर्य से जुड़े कार्यों में लाभ

भावनात्मक निर्णय से हानि संभव सलाह: आत्मसम्मान बनाए रखते हुए संतुलन रखें

मूलांक 7 (जन्म तिथि: 7, 16, 25) आत्ममंथन और आंतरिक विकास का वर्ष

आध्यात्मिक रुचि बढ़ेगी करियर में धीमी लेकिन स्थिर प्रगति अकेलापन महसूस हो सकता है सलाह: जल्दबाजी से बड़े निर्णय न लें

मूलांक 8 (जन्म तिथि: 8, 17, 26) स्वास्थ्य संबंधी समस्याएँ सत्ता, पद और जिम्मेदारी में वृद्धि आर्थिक मामलों में सुधार पुराने कर्मों का फल मिलेगा कानूनी या प्रशासनिक मामलों में सतर्कता जरूरी सलाह: धैर्य और ईमानदारी बनाए रखें

मूलांक 9 (जन्म तिथि: 9, 18, 27) पुराने अध्यायों की समाप्ति भावनात्मक उतार-चढ़ाव सेवा, समाज और आध्यात्मिक कार्यों में सफलता नए आरंभ से पहले समापन जरूरी सलाह: अतीत को छोड़कर आगे बढ़ें

निष्कर्ष अंकज्योतिष के अनुसार 2026 एक निर्णायक और परिवर्तनकारी वर्ष है। यह साहस, नेतृत्व और नए मार्ग चुनने का समय है। जो लोग परिवर्तन को अपनाते हैं और आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ते हैं, वे आने वाले नौ वर्षों की दिशा तय कर सकते हैं।

पात्रा सदन प्रयोग भगवती के साक्षात्कार का पूजन

पिकी कुंडू
देवी सर्वमंत्र रूप तंत्र रूप यंत्र रूप है। आवाहन पुकार स्तुति में भाव पूर्ण हो तो जागृति और साक्षात्कार होता है पूजा विधि पद्धति मन से नहीं होनी चाहिए। क्योंकि कुछ प्रोटोकॉल अगर किसी सेलिब्रिटी या नेता के होते हैं तो भगवती तो ब्रह्मांड नायिका है। उपचार की उपेक्षा भक्ति में हो सकती है साधना में नहीं। क्योंकि साधना तो मुलाकात है यहां क्रिया में पूर्णतः डूबना ही एक मात्र उपचार है। भक्त का ध्यान भटक सकता है जबकि साधक का भाव एकाग्र रहता है भाव के साथ साधक प्रकट करता है और भक्त पुकार लगा सकता है भक्त असहाय है साधक वीर होता है आध्यात्म मार्ग यह दो पहलू है।



एक है उस पर छोड़ देना दूसरा है खुद को विलीन कर देना मिटा दे अपनी हस्ती को अगर कुछ मर्तवा चाहे कि दाना खाक में मिलके गुले गुलजार होता है **जय माई की**



पिकी कुंडू
१. सूर्य-लक्ष्मी *सूर्य तेजोमयीं देवीं भ्राजमानां सुवासिनीम्। ज्योतिर्मयीं जगदीश्वरीं नमामि दिव्यरूपिणीम्॥१॥ * भावार्थ: तेजस्विनी, स्वर्णवर्णा, आत्मबल, स्वास्थ्य और प्रतिष्ठा देने वाली सूर्यलक्ष्मी को नमन।
२. चन्द्र-लक्ष्मी *चन्द्रे शीतलगात्रां तां सौम्यरूपां मनोहराम्। * कल्याणदां च कौमुदीं नमामि चन्द्रमण्डले॥२॥ * भावार्थ: श्वेतवर्णा, शीतल, सौम्य और मानसिक शांति देने वाली चन्द्रलक्ष्मी को प्रणाम।
३. मङ्गल-लक्ष्मी *मङ्गले रक्तवर्णां तां शक्तिरूपां धृतव्रताम्। * क्रियाशक्तिं समाश्रित्य नमामि पुण्यसङ्ग्राम॥३॥ * भावार्थ: वीररूप, साहस, पराक्रम और ऊर्जा देने वाली मंगललक्ष्मी को वंदन।

श्रीनवग्रह रूपलक्ष्मी स्तोत्रम्!!

४. बुध-लक्ष्मी * बुधे बुद्धिप्रदां लक्ष्मीं वाक्सिद्धिं ज्ञानरूपिणीम्। * विद्याशक्तिं प्रकाशान्तीं नमामि बुधमूर्धनि॥४॥ * भावार्थ: हरितवर्णा, बुद्धि, व्यापार और वाणी-कला देने वाली बुधलक्ष्मी को नमन।
५. गुरु-लक्ष्मी * गुरो धर्ममयीं देवीं ब्रह्मतेजस्विनीं पराम्। श्रद्धारूपां शिवां लक्ष्मीं नमामि ज्ञानदायिनीम्॥५॥ * भावार्थ: पीतवर्णा, धर्म, ज्ञान, संतान और संस्कार देने वाली गुरुलक्ष्मी को प्रणाम।
६. शुक-लक्ष्मी *शुके कल्याणरूपां तां सौंदर्यायै स्वधारिणीम्। * कामकलां सुधामूर्तिं नमामि लोकमानसीम्॥६॥ * भावार्थ: गौरवर्णा, सौंदर्य, कला, वैवाहिक सुख और विलास देने वाली शुकलक्ष्मी को वंदन।
७. शनि-लक्ष्मी * शानो स्थैर्यगुणोपेतां कालशक्तिं निरीक्षणाम्। * धैर्यप्रदां महासिद्धिं नमामि कर्मदायिनीम्॥७॥ * भावार्थ: नीलवर्णा, संयम, कर्मफल, न्याय और स्थायित्व देने वाली शनिलक्ष्मी को प्रणाम।
८. राहु-लक्ष्मी * राहो श्यामधूम्रवर्णां लक्ष्मीं रहस्यमयीं



पराम्। * संरक्षणीं च संकटघ्नीं नमामि मायिकेश्वरीम्॥८॥ * भावार्थ: कृष्ण/धूम्रवर्णा, रहस्य, विदेश, छाया, चमत्कार और अप्रत्याशित लाभ देने वाली राहुलक्ष्मी को नमन।
९. केतु-लक्ष्मी * केतो धूम्रवर्णां लक्ष्मीं मुक्तिदात्रीं परां पराम्। * तपःस्वरूपिणीं देवीं नमामि ज्ञानविग्रहम्॥९॥ * भावार्थ: तपस्विनी, मोक्ष, गृहज्ञान, अंतर्ज्ञान और प्रसिद्धि देने वाली केतुलक्ष्मी को प्रणाम।
१०. फलश्रुति एवं नवग्रहाधिष्ठां लक्ष्मीं *संप्रार्थयेद् धृता। * दोषग्रहप्रशमनं भवत्याशु न संशयः॥१०॥ * सर्वाभीष्टप्रदां देवीं भक्त्या स्तोति स बुद्धिमान्। * गृहदोषं विनाशय्य शीघ्रं श्रियं प्रपद्यते॥११ * भावार्थ: यह स्तोत्र नवग्रह लक्ष्मियों की कृपा और गृहदोष निवारण, सुख, समृद्धि एवं आयुर्वृद्धि प्रदान करता है।

॥ हनुमान माला मंत्र ॥

पिकी कुंडू
जब भाग्य ने सारे मार्ग बंद कर दिए हैं, शत्रु हावी हों, कोर्ट मुकदमा से परेशानी हो, कर्ज से परेशान हो, रोजगार व धन की बाधा हो, भूत-प्रेत अथवा तंत्र बाधा से पीड़ित हों। आपकी प्रत्येक समस्या का एक समाधान है- रहनुमान माला मन्त्र। अपने समस्त पापों के साथ हनुमान जी के समक्ष जाएं व उनसे क्षमा याचना कर मीठा पान अर्पित कर सरसों के दीपक में दो लौंग डाल कर किसी भी शनिवार अथवा मंगलवार से हनुमान माला मन्त्र का ११ पाठ करें। कुछ ही दिनों में सकारात्मक परिणाम अवश्य मिलेगा, यह एक सिद्ध प्रयोग है।



दानव्यक्षराक्षसग्रहबन्धनाय भूतग्रह प्रेतपिशाचग्रह शाकिनीग्रह डीकिनीग्रह काकिनीग्रह कामिनीग्रह ब्रह्मग्रह ब्रह्मराक्षसग्रह चोरग्रहबन्धनाय एहि एहि आगच्छ आगच्छ आवेशयवेशय मम हृदयं प्रवेशय प्रवेशय स्फुर स्फुर प्रस्फुर प्रस्फुर सत्यं कथय कथय व्याघ्रमुखं बन्धय बन्धय सर्पमुखं बन्धय बन्धय राजमुखं बन्धय बन्धय सभामुखं बन्धय बन्धय शत्रुमुखं बन्धय बन्धय सर्व मुखं बन्धय बन्धय लंकाप्रसादभञ्जन सर्वजनं मे वशमानय वशमानय श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं सर्वान आकर्षय आकर्षय शत्रून् मर्दय मर्दय मारय मारय चूर्णय चूर्णय खे खे श्रीरामचन्द्राज्ञया प्रज्ञया मम कार्यसिद्धि कुरु कुरु मम शत्रून् भस्मी कुरु कुरु स्वाहा॥ ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं फट् श्रीविचित्रवीरहनुमते मम सर्व शत्रून् भस्मी कुरु कुरु हन हन हुं फट् स्वाहा॥ ॐ ऐं ह्रीं हनुमते श्रीरामदूताय नमः।

श्रीशनिमंडल वासिनि लक्ष्मी के मंत्र

पिकी कुंडू
ध्यान- नीलवर्णां दृढां धीरां कर्मबन्धविनाशिनीम्। स्थिरां गम्भीरसद्भावां कर्म-धैर्य-मृत्युञ्जया। श्रम-शांति-न्याय-पूर्णा अन्नपूर्णा नमाम्यहम्। अर्थ- मैं उस नीलवर्णा, धैर्य और दृढ़ता से युक्त देवी को नमन करता हूँ जो कर्मबन्धनों का नाश करने वाली, स्थिर और गम्भीर सद्भाव से परिपूर्ण हैं; जो कर्म, धैर्य और मृत्यु-भय पर विजय दिलाने वाली हैं तथा श्रम, शान्ति, न्याय और अन्नपूर्णाता से जीवन को पूर्ण करने वाली हैं। ॐ शं राजराजेश्वर्यै शनैश्चर्यात्मिकायै कालात्मिकायै नारायण्यै कर्मसाक्षिण्यै शनि-लक्ष्म्यै नमः। ॐ शं राजराजेश्वर्यै शनैश्चर्यात्मिकायै नमः। ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं शनिरूपायै नारायणसमन्वितायै नीलकमलवासिन्यै श्रमलक्ष्म्यै न्यायलक्ष्म्यै।



कर्मफलप्रदायै शनि- मण्डलवासिन्यै नमः॥ महालक्ष्म्यै नमः॥ शनिमंडलेश्वर्यै लक्ष्मी माला मंत्र ॐ नमो शनि- मण्डलेश्वर्यै। कर्मलक्ष्म्यै धैर्यलक्ष्म्यै उद्यमलक्ष्म्यै। श्रमलक्ष्म्यै न्यायलक्ष्म्यै धर्मलक्ष्म्यै। शान्तिलक्ष्म्यै सौम्यलक्ष्म्यै। अन्नपूर्णा लक्ष्म्यै आयुलक्ष्म्यै आरोग्यलक्ष्म्यै।

मृत्युञ्जयलक्ष्म्यै स्थैर्यलक्ष्म्यै वैराग्यलक्ष्म्यै च। दुः ख प्र श म न क त्रं यै सर्वकर्मदोषनिवारिण्यै। स वं च या धि वि ना शि = यै कालधर्मनारायणसमन्वितायै। शान्तिं कुरु कुरु। न्यायं कुरु कुरु। धर्मं कुरु कुरु। आयुः कुरु कुरु। सुखं कुरु कुरु। स्थैर्यं कुरु कुरु मे सदा। ॐ शं श्रीं ह्रीं क्लीं शनि- लक्ष्म्यै ॐ शं श्रीं ह्रीं क्लीं शनि- नारायण- समन्विते राजलक्ष्मि मम शिरः पाह। ॐ शं श्रीं ह्रीं क्लीं कर्मबन्धनच्छेदिनि हृदयं पातु सदा मम। ॐ शं श्रीं ह्रीं क्लीं न्याय- धर्म- स्थैर्यदायिनि सर्वतो मां पातु पातु स्वाहा॥ ॐ शनि मण्डल वासिन्यै महालक्ष्म्यै नमः

सन्त, ब्रजवासी, वैष्णव सेवा एवं वृहद भंडारे के साथ संपन्न हुआ संत श्रीपाद बाबा महाराज का 29 वां समाराधन महोत्सव

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

वृन्दावन। मोतीझील स्थित श्रीराधा उपासना कुंज में ब्रज अकादमी के द्वारा चले रहे प्रख्यात संत श्रीपाद बाबा महाराज का 29 वां त्रिदिवसीय समाराधन महोत्सव अत्यंत श्रद्धा व धूमधाम के साथ सम्पन्न हुआ। प्रातः संतों व भक्तों के द्वारा सुंदरकांड का संगीतमय सामूहिक पाठ किया गया। तत्पश्चात महंतों व महामंडलेश्वरों का सम्मान किया गया। इसके अलावा निधनों, निराश्रितों व वृद्ध महिलाओं को ऊनी स्त्रव व खाद्य सामग्री का वितरण किया गया। साथ ही विभिन्न विद्यालयों के छात्र-छात्राओं के द्वारा सांस्कृतिक प्रतियोगिता व संत-ब्रजवासी-वैष्णव सेवा एवं वृहद भंडारा भी हुआ।

इस अवसर पर आयोजित सन्त-विद्वत् सम्मेलन की अध्यक्षता करते हुए चतुर्वेदी प्रदाय के श्रीमहन्त फूलडोल बिहारीदास महाराज एवं गोरे दारुजी आश्रम के महंत प्रह्लाद दास महाराज ने कहा कि अकादमी के संस्थापक पूज्य श्रीपाद बाबा महाराज अत्यंत सहज व उदार संत थे। वे सभी का कल्याण चाहते थे। उन जैसे संतों से ही ब्रज मंडल की शोभा है।

मुख्य अतिथि के रूप में पधारे अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त भागवत प्रवक्ता आचार्य डॉ.

रामविलास चतुर्वेदी एवं प्रख्यात साहित्यकार यूपी रत्न डॉ. गोपाल चतुर्वेदी ने कहा कि श्रीपाद बाबा महाराज ब्रज संस्कृति के उन्नायक थे। उन्होंने अपने समूचे जीवन में लोक कल्याण के अनेकों सेवा प्रकल्प संचालित किए। जिनका निर्वाह बाबा महाराज की प्रमुख शिष्या साध्वी डॉ. राकेश हरिप्रिया के द्वारा पूर्ण निष्ठा व समर्पण भाव से किया जा रहा है।

श्रीराधा उपासना कुंज के श्रीमहन्त संतदास महाराज एवं ब्रज अकादमी की सचिव साध्वी डॉ. राकेश हरिप्रिया ने कहा कि हमारे सदगुरुदेव पूज्य श्रीपाद बाबा महाराज नर सेवा को ही नारायण सेवा मानने थे। पूज्य बाबा महाराज गौ, संत, निधन, निराश्रित एवं वृद्धों की सेवा में सदैव तत्पर रहते थे।

सन्त-विद्वत् सम्मेलन में श्रीराम मंदिर के महंत आचार्य रामदेव चतुर्वेदी, श्रीमद्विद्वत् के प्रकांड विद्वान आचार्य नेत्रपाल शास्त्री, संत प्रवर रामदास महाराज, बेरिया वन सरकार रामचंद्र दास महाराज (मौनी बाबा), डॉ. राधाकांत शर्मा आदि ने भी अपने विचार व्यक्त किए। संचालन रथूपी रत्नर डॉ. गोपाल चतुर्वेदी ने किया। ब्रज अकादमी की सचिव साध्वी डॉ. राकेश हरिप्रिया ने सभी आगंतुक अतिथियों आभार व्यक्त कर उनका स्वागत-



सम्मान किया।

महोत्सव में इस अवसर पर महामंडलेश्वर नवल गिरि महाराज, महामंडलेश्वर स्वामी सच्चिदानंद शास्त्री, महंत सुन्दर दास महाराज, महंत जयराम दास महाराज, संत सेवानंद साध्वी डॉ. राकेश हरिप्रिया, श्रीमती पंकी माथुर, श्रीमती अरोड़ा, डॉ. राखी सक्सेना (मुम्बई), अश्वनी माथुर,

जितू पाण्डेय, विमला देवड़ा, श्रीमती ममता खट्टर, प्रोफेसर अनिल सारस्वत, जगू प्रताप सारस्वत, श्रीमती वेणु सरीन, भानुमोहन त्रेहन, रमेश कोचड़, ब्रजमोहन हांडा, श्रीमती सुंदरी देवी, श्रीमती गीता, श्रीमती सीमा त्रिपाठी, अनुपमा माथुर, भक्ति रीता, भक्ति मती गोपी, श्रीमती मेघना, डॉ. रश्मि अष्ट,

सन्नी कटारिया, भक्तिमती शशिबाला, नीलेश कुशवाहा, राजकुमार लोदी आदि के अलावा विभिन्न क्षेत्रों के तमाम गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे। रात्रि को प्रख्यात रासाचार्य स्वामी भुवनेश्वर वशिष्ठ के निर्देशन में रासलाला का अत्यंत नयनाभिराम व चित्ताकर्षक मंचन हुआ।

सत्ता में आई सरकार का चौथा साल खत्म हुआ, लेकिन सरकार के झूठे दिलासे खत्म नहीं हुए - हरपाल सिंह सोनू

संगरूर, 31 दिसंबर (जगसीर सिंह) - पंजाब प्रदेश कांग्रेस कमेटी ओ.बी.सी. विंग के उपाध्यक्ष और संगरूर से पार्टी के मुख्य प्रवक्ता हरपाल सिंह सोनू ने आज एक प्रेस वार्ता के दौरान सरकार को घेरते हुए कहा कि आज साल 2025 भी समाप्त हो जाएगा और पंजाब सरकार को सत्ता में आए लगभग 4 साल पूरे होने वाले हैं, लेकिन विधानसभा चुनाव 2022 के दौरान आम आदमी पार्टी को जिताने वाली भोली-भाली जनता से किए गए सैकड़ों झूठे वादे और दिलासे खत्म होने का नाम नहीं ले रहे हैं।

सोनू ने कहा कि पंजाब की माताएं और बहनें आज भी 1000 रुपये प्रति माह के गुजारा भत्ते का इंतजार कर रही हैं। हर शहर और हर गांव अपने-अपने विधानसभा क्षेत्रों के तमाम गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे। रात्रि को प्रख्यात रासाचार्य स्वामी भुवनेश्वर वशिष्ठ के निर्देशन में रासलाला का अत्यंत नयनाभिराम व चित्ताकर्षक मंचन हुआ।

सोनू ने आगे कहा कि नशाखोरी और अपराध दिन-ब-दिन फल-फूल रहा है। पंजाब में आए दिन चोरी और डकैती की वार्ताएं हो रही हैं और रोजाना हत्या जैसे संगीन अपराध अखबारों की सुर्खियां बनते हैं। इनका सब होने के बावजूद, जहाँ आम लोगों की जिंदगी बंद से बंदतर हो गई है, वहीं दूसरी ओर सरकार में बैठे नेता सत्ता का सुख भोगने में मशरूफ हैं।

हरपाल सोनू ने अंत में कहा कि मैं सरकार से अपील करता हूँ कि आपकी सरकार का अब केवल एक साल बचा है, इसलिए जनता से किए गए वादों को जल्द पूरा किया जाए।



अखिल भारतीय काव्य मंच, मुंबई द्वारा आयोजित कवि सम्मेलन एवं सम्मान समारोह सफलतापूर्वक संपन्न कवियों ने अपनी कविताओं से दर्शकों और श्रोताओं को किया मंत्रमुग्ध

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

दिल्ली। अखिल भारतीय काव्य मंच मुंबई संस्था द्वारा आयोजित कवि सम्मेलन एवं सम्मान समारोह का आयोजन क्रिएटिव अनलॉक द्वारा, नई दिल्ली में सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ। आमंत्रित अतिथियों, कवियों एवं विशिष्ट व्यक्तियों ने मिल-जुलकर माँ शारदे की प्रतिमा पर माल्यार्पण करके उनका विधिवत पूजन किया तथा साथ-ही-साथ दीप प्रज्वलित करके कार्यक्रम का शुभारंभ किया। तत्पश्चात शुभा पालीवाल ने माँ सरस्वती की वंदना करके कार्यक्रम का विधिवत शुभारंभ किया। लोकप्रिय कवयित्री प्रेरणा सिंह ने कार्यक्रम का शानदार संचालन किया। वरिष्ठ कवि डॉ. ओंकार त्रिपाठी ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। डॉ. मंडल एवं समाज सेविका मीनू कुमार मुख्य अतिथि के रूप में कार्यक्रम में शामिल हुईं। विशिष्ट अतिथि के रूप में वरिष्ठ कवि डॉ. गोविंद गुप्ता, वरिष्ठ समाजसेवी एवं राजनेता अरुण शर्मा उर्फ लक्की हिंदुस्तानी, दिल्ली पुलिस अधिकारी ज्योति स्वरूप गौड़ वरिष्ठ कवि विवेक कवीश्वर, वरिष्ठ कवि मोहन द्विवेदी, वरिष्ठ कवयित्री डॉ. वर्षा महेश, दिल्ली पुलिस अधिकारी ज्योति स्वरूप गौड़ एवं वरिष्ठ कवयित्री अनुराधा पाण्डेय आदि ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। कार्यक्रम में शामिल होकर काव्य पाठ करने वाले कवियों एवं कवयित्रियों में लोकप्रिय कवयित्री एवं

संचालिका नलिनी राजरमौसमर, लोकप्रिय कवयित्री कवयित्री सीमा रंगा इंद्रा, वरिष्ठ शायर संजीव जैन रनादानर लोकप्रिय कवयित्री डॉ. उषा श्रीवास्तव रउषाजार, डॉ. मंडल एवं कवयित्री वाटिका नीरियाल, लोकप्रिय कवि डॉ. राजेश श्रीवास्तव राज, वरिष्ठ कवि व आलोचक प्रोफेसर सुशील द्विवेदी, वरिष्ठ कवयित्री डॉ. वर्षा सिंह, लोकप्रिय कवि हेमंत अग्रवाल, लोकप्रिय कवि एवं चित्रकार पंकज कुमार तिवारी, जनप्रिय पुरोहित, हास्य कवि देवेश मिश्रा रनिमलर श्रृंगार की लोकप्रिय कवयित्री ऋषा मिश्रा ररोलीर वरिष्ठ कवयित्री व छंदकारा डॉ. अनुराधा पाण्डेय, लोकप्रिय शायर सचिन परवाना, लोकप्रिय कवयित्री बनिता पाण्डेय, लोकप्रिय कवयित्री मणि अभय मिश्रा, लोकप्रिय कवयित्री सविता सिंह रशमा र युवा शायर रोहित पाण्डेय, वरिष्ठ कवयित्री एवं संचालिका पूनम मल्होत्रा, वरिष्ठ साहित्यकार व संस्थापक अंजनी द्विवेदी र अनमोलर संस्था सचिव, प्रवक्ता जनप्रिय हास्य-व्यंग्य कवि व संचालक विकास मिश्र रसागर आदि प्रमुख रहे। अन्य आमंत्रित अतिथियों व स्नेहीजनों के रूप में कालका जी मंदिर के पुजारी

परम पूज्य महंत गणेश भारद्वाज जी, बेटियाँ गुप एवं कथा कुंज साहित्य सेवा परिषद के फाउंडर मुकेश कुमार पटेल, कोषाध्यक्ष हरेंद्र कुमार, रोहित राजपूत, दीपक कुमार, सुभाष पाण्डेय तथा सभागाय संचालिका गिरिका बत्रा आदि शामिल हुए। सभी आमंत्रित अतिथियों, कवियों व स्नेहीजनों को संस्था द्वारा अंग वस्त्र, शाल, माला व मोमंटो (स्मृति चिह्न) देकर सम्मानित भी किया गया। संस्था के संस्थापक एवं अध्यक्ष प्रो. अंजनी द्विवेदी अनमोल ने सभी साहित्यकारों, कवियों, कवयित्रियों, सुधि श्रोताओं, दर्शकों तथा कार्यक्रम में किसी भी प्रकार से अपना सहयोग प्रदान करने वाले सभी स्नेहीजनों की सराहना करते हुए उन्हें बधाइयाँ और शुभकामनाएँ दीं, साथ उन सभी के प्रति कृतज्ञता सहित आभार व्यक्त किया। अंजनी अनमोल जी ने अपने वक्तव्य में कहा कि आप सभी ने मिलकर अपने काव्यपाठ और अपने सहयोग के माध्यम से कार्यक्रम में चार-चौद लगा दिया। इस शानदार और यादगार कार्यक्रम का शानदार संचालन प्रेरणा सिंह जी ने अपने सधे हुए एवं सटीक शब्दों, शायरियों, मुक्तकों एवं कविताओं के माध्यम से किया। उनकी भाषा शैली बहुत ही उच्च कोटि की थी। सभी कवियों को काव्य पाठ के लिए आमंत्रित करने के लिए विशेष पंक्तियाँ पढ़ना, उनकी ये बात सभी को बहुत पसंद आई। अंत में अंजनी द्विवेदी जी ने अपने अंतिम वक्तव्य में सभी



कवियों को शानदार काव्यपाठ के लिए बहुत-बहुत बधाइयाँ दीं और साथ ही उन्होंने सभी को भविष्य के लिए दिली शुभकामनाएँ दीं। उन्होंने कहा कि आप सभी ने मेरे और विकास मिश्र सागर के आह्वान पर कार्यक्रम में शामिल होने के लिए सहर्ष अपना सहमति व स्वीकृति प्रदान की, उसके लिए

मैं आप सभी को बड़े ही आदर और सम्मान के साथ सन्नेह सादर प्रणाम करता हूँ। सभी कवियों ने बड़ी मनमोहक एवं लाजवाब रचनाएँ पढ़ीं, आप सभी का काव्यपाठ बहुत ही सराहनीय एवं शानदार रहा। प्रेरणा सिंह के शानदार संचालन तो शानदार था ही तथा बहुत ही अनुभवी, सटीक एवं सधा हुआ

भी था एक निश्चित समय में इतने लोगों का काव्यपाठ के लिए आमंत्रित करना ही उनके मजबूत व सुंदर संचालन को दर्शाता है। सभी के लिए विशेष शेर बोलना आपके उम्दा एवं सुंदर संचालन का प्रमाण है। आमंत्रित कवियों और कवयित्रियों में सभी का काव्यपाठ बहुत ही सराहनीय एवं शानदार था। सभी की रचनाएँ विविधतापूर्ण थीं। कार्यक्रम में अपनी रचनाओं के माध्यम से कवियों ने सभी प्रकार के रसों की बौछार की, फुहार छोड़ी। अंजनी द्विवेदी ने कार्यक्रम में विशेष सहयोग प्रदान करने वाली क्रिएटिव अनलॉक की मालकिन गिरिका बत्रा जी के साथ-साथ संस्था के सभी पदाधिकारियों खासकर सचिव व प्रवक्ता विकास मिश्र रसागरर ममता बारोट, अर्पित मिश्र तेजस, अर्पित यादव, शिवांगी सिंह कृष्णबावरी, निर्भय झा निर्वाण, खुशी झा, अंजली श्रीवास्तव, मार्गदर्शक डॉ. मंजु लोढ़ा, डॉ. शोभा त्रिपाठी, श्री बाबा कानुजी जी, संस्था की कार्यकारी अध्यक्ष डॉ. संगीता राज, प्रो. रूबी सिंह, करुणानिधि राय, लक्ष्मी पाल, डॉ. वर्षा महेश जी, अपने माता-पिता व बच्चों के साथ अपनी पत्नी उपमा द्विवेदी के प्रति भी कृतज्ञता सहित आभार व्यक्त किया। विकास मिश्र ने तकनीकी सहयोगी अर्पित और रोशन के प्रति आभार व्यक्त किया। अंजनी द्विवेदी ने कहा कि सभी की प्रस्तुति बहुत ही शानदार एवं सराहनीय रही।

वात्सल्य ग्राम में त्रिदिवसीय वात्सल्य महोत्सव धूमधाम से प्रारंभ प्रथम दिन सम्पन्न हुए कवि सम्मेलन में प्रख्यात कवियों ने किया काव्य पाठ

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

वृन्दावन। मथुरा रोड़ स्थित वात्सल्य ग्राम में त्रिदिवसीय वात्सल्य महोत्सव बड़े ही हर्षोल्लास एवं धूमधाम के साथ प्रारंभ हुआ। महोत्सव के प्रथम दिन प्रख्यात सन्त, पद्य विभूषण साध्वी रितंभरा ने दीप प्रज्वलित कर कवि सम्मेलन का शुभारंभ किया। (कवि सम्मेलन में सर्वप्रथम आगरा से पधारी डॉक्टर रुचि चतुर्वेदी ने सरस्वती वंदना की। तत्पश्चात सुहाग नगरी फिरोजाबाद से आए गीतकार यशपाल यश ने अपने गीतों की सरिता बहाते हुए कहा कि- लक्ष्य जब तक कनक के हिरन हो गए। देखिए भाग्य सीता हरण हो गए।। जिनका वचन नदी में बहाया गया, युग के कुरुक्षेत्र में वह करण हो गए।। डीग (राजस्थान) से पधारे हास्य व्यंग्य के कवि सुरेंद्र सार्थक ने श्रोताओं को गुद-गुदाते हुए कहा कि "खुले आकाश में अपनी कमाई छोड़ देते हैं। मठा से पेट भरते हैं मलाई छोड़ देते हैं। आम तुम झूठ भी कह दो मवेशी खेत में तेरे, कड़कती टंड में झट से रजाई छोड़ देते हैं।।" दिल्ली से पधारे वीर रस के कवि मनवीर मधुर ने कहा कि रएक



ध्वजवाहक सनातन परंपरा का नाम भी लगेगा तुम्हें शुद्ध स्वर्ण सा खरा। प्रेम भक्ति शक्ति वात्सल्य का ही दिव्य रूप चाहते हो तो देख लेना दीदी मां रितंभरा।।

आगरा से आई डॉक्टर रुचि चतुर्वेदी ने गीतों की गंगा बहाते हुए कहा

कि रंजिन चरणों में जाकर हमको स्वर्ग धारा मिल जाती है। जिनके ममतामई प्रेम को सारी सृष्टि गाती है। (जीवन सुख वात्सल्य ग्राम रज मस्तक चंदन करते हैं। आओ हम सब मिलकर दीदी मां को वन्दन करते हैं।।)

नोएडा से पधारे हास्य कवि वेद

प्रकाश वेद ने श्रोताओं को हँसाकर लोटपोट कर दिया कहा कि रइस मिलावट के हमने ऐसे ऐसे चमकार भुगते हैं। (काली मिर्च बओ तो पपीते उगते हैं।।)

दिल्ली के वीर रस के कवि गजेंद्र सोलंकी ने कहा कि रनए युग की

कहानी का नया उल्लास लिखना है, दिलों की धड़कनों पे प्रेम का अहसास लिखना है। (बदलते वक्त की आहट सुनाई तो साँस सँ बोलो, हमें भारत की धरती पर सुखद मधुमास लिखना है।।) सिंगरौली से पधारी श्री मती विजयलक्ष्मी संवेदना ने कहा कि रउपनिषद का ज्ञान हो तुम या कि वेदों की ऋक्षाएँ, तुम मिले पुष्पिकत हुई है सृष्टि की सारी दिशाएँ।।

गाजियाबाद से पधारे राजनीति पर कटाक्ष करते हुए रुप चौधरी ने कहा कि रगंगा जैसी कभी थी पवित्र देखिएगा मित्र, हो गई शराब जैसी आज राजनीति है। कहीं बड़े लोगों की तिजोरी में हुई है बंद, कोठे पे भी तुमका लगती राजनीति है। शोखर, पटेल और सुभाष को भी भूलगई, आज भ्रष्टाचार की सहेली राजनीति है।।

डॉ. उमाशंकर राही ने संचालन करते हुए कहा कि रसमय आ गया जातिवाद के सारे भेद मिटाने का। समय आ गया हिदुस्तान को हिन्दू राष्ट्र बनाने का।।

इस अवसर पर आई. सी. अग्रवाल एवं महेश खण्डेलवाल, रुप चौधरी ने समस्त कवियों को शॉल ओढ़ाकर एवं प्रतीक चिन्ह देकर सम्मानित किया।

बीता वर्ष



बीत गया यह साल भी, आया है नव वर्ष। खुशियों से स्वागत करें, मन में होता हर्ष।। कुछ यादें मन में बसी, करता है मन याद। नूतन सपने चाह में, भरते हैं उत्कर्ष।।

बीती बातें भूल कर, आगे बढ़ना आज। नई उधार की चाह में, करना उतम काज।। नव बेला भी आ गई, सुनिए दस्तक आप। नूतन का वंदन करो, जग का यही रिवाज।।

बीता कल आता कहीं, गुजरा है यह साल। ढलती देखो उम्र भी, चले समय भी चाल।। घाव पुराने हो गये, भरते हैं कब आज। अपने हैं रुठे सभी, नहीं पूँछते हाल।।

बीते दिन की याद में, जीवन होता पार। अपने छूटे राह में, अंतस जाता हार।। नया साल दस्तक दिया, भरना नई उड़ान। ईश कृपा होगी सदा, सुखी रहे संसार।।

सार छंद शीर्षक - नया वर्ष

जग में सूरज निकले मानव, होता नया सेवरा। नया वर्ष नव खुशियों लाया, नव आभा ने घेरा।।

आओ हम नव वर्ष मनाएँ, गीत खुशी के गाएँ। नव दौर में नई बात है, मन में आश जगाएँ।। उठो बढ़ो मंजिल पर घ्यारे, यश फैलगा तेरा। नया वर्ष नव खुशियों लाया, नव आभा ने घेरा।।

समय जहां में बदला देखो, डिजिटल क्रांति सुहाई। संचार सृष्टि के साधन बढ़ते, नई रोशनी छाई।। युग परिवर्तन का आया है, देख वक्त ने हेरा। नया वर्ष नव खुशियों लाया, नव आभा ने घेरा।।

हार मान मत बैठो मानव, मुश्किल जीवन आती। साहस रखना चलते रहना, खुशी सफलता लाती।। नये लक्ष्य को गढ़ते रहना, छँट जाता अंधेरा।। नया वर्ष नव खुशियों लाया, नव आभा ने घेरा।।

आजादी का अमृत महोत्सव, सबने आज मनाया। मन की बात सुनी मोदी की, नव अरमान जगाया।। बड़ी देश की अर्थ-व्यवस्था, दुनिया ने फिर हेरा। नया वर्ष नव खुशियों लाया, नव आभा ने घेरा।।

शैलेन्द्र पयासी, युवा साहित्यकार विजयराघवगढ़, कटनी, एमपी

शैलेन्द्र पयासी, युवा साहित्यकार विजयराघवगढ़, कटनी, एमपी

31 दिसंबर: एक फैसला... जो जिंदगी बनाता या बिगाड़ता है

जब 31 दिसंबर आता है, सड़कें रोशन हो जाती हैं, सेल बज जाते हैं, ख्यादा व्यथित करता है, श्रोत लोगों के दिमाग में एक ही बात गूँजती है — अंतोयं करो। लेकिन इस आन में एक चीज कहीं खो जाती है — रोश। इस एक रात में, कई नौजवान पत्नी बार अपने उम्मीतों से समझौता करते हैं। "हर कोई करता है", "यह सिर्फ एक बार होता है", "कुछ नहीं होता" इन बातों से नरों के बीज बोए जाते हैं।

शुरुआत कभी बुरी नहीं लगती। पहले घूंट में कोई मिर्च नहीं होता। पत्नी सिगरेट में कोई उर नहीं होता। पत्नी बार में सिर्फ रेंसी होती है। लेकिन नशा दरवाजे पर आकर पिंडली नहीं गँगाता, यह धीरे-धीरे अंतर आता है और एक दिन घर पर कब्जा कर लेता है। धीरे-धीरे बदलाव महसूस होने लगते हैं। वहीं इंसान गुरसा हो जाता है। वहीं आवाज कठोर हो जाती है। वहीं नेवर ब्रजबनी लगता है। सबसे पहले तो लम्बे सबसे करीबी लोगों को लगती है। तभी नशीब नहीं कटती,

लेकिन उसकी आँखों में उर बढ़ता जाता है। पिता विलात नहीं, लेकिन उनकी युपी युमने लगती है। पत्नी संसय देती है, लेकिन उसकी मुस्कान के पीछे दर्द छिपा होता है। बच्चे कुछ नहीं पूछते, लेकिन उनकी नरोसा डूट जाता है। नशा सिर्फ शरीर को ही नुकसान नहीं पहुँचाता, रिश्तों को भी तोड़ता है। घर में टोनावर रहती है, लेकिन घर भी चला जाता है। एक दिन ऐसा आता है जब नशा खल्ल हो जाता है, लेकिन नशा बना रहता है।

दोसद दूर हो जाते हैं, और इंसान अकेला रह जाता है। यह कोई नया कैलेंडर नहीं है, बल्कि एक नई जिंदगी बनाने का नोका है। आइए हम एक आसान लेकिन पक्का वादा करें — आज उस वीज को का कर्हें जो कल लम्बारे जिंदगी छान सकती है। नरों से आजाद लेना कनजोरी नहीं, सबसे बड़ी सेलक-रिपेक्ट है। 31 दिसंबर की शाम को, यह आँटकल सिर्फ एक उपदेश नहीं है, यह एक सय पकड़कर उसे रोकने की कोशिश है। नशा बुरा नहीं है। सेलिब्रेट करना गलत नहीं है। लेकिन खुशी खुद को नारकर नहीं मिलती। सच्ची खुशी वो है जिससे अगले दिन सने शर्मिंदगी महसूस न हो। सच्ची खुशी वो है जिससे पिता-पिता की आँखों में सुकून

आए। सच्ची खुशी वो है जिससे हम अग्रनों को गर्व से देखें। नया साल आ रहा है। यह कोई नया कैलेंडर नहीं है, बल्कि एक नई जिंदगी बनाने का नोका है। आइए हम एक आसान लेकिन पक्का वादा करें — आज उस वीज को का कर्हें जो कल लम्बारे जिंदगी छान सकती है। नरों से आजाद लेना कनजोरी नहीं, सबसे बड़ी सेलक-रिपेक्ट है। 31 दिसंबर की शाम को, यह आँटकल सिर्फ एक उपदेश नहीं है, यह एक सय पकड़कर उसे रोकने की कोशिश है। नशा बुरा नहीं है। सेलिब्रेट करना गलत नहीं है। लेकिन खुशी खुद को नारकर नहीं मिलती। सच्ची खुशी वो है जिससे अगले दिन सने शर्मिंदगी महसूस न हो। सच्ची खुशी वो है जिससे पिता-पिता की आँखों में सुकून

आपको नरों से आजाद, इज्जत और इंसानियत से भरी जिंदगी की दुआ करता हूँ।

विश्लेषण साल 2026 : तैयार हैं हम संकल्प और उमंग के साथ ?

प्रमुनाथ शुक्ल

नूतन साल केवल तारीख बदलने का नाम नहीं है। यह समय के कैलेंडर पर एक नई धारा जोड़ने से कहीं अधिक है। यह आत्मा के भीतर जमा धूल को झाड़ने, विचारों की दिशा सुधारने और जीवन को नई दिशा और अर्थ देने का अवसर है। हर वर्ष की तरह अलबिदा होता साल 2025 और जिसके स्वागत के लिए हम बेताब हैं, साल 2026 भी हमसे एक प्रश्न करता है, क्या हम सचमुच नए हो पाए, या सिर्फ पुराने ढरे को नई तारीख के साथ ढोते रहे।

नया साल शोर, आतिशबाजी और सोशल मीडिया के शुभकामना संदेशों से आगे निकलने की माँग करता है। यह एक आधुनिक सोच चाहता है, जहाँ उत्सव के साथ उत्तरदायित्व, उमंग के साथ विवेक और संकल्प के साथ करुणा हो। उमंग और उत्साह बाहरी नहीं, भीतरी ऊर्जा होनी चाहिए। नूतन साल अक्सर जोश और उमंग का प्रतीक माना जाता है। लोग कहते हैं इस साल कुछ बड़ा करेंगे पर आधुनिक सोच यह कहती है कि उमंग का स्रोत बाहर नहीं, भीतर होना चाहिए। क्षणिक उत्साह, जो कुछ दिनों में बुझ जाए, वह परिवर्तन नहीं ला सकता। सच्ची उमंग वह है जो कठिन परिस्थितियों में भी हमें आगे बढ़ने की शक्ति दे।

उत्साह तब सार्थक होता है जब वह निरंतरता में बदल जाए, जब हर सुबह खुद से यह पूछा जाए कि

आज मैं बीते कल से थोड़ा बेहतर कैसे बन सकता हूँ।

संकल्प और विकल्प के साथ हमें तैयार होना होगा।

नया साल संकल्पों का मौसम होता है पर अधिकतर संकल्प शब्दों में ही रह जाते हैं। आधुनिक दृष्टि में संकल्प केवल इच्छा नहीं, बल्कि जिम्मेदारी है।

संकल्प तभी टिकता है जब हम विकल्पों को समझदारी से चुनते हैं। हर दिन हम छोटे-छोटे विकल्प चुनते हैं, सत्य या सुविधा, परिश्रम या बहाना, प्रेम या घृणा। यही विकल्प हमारे पूरे वर्ष की दिशा तय करते हैं। नया साल यह सिखाता है कि बड़े बदलाव बड़े फैसलों से नहीं, बल्कि रोज़ लिए गए सही विकल्पों से आते हैं।

प्रेम और सद्भाव की भावना हमें निजी दायरे से सामाजिक सरोकार तक रखनी चाहिए। आज का समय तेज़ है, प्रतिस्पर्धी है और अक्सर संवेदनहीन भी। ऐसे में नया साल हमें प्रेम को नए अर्थ में समझने का अवसर देता है। प्रेम केवल व्यक्तिगत संबंधों तक सीमित नहीं होना चाहिए। सद्भाव का अर्थ असहमति के बावजूद सम्मान। अलग विचार रखने वाले से भी ईंसान की तरह पेश आना। आधुनिक समाज में यही सबसे बड़ा उत्सव है। जब हम प्रेम और सद्भाव को जीवन की नीति बनाते हैं, तब नया साल केवल हमारा नहीं रहता, वह समाज

का नया साल बन जाता है।

घृणा से मुक्ति सबसे जरूरी नववर्ष का संकल्प है कोई एक संकल्प सबसे अधिक जरूरी है, तो वह है घृणा को छोड़ने का संकल्प। घृणा हमें थकाती है, हमें संकीर्ण बनाती है और हमारे भीतर के मनुष्य को छोटा करती है। नया साल इस बोझ को उतारने का समय है। आधुनिक सोच यह नहीं कहती कि अन्याय को स्वीकार कर लिया जाए, बल्कि यह कहती है कि संघर्ष में भी मानवीय गरिमा बनी रहे। घृणा छोड़ना कमजोरी नहीं, बल्कि मानसिक स्वतंत्रता है।

हमारा लक्ष्य केवल सफलता नहीं, सार्थकता के साथ

नए साल में लक्ष्य तय किए जाते हैं, पैसा, पद, पहचान पर नहीं पर आधुनिक दृष्टि पूछती है इन लक्ष्यों का उद्देश्य क्या है। लक्ष्य केवल सफलता के लिए नहीं, सार्थकता के लिए होने चाहिए। ऐसा लक्ष्य जो केवल हमें नहीं, दूसरों को भी बेहतर जीवन दे सके।

जब लक्ष्य समाज और आत्मा दोनों के साथ जुड़ते हैं, तब सफलता अहंकार नहीं बनती, बल्कि सेवा का माध्यम बनती है।

परिवर्तन डरने की नहीं, गढ़ने की चीज। लोग परिवर्तन चाहते हैं, लेकिन उससे डरते भी हैं। नया साल परिवर्तन का प्रतीक है, पर आधुनिक सोच कहती है कि परिवर्तन बाहर नहीं, भीतर से शुरू



होना चाहिए।

यदि सोच नहीं बदली, तो हालात बदलने से भी कुछ नहीं बदलेगा। परिवर्तन का अर्थ पुरानी गलतियों से सीखना, नई राह चुनना और जरूरत पड़ने पर खुद को फिर से गढ़ लेना। क्षमा और दया आत्मा की सफाई के साथ नया साल मनाने से पहले जरूरी है। क्षमा और दया इसी सफाई के साधन हैं। क्षमा दूसरों के लिए नहीं, हमारे अपने मन के लिए होती है। दया दूसरों को नहीं, हमें ईंसान बनाए रखती है।

जब हम क्षमा करते हैं, तब हम अतीत की

जंजीरों से मुक्त होते हैं। यही सच्ची नववर्ष की शुरुआत है।

शील और सौहार्द आधुनिकता का नैतिक आधार है।

आधुनिक होने का अर्थ मूल्यहीन होना नहीं है। शील, विचार, भाषा और आचरण की मर्यादा, आज पहले से अधिक आवश्यक है। सौहार्द वह सेतु है जो विविधताओं को जोड़ता है। नया साल हमें यह याद दिलाता है कि सभ्यता की पहचान ऊँची इमारतों से नहीं, बल्कि ऊँचे चरित्र से होती है।

नूतन वर्ष हम नूतन सोच, समझ के साथ

मनाएँ।

नया साल मनाने का सबसे अच्छा तरीका है, खुद से ईमानदार संवाद करें। शोर, भीड़, तमाशा, दिखावा से दूर, एक शांत संकल्प के साथ आगे बढ़ें। घृणा, से अधिक प्रेम, कम शिकायत, अधिक प्रयास, कम अहंकार, अधिक करुणा अपनाएँ नया साल तब सचमुच नया होगा, जब हम अपने भीतर कुछ नया और न्यायपन लाएँगे। यही आधुनिक सोच है, यही समय की माँग है, और यही नए साल का सच्चा उत्सव। फिर नए संकल्प और उमंग के साथ हमें तैयार हो जाना चाहिए।

बीत गया सो बीत गया नया साल नया उत्साह लाया मन में

हर कोई सफर करता है जिन्दगी में क्योंकि जीवन की कसबों में यही है। चलना ही सच की निशानी है। समय-चक्र भी दिन गहने साल के बीत गए, नई उमंग नये दिवार बना नया लगता है यहाँ संसार। "दादा माई चलते हैं" कहीं बाहर घूमने-फिरने। प्रवीण

बोलाता है, दादा माई बनाते हैं पछाड़ी पर घूमने फिरने का प्रोग्राम, मौसम बहुत सुगन्ध बना है। अरे प्रवीण जी समय तो अपनी चाल चलता है। थोड़ा अपने लोगों के लिए टाईम निकलना हमारा अर्धा प्रयास होगा। त्राज-कल व्यस्था इतनी रहती है। कहीं आने-जाने या घूमने का वक़्त नहीं मिलता लेकिन कभी कभी ऐसा वातावरण व मौसम के साथ यहाँ साल भी बीताता है। तो हम लोगों को लगता है, कहीं सुकून के पत्तों को अपने लोगों के साथ बिताए, क्यों कि "जो बीत गया सो बीत गया" अब ईंट पत्थरों के इस जंगलों से बाहर निकल कर हरियाली व प्राकृतिक वातावरण के करीब जाने का अर्धा समय है। हाँ दादा माई चलते वहाँ ट्राइ टन दिन कहीं वहाँ थोड़ा मुझ अर्धा तो जायें। पुराना समय या वक़्त जा रहा है, नयापन नई उमंगता वारों अरे हरियाली व खुशहाली का सुगन्ध मौसम ठंड के यह दिन लंबे सीख देते हैं। जो नया साल आ रहा है वह नया उत्साह भी ला रहा है। वर्तमान में लोग तो खरों में दो अरे दो वार करने में लगे रहते हैं। काला पीला करने में या व्यापार, नौकरी, में जीवन को खरों देते हैं। हाँ दादा माई सही कर रहे हैं। अब समय का अभाव सभी का रहता है, पर ई नेवार्किंग साइट, सोशल साइट और लैपटॉप कायूट व मोबाइल ने गनुष्य की दिव्याओं को बदल दिया, तभी तो पेशानी ज्यादा हो रही है।

जितीली सुविधा मिलती है, अपनी पीड़ा शरीर को से रही है बीमारी का



तहरखाना मानव शरीर से गया। परिश्रम, रिश्तों में मित्रास, आपस में गुलाकात बोलवाल, के साथ हम लोगों ने शरीर को तपना छोड़ दिया। यहाँ नया जमाना में नयापन बहुत बदलाव भी लाया। परिवारिक दूरियों को इन चीजों ने बड़ा दिया है प्रवीण। लोगों में प्रायसी बालकलेत खल्ले से रहा है, बातचीत करने की फुर्सत नहीं है। लेकिन घंटों मोबाइल पर वक़्त खराब कर रहे हैं। हाँ दादा माई इसलिए सफर अर्धा है सीखने के लिए और जीवन के रंगों के बारे में जानकारी लगती है, घूमने-फिरने से ही बात बनती है। "श्रीते वर्य की यादों पर जरा विचार करें। हाँ हाँ ठीक कहते से आप, लम्बे तो जो बीत गया उसे दिल से विदा करवा ली होगा। क्यों कि साल दर साल जो वक़्त जाता है, उसे जाने दो वारों, आशावादी बन कर अर्धा की ताताश में नया साल नया उत्साह पर जोर देना अर्धा है।

सकारात्मकता सफलता व वैचारिक भाव से सब अर्धा लेना, और शुरुआत शुभ से, इस पर ध्यान देना चाहिए। अंग्रेजी वर्य से या अरे कोई लम्बा लिए सभी आशाओं के संरोध में ले जाने वाले से। सब अर्धा से, सब मंगल से, सब शुभ से क्योंकि "बीत गया सो बीत गया नया साल नया उत्साह लाया" जीवन में धिंतन के साथ वैचारिक मंथन करना वक़्त का एक एहसास होता है तभी तो माई "सफर ए जिन्दगी" चलती रहती है दिन गहने साल बीत जाते हैं और नया साल नई खुशियों की दरतक देता है। तभी तो सब मिलकर गावते अरे एक-दूसरे को नये वर्य की शुभकामनाएं देते हैं। खगल है वर्य 2026 का अर्धा से सब का सब मंगल से।

प्रेमक स्वतंत्र लेखक - हरिश्चंद्र सिंह चौहान जबरी बाग नसिया इन्डोर

जनहित में बदले हर चाल, हों बेहतर मेरे से हाल, करे प्रार्थना बीता साल

मैं 2025 अब आपके जीवन से हमेशा के लिए चला गया हूँ, लेकिन मुझे इस बात का बहुत दुःख हमेशा रहेगा कि उन्होंने मेरे आगमन की खुशी में जो वादा किया था, वे उससे पूरी तरह से मुकर गए। मुझ बीते 2025 की नजर में जिसकी एक मात्र वजह उनका स्वार्थ ही है, जिसके आधार पर मैं कह सकता हूँ उनकी वजह से ही सामाजिक जीवन में लातार हिंसा, अन्याय, असभ्यता, घृणा और झूठ पहले की तरह ही बरकरार है। सत्य अक्सर आज भी दम तोड़ता ही दिख रहा है। लेकिन बहुत खुशी इस बात की भी है कि मेरे कालखंड को सनातन की मजबूती और अयोध्या में राम मंदिर के निर्माण की पूर्णता के साथ ही उसके ध्वजारोहण और दूसरी वर्षगांठ का भी गवाह बनने का परम सौभाग्य प्राप्त हुआ। ऊपर वाले से एक प्रार्थना यह भी करता हूँ कि देश का मध्यम वर्ग आने वाले समय में और ज्यादा खुशहाल हो लेकिन सत्य भी है कि मेरे यानी बीते 2025 के कालखंड में देश का मध्यम वर्ग जिस तरह से नफरत और झूठ के पीछे खड़ा रहा, वह वाकई बेहद निराशाजनक है। सत्य काफी हद तक सिमट गया है और इस पर यकीन करने और इस पर चलने वाले लोग भी अब ना के बावबर रह गये हैं।

मैं आपका बीता साल 2025 आपसे यह भी कहने से नहीं चूकना चाहता कि मीडिया और धार्मिक नेतृत्व दोनों ही एक ऐसी राजनीतिक व्यवस्था और उसके बचाव में मुखर रहे जिस देश और समाज के हित में नहीं माना जा सकता।

मैंने यानी आपके बीते हुए इस साल 2025 ने अपने पूरे कालखंड में यह भी देखा कि संवैधानिक पदों पर बैठे हुए लोगों में कुछ को छोड़कर न केवल नैतिकता खोते नजर आए, बल्कि उनमें निष्पक्षता की भावना भी खतरनाक हालातों तक कमजोर होती ही दिखी।

मैं 2025 आपको यह भी बताना चाहता हूँ कि मेरे पूरे समय में न्यायालय के फैसलों पर भी कई सवाल उभरे, खास तौर से निचली अदालतों के फैसले काफी सवालों के घेरे में रहे, लेकिन इसके विपरीत मुझ 2025 को खुशी इस बात की भी है कि मैंने अपने इस कालखंड में लोकतांत्रिक भावना और व्यवहार की मजबूती के लिए आवश्यक एक सक्रिय व्यवस्था का उदय होना देखा। इसके फलस्वरूप शाद संविधान को और कमजोर होने से फिलहाल तो बचा लिया गया है, लेकिन अज्ञान, समानता, न्याय और बंधुत्व के बुनियादी मूल्य फिलहाल गहरे खतरे से बाहर अब भी नहीं माने जा सकते, क्योंकि बीते हुए मुझ 2025 को ऐसा लगता है कि धर्म अपनी बहुलता आधारित आध्यात्मिकता और शुद्ध दृष्टि से निरंतर दूर होता ही जा रहा है। मेरी नजर में आस्था की जगह कर्मकांड ने ले ली है, जिसे एक चका चौध तमाशा के अलावा कुछ नहीं कहा जा सकता।

सुनील बाजपेई

नव वर्ष 2026 सभी सरकारों के लिए आत्ममंथन का अवसर- शासन की आत्मालोचना से सुशासन तक-रेवड़ी संस्कृति, लक्षित कल्याण और जवाबदेह राज्य की वैश्विक कसौटी-एक समग्र वैश्विक विश्लेषण

रेवड़ियों व राहते उनके वास्तविक हकदारों के साथ व्यवस्था की खामियों से अपात्र वर्ग बड़े पैमाने पर उठा रहा है, जो सार्वजनिक संसाधनों के दुरुपयोग व शासन की नैतिकता और वित्तीय स्थिरता पर भी प्रश्नचिह्न लगाती है - एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनांनी गाँविया महाराष्ट्र

गाँविया - वैश्विक स्तर पर नव वर्ष 2026 केवल कैलेंडर का परिवर्तन नहीं है, बल्कि यह केंद्र और राज्य सरकारों के लिए आत्मविश्लेषण, आत्मस्वीकार और आत्मसुधार का ऐतिहासिक अवसर भी है। लोकतंत्र में सत्ता परिवर्तन जितना महत्वपूर्ण है, उससे कहीं अधिक महत्वपूर्ण है सत्ता में रहते हुए अपनी कमियों, खामियों और नीतियों

असंतुलनों को स्वीकारकर उन्हें सुधारने का संकल्प, आज भारत ही नहीं, बल्कि विश्व के अधिकांश लोकतांत्रिक देश इसी प्रश्न से जुड़ा रहे हैं कि क्या उनकी सरकारें वास्तविक जरूरतमंदों तक सहायता पहुंचाने में सफल हो पा रही हैं या नहीं। एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनांनी गाँविया महाराष्ट्र यह मानता हूँ कि वर्तमान प्रतिस्पर्धी राजनीतिक युग में सरकारों और राजनीतिक दलों द्वारा मुफ्त या रियायती सुविधाएं, नकद हस्तांतरण, सब्सिडी, और विशेष छूट लोकतांत्रिक विमर्श का केन्द्रीय योजनाएं अबकेवल सामाजिक न्याय का औजार नहीं रहें, बल्कि राजनीतिक प्रतिस्पर्धा का प्रभावी हथियार बन गई हैं। भारत ही नहीं, विश्व के अनेक लोकतांत्रिक देशों में यह प्रश्न गंभीरता से उठ रहा है कि क्या ये राहते वास्तव में उनके वास्तविक हकदारों तक पहुंच पा रही हैं या फिर सार्वजनिक संसाधनों के दुरुपयोग की ओर संकेत करती हैं, बल्कि शासन की नैतिकता और वित्तीय स्थिरता पर भी प्रश्नचिह्न लगाती हैं।

साथियों बात अगर हम नव वर्ष 2026 में सरकारों को अपनी कमियों पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता को समझने की करें तो, लोकतंत्र में सरकारें ज़िंदगी नहीं होतीं नीति निर्माण से लेकर क्रियान्वयन तक अनेक स्तरों पर खामियां स्वाभाविक हैं, परंतु समस्या तब उत्पन्न होती है जब इन खामियों को स्वीकार करने के बजाय उन्हें राजनीतिक सफलता का आवरण दे दिया जाता है। भारत में केंद्र और राज्य सरकारों के सामने आज सबसे बड़ी चुनौती यही है कि वे योजनाओं की संख्या बढ़ाने के बजाय उनकी गुणवत्ता, पारदर्शिता और प्रभावशीलता पर ध्यान दें। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर देखें तो



ओईसीडी देशों स्कैंडिनेवियाई राष्ट्रों और पूर्वी एशियाई अर्थव्यवस्थाओं में शासन सुधार का मूल मंत्र पॉलिसी रिव्यू एंड कोर्स करेक्शन रहा है। भारत में भी नव वर्ष 2026 को सरकारों को यह स्वीकार करना होगा कि कई योजनाएं लक्ष्य से भटक चुकी हैं, कई सब्सिडी अपात्रों तक पहुंच रही हैं और कई सेवाओं में असमानता बढ़ रही है। प्रतिस्पर्धी राजनीति और 'रेवड़ी संस्कृति' का विस्तार वर्तमान राजनीतिक युग में चुनौती प्रतिस्पर्धा ने लोक कल्याण को लोकलुभावन वाद में बदल दिया है। मुफ्त बिजली, मुफ्त पानी, मुफ्त यात्रा, नकद हस्तांतरण और विविध प्रकार की रियायतें - इनका उद्देश्य सामाजिक सुरक्षा कम और राजनीतिक लाभ अधिक प्रतीत होने लगा है। अंतरराष्ट्रीय अनुभव बताता है कि लैटिन अमेरिका, अफ्रीका और दक्षिण एशिया के कई देशों में पॉपुलिस्ट वेलफेयर ने दीर्घकालिक आर्थिक विकास को रोक रखा है। भारत में भी यह प्रश्न अत्यंत प्रासंगिक है कि क्या मुफ्त सुविधाएं वास्तव में उन लोगों तक पहुंच रही हैं जिन्हें उनके वरनाई गई थीं, या फिर मध्यम और उच्च वर्ग भी उनका अनुचित लाभ उठा रहे हैं।

साथियों बात अगर हम हकदार बनाम अपात्र: कल्याण योजनाओं की सबसे बड़ी चुनौती इसको समझने की करें तो, सरकारी योजनाओं का मूल सिद्धांत टारगेट डिलीवरी होता है, परंतु व्यवहार में यह सिद्धांत कमजोर पड़ता दिख रहा है। अनेक रिपोर्ट्स और सामाजिक ऑडिट यह संकेत देते हैं कि अपात्र लोग अनेक सरकारी रियायतों का लाभ उठा रहे हैं, जबकि वास्तविक जरूरतमंद या तो वंचित रह जाते हैं या आंशिक लाभ ही प्राप्त कर पाते हैं। यह स्थिति न केवल संसाधनों की बर्बादी है, बल्कि सामाजिक न्याय के सिद्धांत का भी उल्लंघन है। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर वर्ल्ड बैंक और आईएमफ ने बार-बार कहा है कि लोक जेन वेलफेयर स्कीमस विकासशील देशों की सबसे बड़ी

समस्या है, और भारत इससे अछूता नहीं है। बिजली, पानी, स्वास्थ्य, शिक्षा और परिवहन, ये सेवाएं किसी भी आधुनिक राज्य की रीढ़ होती हैं। भारत में सरकारें इन सेवाओं में राहत देने का दावा करती हैं, परंतु जमीनी हकीकत यह है कि शहरी-ग्रामीण, अमीर-गरीब और संगठित-असंगठित वर्गों के बीच असमानता बनी हुई है। अंतरराष्ट्रीय तुलना में देखें तो यूरोप में यूनिवर्सल बेसिक सर्विसेज का मॉडल अपनाया गया है, जहाँ सेवाएं सरकारी हैं पर मुफ्त नहीं। भारत में मुफ्त सेवाओं की घोषणा तो होती है, लेकिन गुणवत्ता, निरंतरता और समान पहुंच सुनिश्चित नहीं हो पाती।

साथियों बात अगर हम अपात्र लाभार्थियों द्वारा सरकारी सेवाओं का दुरुपयोग: ऑडिट की अनिवार्यता इसको समझने की करें तो, नव वर्ष 2026 में सबसे तात्कालिक आवश्यकता है, सार्वजनिक योजनाओं और सेवाओं का व्यापक निष्पक्ष और तकनीक-आधारित ऑडिट। अनेक अपात्र लोग एक साथ कई योजनाओं का लाभ उठा रहे हैं - यह स्थिति न केवल वित्तीय नुकसान पहुंचाती है, बल्कि जनता के विश्वास को भी कमजोर करती है। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सोशल ऑडिट आउटकम ऑडिट और परफॉर्मेंस रिव्यू को शासन सुधार का अनिवार्य हिस्सा माना जाता है। भारत में भी कैग, राज्य लेखा परीक्षक और स्वतंत्र संस्थाओं को और अधिक सशक्त बनाना होगा। रेलवे सहित अनेक सरकारी विभागों में कर्मचारियों को उनके सेवा क्षेत्र में मुफ्त या बिना टिकट सुविधाएं दी जाती हैं। यह व्यवस्था ऐतिहासिक और सेवा-शर्तों का हिस्सा रही है, परंतु बदलते समय में यह प्रश्न उठाना स्वाभाविक है कि क्या ये सुविधाएं आज भी न्यायसंगत हैं? जब एक आम नागरिक हर सेवा के लिए भुगतान करता है, तब सरकारी कर्मचारियों को असंशुभित मुफ्त सेवाएं देना सामाजिक असंतुलन को जन्म देता है। कई विकसित देशों में सरकारी

कर्मचारियों को वेतन तो प्रतिस्पर्धी दिया जाता है, परंतु मुफ्त सार्वजनिक सेवाओं की परंपरा सीमित है।

साथियों बात अगर हम मुफ्त सुविधाएं बनाम जवाबदेह राज्य: वैश्विक दृष्टिकोण को समझने की करें तो विश्व के सफल लोकतंत्रों ने यह सिद्ध किया है कि मुफ्त सुविधाएं स्थायी समाधान नहीं हैं (जर्मनी, जापान और दक्षिण कोरिया जैसे देशों में यूजर पेस प्रिंसिपल को सामाजिक सुरक्षा के साथ संतुलित किया गया है। भारत को भी इसी दिशा में सोचने की आवश्यकता है। नव वर्ष 2026 में यह तय करना होगा कि क्या हम एक ऐसा राज्य चाहते हैं जो अल्पकालिक लोकप्रियता के लिए संसाधन बाँटे, या एक ऐसा राज्य जो दीर्घकालिक आत्मनिर्भरता और जिम्मेदार नागरिकता को बढ़ावा दे। भारत के पास आज आधार, डीबीटी, और डिजिटल सार्वजनिक अवसरचना जैसी मजबूत प्रणालियाँ हैं। इसके बावजूद यदि अपात्र लाभार्थी योजनाओं का लाभ उठा रहे हैं, तो यह प्रशासनिक इच्छाशक्ति की कमी को दर्शाता है। अंतरराष्ट्रीय अनुभव बताता है कि 'डेटा इंटेग्रेशन और रियल-टाइम मॉनिटरिंग' से कल्याण योजनाओं की प्रभावशीलता कई गुना बढ़ाई जा सकती है। नव वर्ष 2026 को सरकारों को इस दिशा में निष्पक्ष कदम उठाने होंगे।

साथियों बात अगर हम राजनीतिक दलों की भूमिका: आत्मसंयम और नीति-आधारित राजनीति को बढ़ावा दे। भारत के पास आज आधार, डीबीटी, और डिजिटल सार्वजनिक अवसरचना जैसी मजबूत प्रणालियाँ हैं। इसके बावजूद यदि अपात्र लाभार्थी योजनाओं का लाभ उठा रहे हैं, तो यह प्रशासनिक इच्छाशक्ति की कमी को दर्शाता है। अंतरराष्ट्रीय अनुभव बताता है कि 'डेटा इंटेग्रेशन और रियल-टाइम मॉनिटरिंग' से कल्याण योजनाओं की प्रभावशीलता कई गुना बढ़ाई जा सकती है। नव वर्ष 2026 को सरकारों को इस दिशा में निष्पक्ष कदम उठाने होंगे।

अतः अगर हम अपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि नव वर्ष 2026 - आत्मालोचन से सुधार तक, नव वर्ष 2026 भारत के लिए केवल विकास का नहीं, बल्कि शासन की गुणवत्ता सुधारने का वर्ष होना चाहिए। केंद्र और राज्य सरकारों को अपनी कमियों को स्वीकार कर, रेवड़ी संस्कृति पर पुनर्विचार कर, अपात्र लाभार्थियों पर लगाम लगाकर और शासकीय विशेषाधिकारों की समीक्षा कर एक संतुलित, न्यायसंगत और जवाबदेह शासन मॉडल को अग्र बढ़ना होगा। यही वह मार्ग है जो भारत को न केवल एक मजबूत अर्थव्यवस्था, बल्कि एक वैश्विक स्तर पर आदर्श लोकतंत्र बना सकता है।

गांव लोहाखेड़ा में बाबा मोती राम मेहरा जी की याद में श्री अखंड पाठ साहिब आरंभ

परिवहन विशेष न्यूज

लोगोवाल, (जगसीर सिंह) - आज गांव लोहाखेड़ा के बाबा नंद सिंह जी गुरुद्वारा साहिब में बाबा मोती राम मेहरा जी वेलफेयर (रजि: नंबर (8266) की तरफ से बाबा मोती राम मेहरा जी की याद में श्री अखंड पाठ प्रकाश किए गए, जिनके भोग 2 जनवरी को पड़ेंगे और 1 जनवरी को गांव लोहाखेड़ा में पूरे दिन दूध का लंगर लगाया जाएगा। यह जानकारी देते हुए बाबा मोती राम मेहरा जी वेलफेयर कमेटी के अध्यक्ष मनप्रोत सिंह लोहाखेड़ा ने बताया कि 2 जनवरी को भोग वाले दिन बाबा गुरुजंत सिंह तथा दरार वाले कीर्तन से संगत को निहाल करेंगे और गुरु का लंगर अटूट बरतेंगे। उन्होंने इलाके की सभी संगतों से अपील की कि वे भोग वाले दिन इस समागम में शामिल होकर गुरु घर की खुशियां प्राप्त करें। इस समय बाबा मोती राम मेहरा जी वेलफेयर सोसायटी (रजि.) के कमेटी सदस्य दुल्ला सिंह मेहरा, गुरुजंत सिंह मेहरा, सोनू सिंह मेहत, बलबीर सिंह मेहरा, गुरमीत सिंह मेहरा, जगसीर सिंह मेहरा, सिंगारा सिंह मेहरा, अवतार सिंह मेहरा, मन्खन सिंह मेहरा, गुरुविंदर पाल सिंह मेहरा आदि मौजूद थे।





डॉ. विजय गर्ग

लैंगिक विविधता एक अच्छा महसूस करने वाला मंत्र नहीं है - यह परिणामों को बदल देता है। अध्ययनों से बार-बार पता चलता है कि विविध टीमों में समरूप टीमों से बेहतर प्रदर्शन करती हैं: वे रचनात्मकता को बढ़ावा देती हैं, समस्या समाधान में पूर्वाग्रह को कम करती हैं, तथा ऐसे समाधान तैयार करती हैं जो व्यापक समाज के साथ प्रतिध्वनित होते हैं।

लड़कियों को शामिल करें: लैंगिक विविधता के माध्यम से भारत में एसटीएम शिक्षा की पुनः कल्पना करना

डॉ. विजय गर्ग

हाल के वर्षों में, प्रौद्योगिकी और वैज्ञानिक नेतृत्व की ओर भारत की दौड़ तेज हो गई है। तेजी से डिजिटलीकरण, शहरों में नवाचार के केन्द्र उभरने तथा एक जीवंत स्टार्ट-अप पारिस्थितिकी तंत्र के साथ, देश तकनीकी क्रांति की कगार पर खड़ा है। लेकिन एक स्पष्ट अंतर बना हुआ है - एसटीएम (विज्ञान, प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग, गणित) में लड़कियों और युवा महिलाओं का कम प्रतिनिधित्व। इसे ठीक करना सिर्फ इक्विटी का मामला नहीं है; यह एक रणनीतिक आवश्यकता है जो भारत की भविष्य की प्रतिस्पर्धात्मकता को परिभाषित करेगी।

एसटीएम में लैंगिक विविधता क्यों मायने रखती है लैंगिक विविधता एक अच्छा महसूस करने वाला मंत्र नहीं है - यह परिणामों को बदल देता है। अध्ययनों से बार-बार पता चलता है कि विविध टीमों में समरूप टीमों से बेहतर प्रदर्शन करती हैं: वे

रचनात्मकता को बढ़ावा देती हैं, समस्या समाधान में पूर्वाग्रह को कम करती हैं, तथा ऐसे समाधान तैयार करती हैं जो व्यापक समाज के साथ प्रतिध्वनित होते हैं। एसटीएम क्षेत्रों में, जहां नवाचार स्वास्थ्य सेवा से लेकर एआई नैतिकता तक हर चीज को आकार देता है, यह सुनिश्चित करना महत्वपूर्ण है कि विभिन्न दृष्टिकोणों का प्रतिनिधित्व किया जाए।

फिर भी भारत में, लड़कियों को अक्सर एसटीएम पथ से दूर कर दिया जाता है - कला या मानविकी के लिए जल्दी ही छोड़ दिया जाता है, विज्ञान को रकटिनर, र अखीर या उन्हें प्रेरित करने के लिए केवल दृश्यमान रोल मॉडल की कमी के रूप में देखने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। यह प्रवृत्ति भारत के लिए अहितकारी नहीं है, लेकिन यह सांस्कृतिक अपेक्षाओं और शैक्षिक संरचनाओं में गहराई से निहित है।

एसटीएम में युवा लड़कियों के सामने आने वाली बाधाएं कई बाधाएं लड़कियों को

एसटीएम करियर बनाने से रोकती हैं रूढ़िवाद और सामाजिक अपेक्षाएं: लड़कियों के लिए उपयुक्त भूमिकाओं के बारे में विचार घर, स्कूल और मीडिया में मजबूत होते हैं।

रोल मॉडल की कमी: जब लड़कियां शायद ही कभी महिला वैज्ञानिकों, इंजीनियरों या तकनीकी नेताओं को देखती हैं, तो ऐसी भूमिकाओं में खुद की कल्पना करना कठिन हो जाता है।

शैक्षिक प्रयोगशालाओं, मार्गदर्शन या प्रोत्साहन के बिना स्कूल लड़कियों पर असमान रूप से प्रभाव डालते हैं, जिनमें इन विषयों का पता लगाने में आत्मविश्वास की कमी हो सकती है।

अंतराल: अंतराल: प्रयोगशालाओं, मार्गदर्शन या प्रोत्साहन के बिना स्कूल लड़कियों पर असमान रूप से प्रभाव डालते हैं, जिनमें इन विषयों का पता लगाने में आत्मविश्वास की कमी हो सकती है।

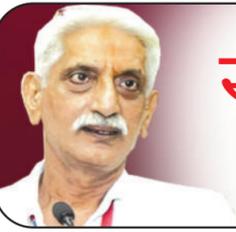
एसटीएम से बाहर प्रारंभिक स्व-चयन: यहां तक कि जब लड़कियां योग्यता दिखाती हैं, तो भी वे निहित पूर्वाग्रह के कारण अधिक रमहिलार क्षेत्रों की ओर आकर्षित हो सकती हैं।

भारत लड़कियों को एसटीएम

में कैसे ला सकता है कथा को बदलने और सभी प्रतिभाओं के लिए दरवाजे खोलने के लिए, एक बहुआयामी रणनीति आवश्यक है।

1. पाठ्यक्रम और कक्षा परिवर्तन नवाचार सीखने से शुरू होता है। भारत के स्कूलों को प्रारंभिक कक्षाओं में अनुभवात्मक शिक्षा — कोडिंग, व्यावहारिक विज्ञान प्रयोगों, रोबोटिक्स क्लबों और वास्तविक दुनिया की समस्या-समाधान को एकीकृत करना चाहिए। लैंगिक पूर्वाग्रह को पहचानने और उसका प्रतिकार करने के लिए प्रशिक्षित शिक्षक प्रत्येक छात्र को समान रूप से प्रोत्साहित कर सकते हैं।

2. रोल मॉडल और मार्गदर्शन प्रतिनिधित्व मायने रखता है। राजा रामन्ना जैसे ऐतिहासिक हस्तियों से लेकर समकालीन नेताओं के साथ-साथ विजयलक्ष्मी नवनीतकुण्डन (इसरो) जैसे समकालीन नेताओं तक, महिला



संपादकीय

चिंतन-मनन



वैज्ञानिकों, इंजीनियरों, गणितज्ञों और प्रौद्योगिकीविदों को उजागर करना इस विचार को सामान्य बनाता है कि लड़कियां इन क्षेत्रों में आती हैं। लड़कियों को महिला पेशेवरों के साथ जोड़ने वाले मार्गदर्शन कार्यक्रम सचमुच कैरियर की दिशा बदल सकते हैं।

3. समुदाय और माता-पिता की सहभागिता माता-पिता और समुदाय प्रारंभिक आकांक्षाओं को आकार देते हैं। जागरूकता अभियान और एसटीएम आउटरीच कार्यक्रम परिवारों को सिखा सकते हैं कि एसटीएम स्वाभाविक रूप से रघुरूपों के लिए नहीं है; यह रमहिलाओं के लिए एक क्षेत्र है, यह लिंग की परवाह किए बिना जिज्ञासु दिमाग के लिए एक मैदान है।

4. छात्रवृत्ति और सहायता नेटवर्क विशेष रूप से वंचित क्षेत्रों में एसटीएम — में प्रवेश करने वाली लड़कियों को लक्षित वित्तीय प्रोत्साहन आर्थिक बाधाओं को दूर करने में मदद करते हैं। ऑनलाइन

और ऑफलाइन दोनों तरह के सहायता नेटवर्क स्कूल, कॉलेज और प्रारंभिक कैरियर चर्चों में प्रोत्साहन प्रदान कर सकते हैं।

5. उद्योग साझेदारी उद्योग की एक भूमिका है: इंटरशिप, कार्यशालाएं और वास्तविक परियोजनाओं के संपर्क में आने से एसटीएम मूर्त और आकर्षक बन जाता है। कम्पनियों को भविष्य के लिए सुसज्जित विविध प्रतिभाओं की एक पाइपलाइन विकसित करके लाभ होता है।

भविष्य में खुद को देखना एसटीएम में पूरी तरह से शामिल लड़कियों का भविष्य कैसा होगा?

एक कक्षा जहां लड़कियां रोबोटिक्स टीमों का नेतृत्व करती हैं और वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धा करती हैं। लिंग-संतुलित समूहों के साथ इंजीनियरिंग परिसर। भारतीय महिला वैज्ञानिक जलवायु प्रौद्योगिकी, स्वास्थ्य निदान, क्वॉटम कंप्यूटिंग और अंतरिक्ष तकनीक में सफलताओं का

नेतृत्व कर रही हैं। एक पाइपलाइन जहां लड़कियां सिर्फ एसटीएम में प्रवेश नहीं करती — वे इसे आकार देती हैं।

निष्कर्ष भारत का जनसांख्यिकीय लाभांश एक संख्या से अधिक है — यह क्षमता है जिसका उपयोग किया जाना चाहिए, न कि पुराने लिंग मानदंडों द्वारा फिल्टर किया जाना चाहिए। जब युवा लोगों को स्वयं को ऐसी भूमिकाओं में देखने की अनुमति दी जाती है, जिन पर वे आमतौर पर विचार नहीं करते, तो राष्ट्र को लाभ होता है। सच्चा नवाचार तब पनपता है जब हर आवाज सुनी जाती है और प्रत्येक मन को सफल होने के लिए उपकरण दिए जाते हैं।

लड़कियों को लाना सिर्फ सीटें भरने के बारे में नहीं है; यह व्यक्तियों, समुदायों और भारत के लिए विज्ञान और प्रौद्योगिकी में वैश्विक नेता के रूप में संभावनाओं को अनलॉक करने के बारे में है।

रिटायर्ड प्रिंसिपल एजुकेशनल स्तंभकार प्रख्यात शिक्षाविद स्ट्रीट कौर चंद एमएचआर मलोत पंजाब

प्रजातियों की खोज की गति पहले से कहीं अधिक तेज

डॉ. विजय गर्ग

एक नए अध्ययन में पाया गया है कि प्रजातियों की खोज की गति पहले से कहीं अधिक तेज हो गई है। यह उपक्रम प्रजातियों के विलुप्त होने से बचाने की रणनीति तैयार करने में महत्वपूर्ण भूमिका अद कर सकता है। इससे जैव विविधता को संजोने व समृद्ध करने में सहायता मिलेगी। बताया गया है कि विज्ञानी हर वर्ष 16,000 से अधिक नई प्रजातियों को पहचान कर रहे हैं।

एरिजोना यूनिवर्सिटी के शोधकर्ताओं ने लगभग 20 लाख प्रजातियों के वर्गीकरण इतिहास का अध्ययन किया है, जिसमें सभी जीवित जीवों के समूह शामिल हैं। जर्नल साइंस एडवांसेस में प्रकाशित निष्कर्षों के अनुसार, 2015 से 2020 के बीच जो हाल के समय का सबसे व्यापक डाटा है हर वर्ष औसतन 16,000 से अधिक नई प्रजातियों का दस्तावेजीकरण किया गया, जिसमें 10,000 से अधिक जानवर, 2,500 पौधे और 2,000 फंगस शामिल हैं।

एरिजोना यूनिवर्सिटी के पारिस्थितिकी और विकासवादी जीव विज्ञान विभाग के प्रोफेसर और इस अध्ययन के वरिष्ठ लेखक जान वीयन्स के मुताबिक, नई प्रजातियों की खोज



इसलिए महत्वपूर्ण है कि प्रजातियों को वैज्ञानिक रूप से वर्णित किए बिना उनकी रक्षा नहीं की जा सकती। इस दिशा में दस्तावेजीकरण पहला कदम है। यदि हमें नहीं पता कि कोई प्रजाति मौजूद है तो हम उसे विलुप्त होने से नहीं बच सकते।

लेखक का कहना है कि विज्ञानी ऐसा मानते हैं कि नई प्रजातियों के दस्तावेजीकरण की गति धीमी हो गई है। और ऐसा इसलिए कि हम नई प्रजातियों की खोज करने में कोताही कर रहे हैं, लेकिन हमारे परिणाम इसके

विपरीत दिखाते हैं। वीयन्स के मुताबिक, “वास्तव में, हम पहले से कहीं अधिक तेजी से नई प्रजातियों की खोज कर रहे हैं।” इस समय अधिकांश नई प्रजाति दृश्य लक्षणों शोधकर्ताओं का यह भी कहना है कि यह प्रवृत्ति धीमी होने के कोई संकेत नहीं दिखाती है और भविष्यवाणी की कि कुछ समूहों, जैसे पौधे, फंगस, मकड़ियों, मछलियों और उभयचर जीवों के बीच जैव विविधता पहले से कहीं अधिक समृद्ध है।

उदाहरण के लिए, टीम ने अनुमान लगाया कि मछलियों की प्रजातियों की संख्या

1,15,000 और उभयचरों की 41,000 हो सकती है, जबकि वर्तमान में केवल लगभग 42,000 मछलियों और 9,000 उभयचरों की प्रजातियां वर्णित हैं। उन्होंने यह भी अनुमान लगाया कि पौधों की अंतिम संख्या पांच लाख से अधिक हो सकती है। शोधकर्ता बताते हैं कि रजोवन के सभी क्षेत्रों में, हमने पाया कि जीवित, वर्णित प्रजातियों को कुल संख्या तेजी से बढ़ रही है, हाल के दशकों में धीमी होने के कोई संकेत नहीं है। इसके अलावा, प्रजातियों के वर्णन की सबसे तेज दरें (16,000 से अधिक प्रजातियां प्रति वर्ष 2015 के बाद से हैं) अधिकतम दूर (17,044 प्रजातियां प्रति वर्ष) 2020 में थीं।

शोधकर्ताओं ने यह भी भविष्यवाणी की कि नई जीवों की खोज की दर बढ़ती रहेगी। इस समय अधिकांश नई प्रजाति दृश्य लक्षणों द्वारा पहचानी जाती हैं। लेकिन जैसे-जैसे आणविक उपकरणों में सुधार होगा, हम और भी अधिक गुप्त प्रजातियों का पता लगाएंगे जैसे जीव जो केवल अनुवंशिक स्तर पर भिन्न होते हैं। यह विशेष रूप से अद्वितीय बैक्टीरिया और फंगस को उजागर करने के लिए आशाजनक है।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोत पंजाब

शिक्षा का स्वरूप: बदलते समय में बदलती प्रणाली



डॉ. विजय गर्ग

शिक्षा किसी भी समाज की रीढ़ है। यह न केवल एक व्यक्ति के ज्ञान और कौशल को विकसित करता है, बल्कि समाज की सोच, दिशा और भविष्य को भी आकार देता है। लेकिन आज जब हम शिक्षा के स्वरूप को देखते हैं, तो यह स्पष्ट है कि यह एक गहरे परिवर्तन से गुजर रहा है - जहां अपेक्षाएं, चुनौतियां और कई प्रश्न हैं। पारंपरिक शिक्षा से लेकर आधुनिकता तक एक समय था जब शिक्षा का अर्थ कितानों, गुरु और कक्षा तक ही सीमित था। अनुशासन, रत्न विद्या और परीक्षाओं को सफलता का माप माना जाता था। आज शिक्षा का दायरा व्यापक हो गया है। डिजिटल कक्षाएं, ऑनलाइन पाठ्यक्रम, स्मार्ट बोर्ड और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस जैसे उपकरण शिक्षा को नई दिशा दे रहे हैं।

अब सीखना स्कूल या कॉलेज तक ही सीमित नहीं रहा, बल्कि घर, मोबाइल और लैपटॉप तक पहुंच गया है। प्रौद्योगिकी का बहुता प्रभाव शिक्षा को लोकतांत्रिक बनाने में प्रौद्योगिकी ने बड़ी भूमिका निभाई है। ऑनलाइन प्लेटफॉर्म ने दूर-दूर से आने वाले छात्रों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक पहुंच भी प्रदान की है। वचुअल रैलैक्स ने सीखने को अधिक रोचक और लचीला बना दिया।

लेकिन इसके साथ ही डिजिटल डिवाइड की समस्या भी सामने आई है। आज भी ऐसे कई बच्चे हैं जिनके पास इंटरनेट, स्मार्टफोन या उचित संसाधन नहीं हैं। ऐसे में जहां टेक्नोलॉजी कुछ लोगों के लिए वरदान है, वहीं यह दूसरों के लिए एक नई बाधा भी बनती जा रही है। शिक्षा और रोजगार के बीच बढ़ती हुई दरार

आज की शिक्षा प्रणाली की सबसे बड़ी चुनौती यह है कि वह छात्रों को डिग्री दे रही है, लेकिन रोजगार के लिए आवश्यक कौशल नहीं दे पा रही है। पुस्तक ज्ञान और व्यावहारिक जीवन के विद्या अंतर लगातार बढ़ रहा है। इस कारण बड़ी संख्या में शिक्षित युवा बेरोजगार हैं। अब ऐसी शिक्षा की आवश्यकता है जो कौशल-आधारित, अनुभवात्मक और समस्या समाधान करने वाली हो।

शिक्षक की भूमिका में बदलाव पहले शिक्षक ही ज्ञान का एकमात्र स्रोत हुआ करता था, आज वह मार्गदर्शक और गुरु की भूमिका निभा रहा है। प्रौद्योगिकी के युग में शिक्षक का काम न केवल पढ़ाना है, बल्कि छात्रों में सोचने की क्षमता, नैतिक मूल्य और जिज्ञासा को विकसित करना भी है। इसके लिए शिक्षकों का निरंतर प्रशिक्षण और सम्मान बहुत जरूरी है।

मानसिक स्वास्थ्य और शिक्षा प्रतिस्पर्धा, अंकों की दौड़ और

कैरियर का दबाव आज के छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य पर गहरा प्रभाव डाल रहा है। शिक्षा का स्वरूप तब तक पूरी तरह से नहीं बदल सकता जब तक कि वह बच्चों को न केवल सफल, बल्कि संतुलित और संवेदनशील इंसान भी बना दे। इसके लिए आवश्यक है कि जीवन कौशल, कला, खेल और मानसिक स्वास्थ्य को पाठ्यक्रम में उचित स्थान दिया जाए।

नई शिक्षा नीति और अपेक्षाएं नई शिक्षा नीतियां बहुभाषी सीखने, रचनात्मक सोच, लचीलापन और स्थानीय संदर्भों पर जोर देती हैं। यदि उन्हें जमीनी स्तर पर सही तरीके से लागू किया जाए, तो शिक्षा का स्वरूप वास्तव में बदल सकता है - ऐसी शिक्षा जो बोझ नहीं बल्कि आनंद हो।

निष्कर्ष शिक्षा का स्वरूप आज एक चौराहे पर खड़ा है। एक ओर प्रौद्योगिकी, नवाचार और नए अवसर हैं, दूसरी तरफ असमानता, बेरोजगारी और मानसिक दबाव जैसी समस्याएं हैं। आवश्यकता यह है कि शिक्षा को केवल परीक्षाओं और नैतिकता से जोड़कर नहीं देखा जाना चाहिए, बल्कि इसे मानव निर्माण की प्रक्रिया के रूप में माना जाए। जब शिक्षा समाज के लिए सोचने, समझने और जिम्मेदार नागरिक बनाने लगेगी - तब उसकी सूरत वास्तव में उसे पाने में सक्षम होगी।

रिटायर्ड प्रिंसिपल मलोत

स्कूल में पानी पीने की घंटी

डॉ. विजय गर्ग

केरल के स्कूलों में 'वाटर बेल' नाम से एक सराहनीय पहल शुरू की गई है। इस व्यवस्था के तहत पूरे स्कूल समय में दिन में तीन बार ऐसी घंटी बजाई जाती है, जो न तो कक्षा बदलने, न घर जाने और न ही भोजन अवकाश की सूचना देती है, बल्कि बच्चों को पानी पीने की याद दिलाने के लिए होती है। इसके लिए पांच मिनट का समय निर्धारित किया गया है। सामूहिक रूप से पानी पीना बच्चों के लिए एक खेल जैसा बन गया है, जिससे यह आदत उन्हें बोझ नहीं, बल्कि आनंददायक लगने लगी है। यह पहल बच्चों को डिहाइड्रेशन से बचाने के साथ-साथ एक स्वस्थ जीवनशैली की ओर प्रेरित कर रही है। बच्चों में पर्याप्त पानी पीने के पीछे कई

कारण होते हैं, लेकिन सबसे बड़ा कारण यह है कि उन्हें समय पर पानी पीने की याद नहीं रहती। घर में माता-पिता या अन्य सदस्य मौखिक रूप से पानी पीने की याद दिलाते रहते हैं, किंतु बच्चे दिन के सात से आठ घंटे या उससे अधिक समय स्कूल में बिताते हैं। ऐसे में यदि पानी की कमी हो जाए तो इसका सीधा असर बच्चों के स्वास्थ्य पर पड़ता है, जिससे थकान, एकाग्रता में कमी और अन्य स्वास्थ्य समस्याएं उत्पन्न हो सकती हैं। पढ़ाई के साथ-साथ खेल, व्यायाम और अन्य शारीरिक गतिविधियों के कारण बच्चों को पर्याप्त मात्रा में पानी की आवश्यकता होती है। इन्हीं समस्याओं से निपटने के लिए केरल में वाटर बेल की अवधारणा को लागू किया गया। हालिया शोध बताते हैं कि पानी का सेवन सीधे

मस्तिष्क के कार्य पर प्रभाव डालता है, क्योंकि मस्तिष्क के कुल द्रव्यमान का लगभग 75 प्रतिशत हिस्सा पानी होता है अनुमान के अनुसार, चार से आठ वर्ष के बच्चों को प्रतिदिन लगभग 1.2 लीटर, नौ से 13 वर्ष के बच्चों को 1.5 लीटर, और 14 वर्ष या उससे अधिक आयु के बच्चों को 1.9 लीटर या उससे अधिक पानी की आवश्यकता होती है। हालांकि यह मात्रा मौसम, पसोने और शारीरिक गतिविधियों के अनुसार घट-बढ़ सकती है।

जर्मनी में पांच और छह वर्ष के बच्चों पर किए गए एक सर्वेक्षण में पाया गया कि जिन बच्चों ने सुबह उठने के चार घंटे के भीतर दिन भर के पानी का लगभग 50 प्रतिशत सेवन कर लिया था, उनका मस्तिष्क अन्य बच्चों की

तुलना में अधिक प्रभावी ढंग से कार्य कर रहा था। विशेषज्ञों के अनुसार, पानी हार्मोन संतुलन बनाए रखने, रक्त प्रवाह को सुचारु रखने तथा मस्तिष्क तक विटामिन, खनिज और आक्सीजन पहुंचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, जिससे बच्चों की एकाग्रता और सीखने की क्षमता बढ़ती है। ऐसे में केरल के स्कूलों में लागू वाटर बेल योजना स्वस्थ बच्चों के निर्माण की दिशा में एक अत्यंत प्रभावी कदम है। यदि सभी स्कूल इस प्रकार के नवाचार अपनाएं, तो न केवल बच्चों का स्वास्थ्य बेहतर होगा, बल्कि बचपन में विकसित हुई ये अच्छी आदतें जीवन भर उनके साथ रहेंगी।

डॉ. विजय गर्ग सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोत पंजाब

नव वर्ष: बदलती तारीख नहीं, बदलती दृष्टि की जरूरत

- डॉ. प्रियंका सौरभ

नव वर्ष आते ही हमारे समाज में एक अजीब-सी हलचल शुरू हो जाती है। कैलेंडर बदलता है, मोबाइल पर शुभकामनाओं की बाढ़ आ जाती है, टीवी चैनलों पर 'न्यू इयर स्पेशल' कार्यक्रम चलने लगते हैं और हम सब एक-दूसरे को यह भरोसा दिलाने में जुट जाते हैं कि "इस साल सब अच्छा होगा।" लेकिन हर साल की तरह यह सवाल फिर वहीं खड़ा रह जाता है—क्या सचमुच कुछ नया होता है, या हम सिर्फ तारीख बदलकर पुराने ढर्रे पर ही चलते रहते हैं?

भारत जैसे देश में नव वर्ष केवल उत्सव नहीं, बल्कि आत्ममंथन का अवसर होना चाहिए। क्योंकि यहाँ साल सल हर किसी के लिए एक-सा नहीं होता। किसी के लिए यह छुट्टियाँ, पार्टियों और संकल्पों का समय है, तो किसी के लिए वही पुरानी सुबह—चार बजे की नींद, अधूरी इच्छाएँ और जिम्मेदारियों का अनवरत सिलसिला। माँएँ, कामकाजी स्त्रियाँ, दिहाड़ी मजदूर, किसान, शिक्षक, नर्स, ड्राइवर—इनके जीवन में नया साल अक्सर सिर्फ कैलेंडर की एक और तारीख बनकर रह जाता है।

नव वर्ष की रात के बीच जश्न रोशनीयों, आतिशबाजियों और संगीत के हम जश्न मनाते हैं, उन्हीं रातों में कोई नई अगले दिन के टिफिन की चिंता में जल्दी सो जाती है। कोई मजदूर अगली सुबह काम

मिलेगा या नहीं, इसी उधेड़बुन में करवटें बदलता है। कोई किसान आसमान की ओर देखकर यह हिसाब लगाता है कि यह साल बारिश देगा या कर्ज। हम अक्सर कहते हैं—“नया साल, नई शुरुआत।” लेकिन क्या यह नई शुरुआत सबके लिए संभव है? जब तक समाज की संरचनाएँ वही रहती हैं, सोच वही रहती है, असमानताएँ वही रहती हैं, तब तक नया साल सिर्फ एक भावनात्मक भ्रम बनकर रह जाता है। असल में बदलाव तब आता है जब उत्सव के शोर के बीच हम उन आवाजों को भी सुनने लगे जो अक्सर दबा दी जाती हैं। नव वर्ष का वास्तविक अर्थ तभी बनता है जब हम यह स्वीकार करें कि हर व्यक्ति का जीवन एक-सा नहीं है और समान अवसर बिना समान दृष्टि के संभव नहीं।

नव वर्ष पर सबसे ज्यादा शुभकामनाएँ स्त्रियों के नाम लिखी जाती हैं। उनसे उम्मीद की जाती है कि वे हर परिस्थिति में मुस्कुराती रहें, सब कुछ संभाल लें और कभी शिकायत न करें। लेकिन शायद ही कोई उनसे यह पूछता है कि वे थकी हैं या नहीं, उन्हें भी रुकने की जरूरत है या नहीं। कामकाजी स्त्री का नया साल अक्सर पुराने संघर्षों के साथ शुरू होता है। उससे अपेक्षा की जाती है कि वह घर भी सँभाले, नौकरी भी करे, भावनात्मक संतुलन भी बनाए रखे और इन सबके बीच खुद को भूल जाए।

समाज उसकी सहनशीलता को उसकी ताकत

कहकर महिमामंडित करता है, लेकिन उस सहनशीलता के पीछे छिपी थकान को देखने से बचता है। अगर यह नव वर्ष सच में नया होना है, तो सबसे पहले हमें स्त्री को त्याग की मूर्ति नहीं, बराबरी का नागरिक मानना होगा। उसे यह अधिकार देना होगा कि वह थके, बोले, असहमत हो और अपने लिए भी समय माँगे।

नव वर्ष केवल व्यक्तिगत संकल्पों का विषय नहीं है, यह सामूहिक जिम्मेदारी का भी समय है। हम अक्सर अपने लिए संकल्प लेते हैं—ज्यादा मेहनत करने का, ज्यादा कमाने का, बेहतर जीवन जीने का। लेकिन समाज के लिए संकल्प बहुत कम लेते हैं। क्या हम यह तय कर सकते हैं कि घर के काम को "मदद" नहीं, "जिम्मेदारी" मानेंगे? क्या हम यह सोच सकते हैं कि बच्चों को केवल प्रतिस्पर्धा नहीं, संवेदना भी सिखाएँगे? क्या हम यह स्वीकार करेंगे कि हर इंसान की गति एक-सी नहीं होती?

परिवार ही समाज की पहली पाठशाला है। अगर घर में बराबरी नहीं होगी, तो समाज में कैसे होगी? अगर घर में स्त्री की थकान को सामान्य मान लिया जाएगा, तो बाहर उसके अधिकारों की बात खोखली लगेगी। नव वर्ष पर अगर कोई सच्चा संकल्प लिया जाता चाहिए, तो वह यही है कि हम अपने घरों से बदलाव की शुरुआत करें।

युवा पीढ़ी के लिए नव वर्ष सपनों और उम्मीदों



का प्रतीक होता है। नए लक्ष्य, नई योजनाएँ और नई उड़ान। लेकिन आज का युवा भी कई दबावों में घिरा है—प्रतियोगिता, बेरोजगारी, सामाजिक तुलना और डिजिटल दुनिया का मानसिक बोझ। हर नव वर्ष पर उससे कहा जाता है कि वह कुछ बड़ा करे, कुछ साबित करे। लेकिन शायद ही कोई यह कहता है कि अगर वह थक जाए तो रुकना भी ठीक है, अगर वह असफल हो जाए तो उसका जीवन समाप्त नहीं हो जाता।

यह नव वर्ष युवाओं को यह भरोसा दे कि उनका मूल्य केवल उनकी उपलब्धियों से नहीं आँका जाएगा। मानसिक स्वास्थ्य, आत्मसम्मान और संतुलन भी उतने ही जरूरी हैं जितनी सफलता।

समाज को यह समझना होगा कि हर युवा मशीन नहीं है, बल्कि एक संवेदनशील इंसान है। नव वर्ष पर सरकारें, संस्थाएँ और मीडिया विकास की नई योजनाओं की घोषणाएँ करते हैं। सड़कें, इमारतें, ऑफिसेस और लक्ष्य—सब कुछ विकास के नाम पर गिनाया जाता है। लेकिन विकास का अर्थ केवल भौतिक उन्नति नहीं हो सकता। असली विकास तब होता है जब समाज का अखिरी व्यक्ति भी यह महसूस करे कि वह अकेला नहीं है, उसकी पीड़ा मायने रखती है।

जब तक संवेदना विकास की भाषा का हिस्सा नहीं बनेगी, तब तक नया साल केवल नई योजनाओं की सूची बनकर रह जाएगा। हमें यह सोचने की जरूरत है कि क्या विकास की दौड़ में हम इंसान होता तो नहीं भूल रहे? क्या लाभ और मुनाफे से आगे भी कुछ है जिसे बचाए रखना जरूरी है? नव वर्ष का सबसे बड़ा अर्थ आत्ममंथन है। खुद से सवाल करने का साहस कि हम कहाँ चूके, किसके साथ अन्याय के गवाह बने और चुप रहे। यह आत्ममंथन व्यक्तिगत भी होना चाहिए और सामाजिक भी। क्योंकि जब तक हम अपनी भूमिका नहीं पहचानेंगे, तब तक किसी बदलाव की उम्मीद करना व्यर्थ है।

नया साल कैसा हो—यह तय करने की जिम्मेदारी ही हमारी ही है। अगर यह साल केवल शुभकामनाओं तक सीमित रह गया, तो यह भी बाकी सालों जैसा ही होगा। लेकिन अगर यह हमें थोड़ा ज्यादा मानवीय, थोड़ा ज्यादा जिम्मेदार और थोड़ा ज्यादा न्यायपूर्ण बना सके, तो यही इसकी सबसे बड़ी उपलब्धि होगी।

नव वर्ष कोई जादुई रेखा नहीं खींचता जो सब कुछ बदल दे। बदलाव हमसे आता है—हमारी सोच से, हमारे व्यवहार से और हमारे छोटे-छोटे निर्णयों से। अगर यह नव वर्ष हमें दूसरों की पीड़ा देखने, समझने और उसके प्रति संवेदनशील होने का अवसर दे सके, तो यही इसका वास्तविक उत्सव होगा।

क्योंकि नया साल तभी नया होता है, जब समाज की दृष्टि नई हो।

साल 2025 : आध्यात्म से कृत्रिम बुद्धिमत्ता तक भारत की वैश्विक यात्रा

गजेंद्र सिंह

साल 2025 की शुरुआत भारत ने जिस दृश्य के साथ की, वह केवल एक धार्मिक आयोजन नहीं बल्कि एक वैश्विक वक्तव्य था। प्रयागराज में आयोजित महाकुंभ 2025 में 66 करोड़ से अधिक लोगों ने त्रिवेणी संगम में डुबकी लगाई— इसे मानव इतिहास का सबसे बड़ा शांतिपूर्ण समागम माना जा रहा है। इस महासमागम में 183 देशों से आए 30 लाख से अधिक विदेशी श्रद्धालु शामिल हुए। 77 से अधिक देशों के 118 राजनयिकों का एक साथ कुंभ क्षेत्र में स्नान करना इस बात का संकेत था कि यह केवल आस्था का आयोजन नहीं, बल्कि वैश्विक सांस्कृतिक संवाद का मंच बन चुका है।

इसी तरह अयोध्या में श्रीराम मंदिर के निर्माण के बाद श्रद्धालुओं का ज्वार उमट पड़ा है जो हजारों वर्षों के इंतजार की तरसी आँखों का नतीजा है। उत्तर प्रदेश सरकार के अनुसार, साल 2025 के अंत तक लगभग 50 करोड़ श्रद्धालुओं के

अयोध्या पहुँचने की संभावना है। काशी विश्वनाथ, अयोध्या और प्रयागराज जैसे तीर्थस्थलों पर हर वर्ष आने वाले करोड़ों श्रद्धालु केवल आँकड़े नहीं हैं—वे उस सनातन सभ्यतागत ऊर्जा का प्रमाण हैं, जिससे भारत को सहस्राब्दियों से एकजुट रखा है।

लेकिन भारत के साल 2025 की कहानी यहीं से शुरू होती है। यही भारत, जो आस्था, दर्शन और परंपरा का वैश्विक केंद्र रहा है, आज कृत्रिम बुद्धिमत्ता, डिजिटल टेक्नोलॉजी और अत्याधुनिक विज्ञान में भी दुनिया का नेतृत्व करने की ओर अग्रसर है। यह उसी स्वाभाविक विकास का प्रमाण है जिसमें सनातन धर्म से विज्ञान और परंपरा से तकनीक तक भारत का मूल स्वभाव निरंतर परिरक्षित होता दिखाई देता है।

आज वैश्विक टेक्नोलॉजी इकोसिस्टम में भारत की पहचान केवल एक बाजार की नहीं बल्कि नेतृत्व करने वाले मानव मस्तिष्कों की है। दुनिया की सबसे बड़ी टेक कंपनियों के कृत्रिम बुद्धिमत्ता और टेक्नोलॉजी विभागों का नेतृत्व

भारतीय मूल के पेशेवर कर रहे हैं। प्रभाकर राघवन, गूगल के सर्च और टेक्नोलॉजी सिस्टम्स के प्रमुख, वैश्विक सूचना संरचना को आकार दे रहे हैं। अमर सुब्रमण्यम, एप्पल में कृत्रिम बुद्धिमत्ता और मशीन लर्निंग के उपाध्यक्ष, भविष्य के स्मार्ट डिवाइस के डिजाइन तय कर रहे हैं। रोहित प्रसाद, अमेज़न के हेड सॉल्यूटिस्ट (कृत्रिम बुद्धिमत्ता), एलेक्सा और जेनरेटिव कृत्रिम बुद्धिमत्ता के वैश्विक विकास का नेतृत्व कर रहे हैं। इसी सूची में विशाल शाह (मेटा कृत्रिम बुद्धिमत्ता प्रोडक्ट्स), अपर्णा रमानी (मेटा में वाइस प्रेसिडेंट ऑफ इंजीनियरिंग), शिल्पा कोहलकर (एनवीडिया में कृत्रिम बुद्धिमत्ता के लिए ग्लोबल हेड), और श्रीनिवास नारायण (ओपनएआई में बी टू बी एंजलिकेशन के मुख्य प्रोद्योगिकी अधिकारी) जैसे नाम शामिल हैं। ये केवल व्यक्तिगत सफलताएँ नहीं, बल्कि उच्च शिक्षा, संस्कृति और बौद्धिक परंपरा का परिणाम हैं जिसे भारत ने दशकों से पोषित किया है।

इसी पृष्ठभूमि में इन्हीं महीनों में वैश्विक

निवेश का रुझान असाधारण रूप से भारत की ओर तेजी से झुक रहा है। गूगल ने भारत में 2 बिलियन डॉलर की नई डिजिटल अवसरचना, क्लाउड और साइबर सुरक्षा पहलों की घोषणा की है। माइक्रोसॉफ्ट ने एआई डेटा सेंटर, स्क्रिलिंग कार्यक्रम और क्लाउड क्षमता विस्तार के लिए 1.5 बिलियन डॉलर की योजना जारी की है। अमेज़न ने 20 लाख नौकरियाँ सृजित करने का लक्ष्य रखते हुए लॉजिस्टिक्स, वेयरहाउसिंग, अमेज़न वेब सर्विसेज़ और रिटेल नेटवर्क में भारी निवेश बढ़ाया है। इसके अलावा, दुनिया की लगभग दो दर्जन बहुराष्ट्रीय टेक और विनिर्माण कंपनियों—जिनमें इंटेल, एनवीडिया, ओरेकल, फुजीत्सु, डेल, सोनी, हिटाची, सैमसंग, टीएसएमसी और सिएमएस शामिल हैं—भारत को अपनी अगली निवेश मंजिल के रूप में चुन रही हैं। सेमीकंडक्टर मिशन के तहत तब तक 8

बिलियन डॉलर से अधिक के निवेश प्रस्ताव या तो स्वीकृत हो चुके हैं या प्रक्रिया में हैं। माइक्रोन का गुजरात प्रोजेक्ट अकेले 2.75 बिलियन डॉलर का

है। व्यापार और विकास पर संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन की 2024 रिपोर्ट के अनुसार, 2023–24 में भारत दुनिया का दूसरा सबसे आकर्षक प्रत्यक्ष विदेशी निवेश गंतव्य बना—केवल अमेरिका के बाद। इसी वर्ष की पहली छमाही में 85 बिलियन डॉलर का निर्यात हुआ, और भारत ऑटोमोबाइल क्षेत्र में जापान को पीछे छोड़कर दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा वाहन निर्यातक बनकर उभरा है।

इस आर्थिक उछाल की सबसे बड़ी नींव भारत की जनसांख्यिकीय शक्ति है जहाँ औसत आयु 28 वर्ष है जबकि चीन में 39 और अमेरिका में 38। भारत के पास 6.5 करोड़ से अधिक उच्च कौशल वाले पेशेवर उपलब्ध हैं और डिजिटल-इकोनॉमी वर्कफोर्स 11 करोड़ से बढ़कर पाँच वर्षों में 17 करोड़ तक पहुँचने का अनुमान है। यही मानव पूँजी भारत को वैश्विक टैलेंट इकोनॉमी का वास्तविक इंजन बना रही है।

यही कारण है कि आज दुनिया में सबसे अधिक चर्चित मुद्दा है—भारतीय प्रतिभा की वैश्विक माँग। गूगल के बाद अब माइक्रोसॉफ्ट,

अमेज़न और दर्जनों अन्य कंपनियाँ भारत को केवल आउटसोर्सिंग हब नहीं बल्कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता इनोवेशन सेंटर के रूप में देख रही हैं। यह बदलाव वैश्विक आर्थिक भूगोल में ऐतिहासिक परिवर्तन का संकेत है—जहाँ नवाचार, मैनुफैक्चरिंग और कृत्रिम बुद्धिमत्ता इकोनॉमी का केंद्र पश्चिम से हटकर एशिया, और विशेष रूप से भारत की ओर बढ़ रहा है।

महत्वपूर्ण यह है कि यह तकनीकी उभार भारत की वर्षों पुरानी आध्यात्मिक पहचान को पुनर्जीवित करते हुए सनातन-विज्ञान के गहरे संबंध को और सशक्त बनाता है। कुंभ का अनुशासन, काशी की निरंतरता और राम की मर्यादा—ये सभी तत्व भारतीय चेतना में संतुलन, नैतिकता और दीर्घकालिक दृष्टि का निर्माण करते हैं। यही मूल्य आज कृत्रिम बुद्धिमत्ता और तकनीक के क्षेत्र में भारत को उसके मूल दृष्टिकोण से जोड़ते हैं—जहाँ तकनीक केवल लाभ का साधन नहीं, बल्कि मानव कल्याण का माध्यम है।

नए साल की दहलीज पर, बीते कल की विदाई और कल का आमंत्रण

डॉ. मुश्ताक अहमद शाह सहज

हरदा मध्य प्रदेश

मेरे बीते हुए कल और आने वाले कल के नाम, एक और साल दबे पाँव, चुपचाप रुखसत हो रहा है, जो 2025 जो अभी-अभी आया था, अब अलविदा कहते हुए पीछे मुड़कर देखने को विवश कर रहा है। पीछे झाँकता हूँ तो यादों की लंबी कतार नहीं, बल्कि एक जीवंत जुलूस नजर आता है, खड़ी-मीठी हँसी, आँसुओं के नम रुमाल, अधूरे सपनों की स्मृति से सने कागजात, और उन चेहरों की परछाईयाँ जो कभी अपने थे, कभी पराए हो गए। 2025 सिर्फ़ तारीखों का पलटना न था, बल्कि भीतर के तुफानों, शांतियों और परिवर्तनों का साक्षी रहा, उसने दिखाया कि जीवन की किताब में हर पन्ना नया अध्याय लिखने का न्योता देता है।

पिछले साल ने गहरा सबक दिया कि कुछ चीजें हमारी कमजोरी से नहीं छूटतीं, बल्कि इसलिए छूटती हैं ताकि हम बेहतर के लिए जगह तलाश सकें, जैसे पुराना पेड़ कटे तो नई डालियाँ उगने का रास्ता बनाता है। जो सपने

अधूरे रह गए, वो शायद अभी कच्चे फल थे, जिन्हें पकने का और वक्त चाहिए था, जो रिश्ते रास्तों में बिछड़ गए, उन्होंने मुझे न सिर्फ़ अपनी अहमियत का एहसास कराया, बल्कि अकेले चलने का वो हौसला भी दिया जो किसी साथी से न मिलता। चुनौतियाँ आईं, आर्थिक तंगी की काली रातें, स्वास्थ्य की जट्टेजहद, और उन अपनों की खामोशी जो कभी आवाज थे—लेकिन हर कठिने ने सिखाया कि दर्द ही तो मरहम की पहचान बनाता है।

ऐ आने वाले 2026! मैं तुमसे कोई चमत्कार की उम्मीदें नहीं बाँधता, न स्वर्ग-सरीखी समृद्धि की कल्पना करता हूँ, बस इतनी सी गुजारिश है कि अपने साथ सुकून का आलम लाओ, वो सुकून जो दिल को ठहरने दे, दिमाग को सोचने का मौका दे। हाँ, कौंटे तो आँसू ही, जीवन का यही तो स्वभाव है, लेकिन उनके साथ चलने का हौसला और घाव भरने वाला साथी भी तो साथ लाओ। जो ख्वाहिशें 2025 में 'हसरत' बनकर रह गईं, करियर की ऊँचाइयाँ, रचनात्मक उड़ानें, पारिवारिक



एकजुटता, उन्हें इस साल 'हकीकत' का जामा पहनाने की दुआ देना, ताकि वो शब्द कागज़ से निकलकर ज़िंदगी में साकार हों।

इस बार मैं सचमुच पुरानी कड़वाहटों को 2025 की दहलीज पर ही पटक आया हूँ, वो

नाराज़गियाँ जो दिल में पनप रही थीं, जो गलतफ़हमियाँ जो रिश्तों को खा गईं, वो असफलताएँ जो आत्मविश्वास चुरा लेतीं, सबको अलविदा। मैं तैयार हूँ उन नए चेहरों के लिए जो अजनबी लगेंगे लेकिन अपने हो जाएँगे, उन नए रास्तों के लिए जो मेरी पहचान रचेंगे, और उन अप्रत्याशित खुशियों के लिए जो जीवन की किताब में अचानक उभर आती हैं। आओ, इस साल नई शुरुआत करें, रचनात्मकता को परवाना चढ़ाएँ, स्वास्थ्य को प्राथमिकता दें, और उन छोटी-छोटी जीतों को गले लगाएँ जो बड़े सपनों की सीढ़ी बनती हैं।

अलविदा 2025, तुम्हारी खड़ी-मीठी यादों के संग, जो दिल की डायरी में हमेशा संजोई रहेंगी।

खुशामदीद 2026, एक नई उम्मीद, ताजा मुस्कान और अनंत संभावनाओं के संग।

ख्वाबों का मुसाफ़िर।

बढता जल संकट: भविष्य की बड़ी चेतावनी

डा वीरेंद्रभाटी मंगल

जल जीवन का मूल आधार है। मानव सभ्यता का विकास नदियों के किनारे हुआ। कृषि,

उद्योग, संस्कृति और सामाजिक संरचना सब कुछ जल पर निर्भर रहा है। किंतु आज वही जल, जो कभी सहज और प्रचुर था, संकट का रूप धारण कर चुका है। विश्व के अनेक देश, विशेषकर भारत, गंभीर जल संकट की ओर बढ़ रहे हैं। यह संकट केवल प्राकृतिक नहीं, बल्कि मानव की अदूरदर्शिता, अनियंत्रित विकास और असंवेदनशील व्यवहार का परिणाम है। जल संकट वास्तव में भविष्य के लिए एक भारी चेतावनी है, जिसे यदि आज नहीं समझा गया तो कल के परिणाम भयावह होंगे।

भारत जैसे देश में, जहाँ एक ओर गंगा, यमुना, ब्रह्मपुत्र जैसी महान नदियाँ हैं, वहीं दूसरी ओर करोड़ों लोग पीने के पानी के लिए संघर्ष कर रहे हैं। भूजल स्तर लगातार गिरता जा रहा है। अनेक शहरों में टैंकरों पर निर्भरता बढ़ गई है। ग्रामीण क्षेत्रों में कुएँ और हैंडपंप सूख चुके हैं। जलवायु परिवर्तन ने इस संकट को और

वर्षा जल के भूमि में समाने की प्रक्रिया को बाधित कर दिया है, जिससे भूजल पुनर्भरण नहीं हो पाता।

जल संकट के सामाजिक और आर्थिक प्रभाव अत्यंत गंभीर हैं। स्वच्छ पेयजल की कमी से स्वास्थ्य संबंधी समस्याएँ बढ़ रही हैं। जलजनित रोग, कुपोषण और महिलाओं-बच्चों पर बढ़ता बोझ चिंता का विषय है। ग्रामीण क्षेत्रों में जल के लिए पलायन की स्थिति उत्पन्न हो रही है। शोधकों में जल को लेकर संघर्ष और विवाद बढ़ने की आशंका भी व्यक्त की जा रही है, जो सामाजिक स्थिरता के लिए खतरा है। यह संकट हमें चेतावनी देता है कि यदि हमने अभी ठोस कदम नहीं उठाए, तो आने वाली पीढ़ियों को भारी कीमत चुकानी पड़ेगी। समाधान संभव है, बशर्ते इच्छाशक्ति हो। वर्षा जल संचयन, पारंपरिक जल संरचनाओं का पुनर्जीवन, जल का संतुलित और न्यायसंगत वितरण जैसे सभी प्रभावी उपाय हैं। कृषि में सूक्ष्म सिंचाई तकनीकें, जैसे ड्रिप और स्प्रिंकलर, जल की बचत कर सकती हैं।

कड़ाके की ठंड और एम्स में इलाज

मनोज विसारिया

सर्दियाँ शुरू होते ही सरकार रैन-बसेरों की व्यवस्था में लगे जाती हैं। कहीं सरकारी जल अभाव जला जा रहे हैं तो कहीं संस्थाओं द्वारा कंसेल बांटे जाते हैं। ऐसा लगभग हर साल होता है लेकिन ये भी सच है कि बावजूद

इसके अहसास -से लोगों को खुले बासूम तले सोना ही पड़ता है। इनमें बड़ी संख्या बाहर से आए दिहाड़ी मजदूरों, छोटे कामगारों की होती है जो सपनों के इस शहर में रोजी-रोटी कमाने दिल्ली चले आते हैं।

इन्से इतर एक बड़ी संख्या उन लोगों की भी है जो कभी अपना तो कभी अपनों का इलाज करवाने दिल्ली का रुख करते हैं। एम्स अस्पताल बहुतांश को जोने की आस दिलाता है। जब अपने गाँव, शहरों के छोटे-मोटे अस्पताल हाथ खड़ा करने देते हैं, तो आँखों में सपना पलता है, चलो मेडिकल में दिखा आएँ। एम्स पहुँचते ही हकीकत का आदाना दिख जाता है। ये कोई ऐसा अस्पताल नहीं है, जहाँ तुरत-फुरत इलाज शुरू हो जाए, न ही इस बात की कोई गारंटी है कि एक तयशुदा समय पर इलाज मिलेगा या नहीं। एम्स में मरीज करे तो क्या करे। अगर डॉक्टर ये कहे कि 15 दिन बाद आना तो मरीज समेत उसके घरवाले भला जाएँ तो कहीं जाएँ।

अब जो कुछ संपन्न हैं वे किसी सस्ते होटल या धर्मशाला जैसी जगहों पर रुक जाते हैं लेकिन परेशानी उन लोगों को ज्यदा होती है, जिनकी जेब में गाँधी कम होते हैं। एम्स के बाहर खुले में रह रही बिहार के कटिहार से

कहा- कंबल बंट रहे हैं। बाबा जी चेतन्य हो उठे। ढूँढने लगे, कहीं कंबल बाँटने वाले लोग हैं। महिलाएं सुरक्षा के नाम पर दीवार के कोने में अपना बिस्तर लगा लेती हैं। रात में नपना करने वाले सबसे ज्यदा परेशान करते हैं। उनसे निपटने का झंझट सो अलगा।

बदिल कही जाने वाली दिल्ली की सबसे अच्छी बात ये है कि यहाँ रहे रहे अधिकतर लोगों ने यही बताया कि यहाँ सुवह-शाम कुछ संस्थाओं के लोग हमें खाना दे जाते हैं। कुछ ने कहा कि कई बार कुछ लोग हमें कंबल भी दे जाते हैं। वैसे यहाँ रह रहे लोग, भिखारी नहीं हैं बल्कि देश के एक बड़े अस्पताल में इलाज करवाने वाले वे मजबूर लोग हैं जिनको लगता है जैसे यहाँ सबका इलाज हो जाएगा। अलादीन के चिराग की तरह कोई जिन निकलेगा,

हमें ठोक कर देगा और आनन-फानन में हम बिल्कुल ठीक-ठाक होकर अपने घर चले जाएंगे। अब बड़ा अस्पताल, किस-किसका इलाज करे। यहाँ तो गरीब भी पहुँचता है और बड़े-बड़े थैलीशाह भी पर उनको इतना नहीं भटकना पड़ता। उन्हें समय पर इलाज मिल जाता है। ये कहानी सिर्फ अकेले एम्स की नहीं है, दिल्ली के हर बड़े अस्पताल में कर्मोवेश यही नजारा है। मुझे याद आते हैं सरकारी अस्पताल के वे तीमारदार जो अक्सर मरीज को दिए गए खाने में से अपने भी कुछ कौर निकाल लिया करते थे। अब जेब में पैसे कम हों तो क्या करें, खुद के खाने पर खर्च करे या दवा ले जाएँ।



अरावली बनाम तथाकथित विकास: प्रकृति के शोषण की कीमत

डा. विनोद बबबर

वर्तमान समय युवा युग कहलाता है। भारत को विशेष रूप से युवा भारत के नाम से संबोधित किया जा रहा है क्योंकि हमारी जनसंख्या का सबसे बड़ा भाग युवा है और तेजी से बदलती तस्वीर में युवा शिक्षा के क्षेत्र में अनेक कीर्तिमान स्थापित कर रहे हैं। उच्च शिक्षा, व्यवसाय से राजनीति तक, देश से विदेश तक हमारे युवाओं की धूम है तो ऐसे में हमारे मन का प्रफुल्लित होना स्वाभाविक है लेकिन इस सुखद परिवर्तन के साथ ही रहे अन्य परिवर्तनों की भी हम अनदेखी नहीं कर सकते। साथ-ही-साथ हमें यह भी स्वीकार करना होगा कि इस स्थिति के लिए कहीं-न-कहीं अपने बच्चों को अच्छे संस्कार न दे पाने के हम स्वयं ही दोषी हैं।

यह सर्वविदित ही है कि युवाओं का एक बड़ा वर्ग ऐसा है जिनकी सोच, संस्कृति, जीवनशैली एवं मनोरंजन के सारे साधन बदल गए हैं। बेशक अत्याधुनिक कहे जाने वाले सभी युवाओं के जीवन में ऐसा नकारात्मक परिवर्तन न आया हो लेकिन इस तथ्य को नकारा नहीं जा सकता कि भटकाव के कई नये द्वार खुल गए हैं। फैशनपरस्ती और ड्रम्स उनके जीवन का आधार बन गए हैं। इन्हें किसी से कोई मतलब नहीं है, केवल अपना मनोरंजन करना था मनमानी करना, इनकी नियति बन गई है। माता-पिता से इनका नाता सिर्फ लेने तक ही सीमित हो रहा है, उनके प्रति कोई दायित्व बोध नहीं। परिवार से ही नहीं, समाज और राष्ट्र के बारे में जानने की इच्छा भी औपचारिकता भर है। इनकी दिलचस्पी किसी न जाने किस दूसरे लोक में है। सकारात्मक सोच से बहुत दूर ये युवा वर्तमान युग की कई खोखली चीजों से प्रभावित हैं। अपने कर्तव्यों और कार्यक्षेत्रों से विमुख ये युवा पता नहीं कौन-सी नई राह बनाने में लगे हैं।

आज के युवाओं को प्रभावित करने वाली चीजों में से मुख्य हैं- इंटरनेट, अश्लील एवं फूड फिफ्ट, पब संस्कृति, ड्रम्स, फैशन, महंगे मोबाइल, जिनमें एमएमएस एवं एमएमएस करना, महंगी गाड़ियाँ एवं न सबके लिए मोटी रकम। ये चीजें ऐसी हैं, जो युवाओं में रचनात्मक एवं सृजनात्मक सोच के बजाय, घातक सोच को अंजाम दे रही हैं, परंतु हमारे युवा इस घातक सोच को ही आधुनिक युग की प्रतिष्ठा एवं सम्मान का स्वरूप देने में जुट गए हैं। इस संवैक्षण में जो तथ्य सामने आये हैं, उससे कष्ट तो होना स्वाभाविक है परंतु सच्चाई चाहे कितनी भी अप्रिय क्यों न हो उसे नजरअंदाज भी नहीं किया जा सकता है। यदि हम इस ओर से आँखें मूंदते हैं तो इसका अर्थ होगा कि हम भी इस संकट को हलके से ले रहे हैं।

इस तथ्य से कौन इंकार करेगा कि इंटरनेट का मायाजाल आज का सर्वाधिक आकर्षित करने वाला एक संशुक्र माध्यम है। संवैक्षण से पता चलता है कि युवा इंटरनेट से सूचनाएं प्राप्त करने जलान्वर्द्धक सामग्री से अधिक कुछ ऐसी बातें खोजते हैं जो उनके नैतिक पतन का रास्ता तैयार करती हैं। जैसे वेब पोर्टलों पर सेक्स से जुड़ी कई साइट्स हैं, जो सहज ही आकर्षित कर

लेती हैं। भारत के उच्च शिक्षण संस्थान जैसे दिल्ली, मुंबई, हैदराबाद, बंगलौर, खडगपुर, अहमदाबाद आदि बड़े महानगरों में स्थित आई.आई.टी., मेडिकल एवं आई.आई.एम. के युवाओं से पूछे जाने पर यह बात सामने आई कि इन संस्थानों में अधिकतर युवाओं एवं युवतियों के लिए सेक्स एक सामान्य बात है। विवाह से पूर्व ही इन्हें वैवाहिक जीवन की सामान्य गतिविधियों की अच्छी-भली जानकारी एवं अनुभव प्राप्त है। पाँच से सात प्रतिशत युवा, जो इस राह को नापसंद करते हैं, उन्हें विशिष्ट विशेषणों से नवाजा जाता है।

महंगे उच्च शिक्षण संस्थानों में शिक्षा प्राप्त करने का तात्पर्य है चरित्र, शील एवं सभी मूल्यों को ताक पर रख देना। किसी भी देश की धड़कन कहे जाने वाले तथा राष्ट्र को अपने मजबूत कंधों पर ढोकर ले जाने वाले युवाओं के एक वर्ग ने अश्लीलता की इतनी हदें पार कर ली हैं कि न तो उनके जीवन की धड़कन ही सही जंग से धड़क पा रही है और न वे स्वयं अपने अंतर्ग शरीर को लड़खड़ाते कदमों से झेल पा रहे हैं। जब ये स्वयं को नहीं संभाल पा रहे हैं तो समाज तत्वं राष्ट्र के भार को क्या वहन कर पाएंगे। अश्लीलता की आग में झुलस रहे युवाओं को ड्रम्स एवं शरा खूब जला रहे हैं। छोटी उम्र में ही नशे और कामुकता के प्रति बढ़ता आकर्षण शहर से गांव तक, विश्वविद्यालय से स्कूल स्तर तक, कुछ भी न करने वाले आवारा बच्चों में विशेष रूप से बढ़ रही है। दुर्भाग्य की बात है कि इस आत्माघाती प्रवृत्ति को क्षमता बढ़ाने का नाम दिया जा रहा है। इनके लिए क्षमता का अर्थ एम. ड्रम्स का अधिकतम उपयोग है। दुर्भाग्य से युवाओं में ही नकारात्मक पूरे समाज में होने वाली प्रवृत्तियों में शराब सहित अनेक प्रकार के ड्रम्स का प्रचलन बढ़ा है। इधर हुक्का पब के नाम पर भी बहुत कुछ चल रहा है।

कुछ वर्ष की पूर्व संस्था पर देश के विभिन्न भागों में हुड़दंगी दूखें सुनने को मिलते हैं जहाँ बहुत बड़ी मात्रा में नशीले पदार्थों का उपयोग किया जाता है। एक ओर समाज कानून व्यवस्था की बिगड़ती स्थिति से परेशान है तो दूसरी ओर राजधानी सहित देश के विभिन्न भागों में शराब की दुकानों की संख्या बढ़ी है। दूध और भी की दुकान पर बेशक एक भी व्यक्ति न हो लेकिन शराब की हर दुकान के बाहर लंबी लाइन देखने को मिलती हैं। आखिर इसका क्या अर्थ हो सकता है? आखिर किस ओर जा रहे हैं? क्या नशे की यह सूनामी हमें सर्वनाश की ओर ले जा रही है?

पिछले दिनों संसद के केंद्रीय कक्षा में एक सांसद का ईसिगरेट का उपयोग करते हुए वीडियो वायरल हुआ जबकि भारत में ईसिगरेट के व्यापार बिक्री पर प्रतिबंध है। इस गंभीर मामले की शिकायत लोकसभा को अध्यक्ष को की गई परंतु अब तक कोई कार्रवाई न होने से देश में गलत संकेत जाता है। दुर्भाग्य की बात यह है कि उस दल के नेतृत्व में भी अब तक उस संसद के विरुद्ध कोई कार्रवाई नहीं की। क्या यह मान लिया जाए कि कानून और लोक लाज की दृष्टि में प्रतिबंध नशे के उपयोग को गलत मानना छोड़ दिया जाए।

एशिया में आज सिंथेटिक रसायन और मस्तिष्क को प्रभावित करने वाले एंफेंटेमाइन्स की खूब मांग है। अनेक प्रकार के मादक पदार्थों की सूची में लिंकर चॉकलेट भी शामिल हो गई है जो युवाओं के हारमोन को बदल उनके भविष्य को नष्ट करने का एक बड़ा कारण बन रही है। सीमा पार से आने वाले नशे का सामान पंजाब सहित अनेक राज्यों को बर्बाद कर रहा है।

ओआरजी नेट पर ड्रग डाटाबेस को खंगालते एक 15 वर्षीय लड़के मंगेश से पूछने पर पता चलता है कि मादक पदार्थों का नुस्खा तैयार करने में महारत हासिल करना चाहता है और देशी एलएसडी का जादुई काढ़ा तैयार करके अपना चमकीला कैरिअर बनाना चाहता है। इस किशोर को पता नहीं कि वह मादक पदार्थों के तस्करों के लिए आसान माध्यम बन जा रहा है। एक संवैक्षण के अनुसार एम्स में नेशनल ड्रग डिपेंडेन्स ट्रीटमेंट सेंटर में प्रतिवर्ष 50 हजार से अधिक नशेड़ी पहुँचते हैं। इनमें से अरधे से अधिक की सामुदायिक देख-भाल की जाती है। इससे पता चलता है कि अफीम के उत्पादों का प्रयत्नसिंथेटिक मादक पदार्थों का इस्तेमाल करने वालों की संख्या इससे भी कम समय में तेजी से बढ़ी हुई पाई गई और उपचार कराने वालों में से इसके व्यसनियों की संख्या 15 फीसदी बढ़ी हुई मिली।

नेशनल सेंटर फॉर ड्रग यूज प्रिवेंशन के उपनिदेशक सुरेश कुमार का कहना है कि पैनिकलर, सिडेटिव, एंफेथोलाइटिक्स, हिप्नोटिक जैसी दवाओं के साथ ही अफीम से बंद रहा है। इस संदर्भ में 2008 में एक ए.एस.आर.ए. के तहत दक्षिण एशिया के देशों में 21 से 30 साल के 9465 लोगों को संवैक्षण किया गया था, इससे पता चला कि भारत में 5800 उत्तरदाताओं में से 43 फीसदी से अधिक दर्दीनवाक दवा की सुई इस्तेमाल हैं। नशीली दवाएँ लेना एक ऐसी आदत है जो बन जाने के बाद छोड़नी असंभव हो जाती है। हर व्यक्ति एक ही चीज पसंद नहीं करता है। कोई एक पसंद करता है तो कोई दूसरी। केंटामाइन्स चेतना सृजित करने वाला ड्रग है जिसे 'डेट रेप' ड्रम्स भी कहते हैं। यह नौद की दवा वेलियम से दस से बीस गुना प्रभावी है। कई बार इन औषधियों को कामुकता बढ़ाने के लिए लिया जाता है। इसका असर खत्म होते ही भारी झटका लग सकता है, अधिक सेवन से मौत भी हो सकती है। आइस, जिसे क्रैक, गलास या क्रिस्टल मेथ के नाम से जाना जाता है, यह भारी नशा देता है तथा हिंसक बना देता है। आस के युवा गांजा, भांग, अफीम को छोड़कर इन सिंथेटिक नशाओं के दीवाने बनते जा रहे हैं। विशेषज्ञों के मतानुसार नशे के इंजेक्शनों का प्रचलन बढ़ रहा है जो अपेक्षाकृत सस्ते लेकिन बहुत खतरनाक है।

बंगलौर स्थित विमहान्स में डिपेंडिक्शन सेंटर की प्रमुख के मतानुसार शहरों में ड्रम्स के साथ खतरनाक प्रयोग आम बात हो गई है। अधिकतर युवा पेशेवर साधियों के दबाव, उबाऊ जर्जदगी, तनाव एवं आवश्यकता से अधिक आय की वजह से मादक पदार्थों का

सेवन शुरू कर देते हैं। केवल व्यवसाय ही नहीं, छोटे-छोटे काम धंधे करने वाले मजदूरी करने वाले भी नशे के आदी अधिकतर लोग 20 से 40 वर्ष की उम्र के हैं, जिनमें महिलाएँ भी शामिल हैं। पिछले दशक में मादक पदार्थ सेवन शुरू करने की उम्र 20 वर्ष थी, वहीं आज घटकर 15 हो गई है।

इन ड्रम्स का चलन यहाँ तक है कि अब तो स्कूली बच्चे भी कई तरह के ड्रम्स का एक साथ प्रयोग कर रहे हैं। नशा विरोधी एक स्वयंसेवी संगठन द्वारा स्कूली बच्चों के संवैक्षण-अध्ययन के नतीजे संकेत करते हैं कि अब लड़के ही नहीं, लड़कियाँ भी नियमित रूप से मादक पदार्थों का इस्तेमाल करती हैं। उच्च शिक्षा संस्थानों में सिगरेट और शराब का प्रचलन बढ़ा है। देश की राजधानी दिल्ली के एक बहुचर्चित संस्थान में सिगरेट पीती हुई हमारे ही परिवारों की बेटियों को देखा जा सकता है। आज युवक की पाटी का स्वरूप बदला है। मदमस्त करने वाली लाइट, धुआँ, ड्राइ अइस फाग और कान फोड़ने वाले टेक्नो संगीत की धुन पर नाचते सैकड़ों युवक किसी डान्स पार्टी में नहीं, बल्कि आधुनिक रेव पार्टी में होते हैं। इस पार्टी में शराब नहीं बंटती है, परंतु इससे स्थान पर ऐसी चीजें बंटती हैं, जिन्हें दूसरे मान दिए गए हैं, पर ये सभी तरह-तरह के नशे हैं। इन सभी को आज कोकीन और अफीम के उत्पादों से भी अधिक इस्तेमाल किया जाता है। इन दिनों बरसों पुराना हुक्का आधुनिक रूप धरकर सामने आया है। बड़े-बड़े शीर्षिंग माल्स के अलावा अलग से ऐसे रेस्टोरेट खुल गए हैं, जो सरेआम धुएँ में दहकने युवाओं को विशेष स्थान मुहैया करा रहे हैं। लड़कियाँ भी बड़ी संख्या में इसकी शिकार हो रही हैं।

जीवन में यौवन एक ऊर्जा का आगार है। इस ऊर्जा को नशा, वासना एवं आधुनिक खुली संस्कृति में गंवाना नहीं चाहिए। युवा ऊर्जा एवं शक्ति के प्रतीक हैं, उन्हें इनकार करने का मनमाना ढंग से करने की छूट नहीं मिल सकती है। इसका नियोजन सदैव रचनात्मकता में, सृजनात्मकता में, पीड़ित मानवता की सेवा में, गरीबी, भ्रष्टाचार, अनादर का अतिके खिलाफ करना चाहिए। बहनों के साथ सरेआम छेड़छाड़ अथवा दुर्व्यवहार को कायर बने तमाशा देखने वाले युवाओं में लगता है साहस और संघर्ष करने का जज्बा लूट हो रहा है। आज भी युवा एकजुट होकर समाज के दुश्मन इन अपराधियों से मुक्ति का संकल्प ले ले तो ये अधिक समय तक टिक नहीं पाएंगे। कहीं ऐसा तो नहीं कि नशे के अधम व्यापारियों ने हमारे युवाओं के साथ-साथ पूरी व्यवस्था को को अपने हाथों के खिलाते बना लिया है। जिन्हें नशा-उन्मूलन में लगना चाहिए, क्या वे स्वयं भी नशे में हैं? यदि स्वयं और अपने परिवार समाज और राष्ट्र को प्रगति के पथ पर आगे बढ़ाना है तो युवाओं को अपनी नैसर्गिक क्षमता की पहचान करनी होगी। स्वामी विवेकानंद के उस महामंत्र को उन्हें अपने दिलों में उभारना होगा- 'उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वर्यानिबोधत' - अर्थात् उठो, जागो, और ध्येय की प्राप्ति तक रूको मत।

हरिहर हॉस्पिटल में स्पेशल फ्री आई कैंप 4 जनवरी को : डॉ. मनीष कुमार सालू

लॉगोवाल, 31 दिसंबर (जगसीर सिंह)

- शहर की जानी-मानी संस्था में मेडिकल आई चेक-अप कैंप लगाया जा रहा है, यह जानकारी देते हुए डॉ. मनीष कुमार सालू ने बताया कि यह स्पेशल आई कैंप 4 जनवरी को बडवर रोड पर स्थित हरिहर हॉस्पिटल में पूरी तरह फ्री लगाया जा रहा है। इस कैंप के दौरान पटियाला से आई स्पेशलिस्ट डॉ. अतिथेक हांडा अर्चना टोयल के साथ आ रहे हैं, जिसमें मरीजों का मॉडर्न मशीनों से चेकअप किया जाएगा और मरीजों के लेंस, दवाइयाँ और चश्मे फ्री दिए जाएंगे।



PUCC इंस्पेक्शन मार्च तक के लिए टाल दिया गया; 1 अप्रैल से एक्शन लिया जाएगा

मनोरंजन सासमल, स्टेट हेड ओइडिशा

भुवनेश्वर: लोगों की समस्याओं और मुश्किलों को ध्यान में रखते हुए सरकार ने PUCC इंस्पेक्शन का समय बढ़ा दिया है। राज्य सरकार ने PUCC की डेडलाइन बढ़ा दी है। सरकार ने डेडलाइन मार्च तक बढ़ा दी है। डेडलाइन 31 मार्च, 2026 तक बढ़ा दी गई है। इसके बाद, यानी 1 अप्रैल से PUCC सर्टिफिकेट नहीं होने पर सरकार कार्रवाई करेगी। ट्रांसपोर्ट मिनिस्टर ने एक जरूरी मीटिंग के बाद यह जानकारी दी। सरकार ने फरवरी की जगह 31 मार्च तक का समय दिया है। ट्रांसपोर्ट मिनिस्टर ने 31 मार्च तक पॉल्यूशन सर्टिफिकेट लेने को कहा। मिनिस्टर ने 1 अप्रैल से पॉल्यूशन की सख्ती से जांच करने का आदेश दिया। यह फैसला आज ट्रांसपोर्ट मिनिस्टर के घर पर हुई मीटिंग में लिया गया। यह फैसला ट्रांसपोर्ट मिनिस्टर, सेक्रेटरी और सीनियर अधिकारियों के साथ हुई मीटिंग में लिया



गया। पॉल्यूशन सर्टिफिकेट मिला तो गाड़ी पर हरे रंग का स्टिकर लगेगा। ट्रांसपोर्ट मिनिस्टर विभूति भूषण जेना का ऐलान।

पॉल्यूशन सर्टिफिकेट मिला तो तुरंत हरे रंग का स्टिकर लगेगा। यह स्टिकर ट्रांसपोर्ट डिपार्टमेंट देगा। पॉल्यूशन सर्टिफिकेट नहीं

होने पर एक्शन लिया जाएगा। ट्रैफिक पुलिस स्टेशन पर फाइन भरने के लिए लोगों को भारी भीड़। पॉल्यूशन सर्टिफिकेट के लिए लोगों को परेशान किया जा रहा है। जिनकी गाड़ियों पर पहले से फाइन है, उन्हें फाइन भरने तक पॉल्यूशन सर्टिफिकेट नहीं मिल सकता। इसीलिए ट्रैफिक पुलिस स्टेशन पर फाइन भरने के लिए लोगों की लंबी लाइन लगी हुई है। लोग जहां लंबे समय से फाइन नहीं भर रहे हैं, वहीं अब वे पिछले फाइन चुकाकर पॉल्यूशन सर्टिफिकेट बनवाने की जल्दी में हैं। नियमों का उल्लंघन करने पर अगर गाड़ी पर पहले कोई फाइन है और वह नहीं भरा है, तो पॉल्यूशन सर्टिफिकेट नहीं मिल सकता। पॉल्यूशन सर्टिफिकेट नहीं होने पर 10 हजार रुपये का फाइन लगेगा। इसलिए लोग 10 हजार रुपये भरने के डर से पिछले फाइन चुकाकर पॉल्यूशन सर्टिफिकेट बनवा रहे हैं।

नवगठित जिला हाँसी के प्रथम उप आयुक्त पद पर श्री राहुल नरवाल जी की नियुक्ति पर हार्दिक बधाई

परिवहन विशेष न्यूज

नवगठित एवं ऐतिहासिक जिला हाँसी को प्रथम उप आयुक्त के रूप में श्री राहुल नरवाल जी का नेतृत्व प्राप्त होना जिले के लिए एक अत्यंत गौरवपूर्ण एवं ऐतिहासिक क्षण है। उनकी नियुक्ति से जिले को सक्षम, दूरदर्शी एवं जनसेवा के प्रति समर्पित प्रशासनिक मार्गदर्शन मिलने की आशा जगी है।

“नव इतिहास की लिखी जा रही है आज इबारत, आशा, विश्वास और विकास की है यह शुरुआत।” हमें पूर्ण विश्वास है कि श्री राहुल नरवाल जी के कुशल नेतृत्व, ईमानदार प्रशासन, पारदर्शी कार्यशैली एवं जनकल्याण के प्रति प्रतिबद्ध दृष्टिकोण से नवजिला हाँसी सुशासन, समृद्धि और प्रगति की नई ऊँचाइयों को प्राप्त करेगा।

“जहाँ नीति हो न्यायपूर्ण, वहीं विकास का दीप जले।” नवगठित जिला हाँसी में श्री राहुल नरवाल जी का हार्दिक स्वागत करते हुए



हम ईश्वर से उनके उत्तम स्वास्थ्य, ऊर्जा एवं एक सफल, प्रेरणादायक तथा जनहितकारी कार्यकाल की कामना करते हैं।

— Dr. Priyanka

Saurabh
— Dr. Satywan
Saurabh
स्वतंत्र लेखक। शिक्षाविद।
सामाजिक चिंतक

इस्काँन ने शास्त्रीय आधार पर रथयात्रा की लचीली तारीखों का बचाव किया

मनोरंजन ससमल, स्टेट हेड ओइडिशा

भुवनेश्वर: विद्वान बोर्ड ने पुरी मंदिर प्रशासन की आपत्तियों के जवाब में पंचरात्रिक ग्रंथों और आचार्यों के अधिकार का हवाला दिया, गैर-भागीदारी के दावों का खंडन किया

इस्काँन इंडिया स्कॉलर्स बोर्ड ने श्री जगन्नाथ मंदिर प्रशासन की उन चिंताओं पर एक विस्तृत जवाब जारी किया है, जिसमें इंटरनेशनल सोसाइटी फॉर कृष्णा कॉन्सर्नेशन द्वारा पुरी में मनाई जाने वाली पारंपरिक आषाढ़-शुक्ल-द्वितीया के अलावा अन्य तारीखों पर रथयात्रा मनाने पर सवाल उठाए गए थे।

सितंबर में जारी किए गए 95-पृष्ठों के दस्तावेज में, STA ने दुनिया भर में अलग-अलग तारीखों पर रथ उत्सव मनाने की इस्काँन की प्रथा पर सवाल उठाया था, यह तर्क देते हुए कि पवित्र तिथियों के संबंध में शास्त्रीय नियमों को किसी भी परिस्थिति में बदला नहीं जा सकता है। IISB ने तब से व्यापक शास्त्रीय उद्धरणों के साथ एक व्यापक खंडन प्रदान किया है, जिस पर STA ने अभी तक कोई जवाबी प्रतिक्रिया जारी नहीं की है।

IISB का जवाब, जो पाँच विद्वानों के अनुभागों में संरचित है, यह तर्क देता है कि स्कंद पुराण और प्रश्न संहिता सहित कई शास्त्र, रथयात्रा समारोहों के लिए वैकल्पिक तारीखों का प्रावधान करते हैं। बोर्ड का तर्क है कि पुरी मंदिर के स्वयंभू (स्वयं प्रकट) देवता इस्काँन के पंचरात्रिक-स्थापित



देवताओं से अलग हैं, जो अलग-अलग अनुष्ठान दिशानिर्देशों का पालन कर सकते हैं।

इस आदान-प्रदान में भागीदारी के संबंध में दावों और प्रति-दावों का दौरा चला है। पहले, 20 मार्च 2025 को भुवनेश्वर में एक आमने-सामने विद्वानों की बैठक आयोजित की गई थी, जहाँ IISB प्रतिनिधियों ने गजपति राजा दिव्यसिंह देब की उपस्थिति में SUTA विद्वानों के सामने शास्त्रीय प्रमाण प्रस्तुत किए। इस्काँन प्रतिनिधियों का कहना है कि उन्होंने लिखित प्रस्तुतियों और सीधे बातचीत दोनों के माध्यम से कई अवसरों पर ठोस शास्त्रीय जवाब दिए हैं। IISB ने चिंता व्यक्त की है कि इन मुलाकातों और उनकी वेबसाइट पर उपलब्ध दस्तावेजी प्रतिक्रियाओं के बावजूद, बयान जारी है।

SUTA के मुख्य प्रशासक डॉ. अरविंद पाधी और गजपति राजा ने पारंपरिक तारीख की विशिष्टता पर अपनी स्थिति बनाए रखी है। हालांकि, इस्काँन विद्वानों का तर्क है कि

उनकी गैर-प्रतिक्रियाशीलता का चित्रण गलत है, और उन्होंने अपने प्रकाशित सामग्री और मार्च की बैठक को उठाए गए सवालों के साथ निरंतर विद्वानों की भागीदारी के प्रमाण के रूप में इंगित किया है। इस्काँन की स्थिति का मुख्य आधार संस्थापक-आचार्य ए.सी. भक्तिवेदांत स्वामी प्रभुपाद का अधिकार है, जिन्होंने कभी-कभी शिष्यों को स्थानीय परिस्थितियों के अनुसार, खासकर गैर-हिंदू देशों में, रथयात्रा वैकल्पिक तारीखों पर आयोजित करने का निर्देश दिया था। IISB रमन: कृष्ण निवेशेत् (मन को कृष्ण में लगाना) के सिद्धांत को औचित्य के रूप में उद्धृत करता है, यह तर्क देते हुए कि जब कठोर पालन सार्वजनिक भागीदारी हो, रोकेगा, तो भक्तिपूर्ण स्मरण को सुविधाजनक बनाना प्राथमिकता लेता है।

विद्वान इस्काँन के सगुण ब्रह्म सिद्धांत, जो कृष्ण के स्वरूप को स्वाभाविक रूप से पवित्र मानता है, और अद्वैत वेदांत के निर्गुण ढांचे के बीच अंतर करते हैं, यह सुझाव देते हुए कि यह दार्शनिक अंतर व्यावहारिक

असहमति का आधार है। IISB इस बात पर जोर देता है कि इस्काँन जन्माष्टमी और एकादशी जैसे अन्य त्योहारों की तिथियों का सख्ती से पालन करता है, और रथयात्रा की तारीखों में लचीलापन उल्लंघन के बजाय एक वैध शास्त्रीय विकल्प (विकल्प) का प्रतिनिधित्व करता है। दस्तावेज महाभारत की इस मान्यता का आह्वान करते हुए निष्कर्ष निकालता है कि आध्यात्मिक अधिकारियों के बीच असहमति वैदिक परंपरा में निहित है, मानकीकरण के बजाय सम्मानजनक सह-अस्तित्व का प्रस्ताव करता है।

दोनों संस्थानों ने अपनी स्थितियों को शास्त्रीय निष्ठा के संदर्भ में प्रस्तुत किया है, यह आदान-प्रदान समकालीन वैष्णव अध्येस के भीतर एक महत्वपूर्ण धार्मिक संवाद का प्रतिनिधित्व करता है। दोनों पक्षों के सार्वजनिक बयानों की निरंतर प्रकृति से पता चलता है कि यह मामला व्यापक हिंदू समुदाय के भीतर सक्रिय चर्चा का विषय बना हुआ है।

दारुल उलूम में अरबी कक्षा एक से अरबी कक्षा तीन तक के बाहरी छात्रों को प्रवेश नहीं मिलेगा

पिछले कई वर्षों से मदरसों का ध्यान इस ओर आकर्षित किया जा रहा है कि इन कक्षाओं में पढ़ने वाले छात्रों को बेहतर तालीम दी जाए, इसके बाद उन्हें दारुल उलूम में प्रवेश के लिए भेजा जाए, हुसैन नई व्यवस्था में देवबंद के छात्रों, संस्था के उस्ताद व कर्मचारियों के बच्चों के लिए छूट रखी गई

परिवहन विशेष न्यूज

देवबंद: इस्लामी तालीम के प्रमुख केंद्र दारुल उलूम ने नए साल की शुरुआत में बड़ा फैसला लिया है। संस्था में अब बाहरी छात्रों को अरबी कक्षा एक से अरबी कक्षा तीन तक की कक्षाओं में प्रवेश नहीं दिया जाएगा। जबकि स्थानीय छात्रों के लिए इसमें छूट रखी गई है। शिक्षा व्यवस्था को मजबूत और व्यवस्थित करने के लिए दारुल उलूम प्रबंधन ने अहम फैसला लिया है। संस्था की एकेडमिक



कार्टिसिल (अकादमिक परिषद) ने बैठक के बाद निर्णय लिया है कि संस्था में अरबी की छोटी कक्षाओं में बाहरी छात्रों को प्रवेश नहीं दिया जाएगा। इस संबंध में शिक्षा प्रभारी

मौलाना हुसैन हरिद्वारी ने बताया कि दारुल उलूम में अरबी कक्षा एक से अरबी कक्षा तीन तक के बाहरी छात्रों को प्रवेश नहीं मिलेगा, उन्हें शुरुआती पढ़ाई अपने पुराने और स्थानीय

मदरसों में ही पूरी करनी होगी, जबकि इसके बाद वह संस्था में प्रवेश के लिए आवेदन कर सकते हैं। उन्होंने कहा कि पिछले कई वर्षों से मदरसों का ध्यान इस ओर आकर्षित किया जा रहा है कि इन कक्षाओं में पढ़ने वाले छात्रों को बेहतर तालीम दी जाए, इसके बाद उन्हें दारुल उलूम में प्रवेश के लिए भेजा जाए। लेकिन उसके बावजूद इस गंभीरता से नहीं लिया गया। संस्था में प्रवेश की व्यवस्था होने के कारण छोटी कक्षाओं के छात्र दारुल उलूम का रुख करते हैं। इसमें बहुत समय लगता है, जबकि यहां प्रवेश न मिलने की वजह से यह छात्र वापस पुराने मदरसों में भी नहीं पहुंचते। इसलिए सर्वसम्मति से यह निर्णय लिया गया है कि अरबी कक्षा एक से कक्षा तीन तक के बाहरी छात्रों को प्रवेश नहीं दिया जाएगा। मौलाना हुसैन हरिद्वारी ने बताया कि इस नई व्यवस्था में देवबंद के छात्रों, संस्था के उस्ताद व कर्मचारियों के बच्चों के लिए छूट रखी गई है।

अमूल्य हैं स्त्री धन...!

स्त्री को चल संपत्ति के रूप में जाने लगा है आँका, विवाह आर्थिक सौदेबाजी का माध्यम बना खाका। ससुराल पक्ष ने केवल सुख-सुविधा को ही तलाशा, एक रंगीन टीवी, मोटरसाइकिल नगद मूल्य आशा।

उपहारों और सामाजिक अपेक्षाओं की लेंते हैं आइ, विधिक परिभाषाओं से फिसल रही बने 'तिल-ताड़'। यह मात्र आपराधिक घटनाएँ नहीं, हिंसा का घोटक, भारतीय समाज की 'पितृसत्तात्मक' संरचना घातक।

विवाह को उपभोक्तावाद ने नैतिक दिशाहीन में ढेला, स्त्री देह, श्रम व उत्तराधिकार पे न हो वर्चस्व का मेला। विवाह में स्त्री की समानता के भाव को विन्हित करें, स्त्री धन अमूल्य हैं-माँ, बहन, बेटी सम्मान ध्यान धरें। (संदर्भ-सुप्रीम कोर्ट की नवविवाहिता की मृत्यु पर टिप्पणी)

संजय एम तराणेकर
(कवि, लेखक व समीक्षक)
इन्दौर-452011 (मध्य प्रदेश)

महकें हर नवभोर पर, सुंदर-सुरभित फूल

बने विजेता वह सदा, ऐसा मुझे यकीन।
आँखों में आकाश हो, पाँवों तले जमीन ॥

पहचान।
पार करे मझधर वो, सपनों का जलयात्रा ॥

छू लेती आकाश को, मन से उठी हूँकार ॥

तू भी पाएगा कभी, फूलों की सीगात।
धुन अपनी मत छोड़ना, सुधरे हो हालात ॥

तरकश में हो हौसला, कोशिश के हों
तीर।
साथ जुड़ी उम्मीद हो, दे पर्वत को चीर ॥

उड़े वही आकाश में, अपने पंख पसार ॥

बीते कल को भूलकर, चुन डालें सब शूल।
महकें हर नवभोर पर, सुंदर-सुरभित
फूल ॥

नए दौर में हम करें, फिर से नया प्रयास।
शब्द कलम से जो लिखें, बन जाए
इतिहास ॥

हँसकर साथी गाइए, जीवन का ये गीत।
दुःख सरगम-सा जब लगे, मानो अपनी
जीत ॥

तूफानों से मत डरो, कर लो पेनी धार।
नाविक बैठे घाट पर, कब उतरें हैं पार ॥

आसमान को चीरकर, भरते वही उड़ान।
जहाँ हौसलों में सदा, होती जिनके जान ॥

सुख-दुःख जीवन की रही, बहुत पुरानी
रीत।
जी लें, जी भर ज़िंदगी, हार मिले या
जीत ॥

छले पाँवों में पड़े, मान न लेना हार।
कौंटों में ही है छुपा, फूलों का उपहार ॥

उठो चलो, आगे बढ़ो, भूलो दुःख की बात।
आशाओं के रंग से, भर लो फिर
जन्मत ॥

खुद से ही कोई यहाँ, बना नहीं कबीर।
सहनी पड़ती है उसे, जाने कितनी पीर ॥

छोड़े राह पहाड़ भी, नदियाँ मोड़े धार।

— डॉ. सत्यवान सौरभ

आशा है नव साल की, सुखद बने पहचान ॥

खिली-खिली हो ज़िंदगी, महक उठें अरमान।
आशा है नव साल की, सुखद बने पहचान ॥

जाने वाला जाएगा, कौन सके है रोक ॥

दर्द-दुखों का अंत हो, विपदाएँ हों दूर।
कोई भी न हो कहीं, रोने को मजबूर ॥

पथ के शूलों से डरे, यदि राही के पाँव।
कैसे पहुँचेगा भला, वह प्रियतम के गाँव ॥

छेड़ रही है प्यार की, मीठी-मीठी तान।
नए साल के पंख पर, खुशबू भरी उड़ान ॥

रुको नहीं, चलते रहो, जीवन है संघर्ष।
नीलकंठ होकर जियो, विष तुम पियो सहर्ष ॥

बीत गया यह साल तो, देकर सुख-दुःख मीत।
क्या पता? क्या है बुना? नई भोर ने गीत ॥

दुःख से मत भयभीत हो, रोने की क्या बात।
सदा रात के बाद ही, हँसता नया प्रभात ॥

माफ़ करे सब गलतियाँ, होकर मन के मीत।
मिटे सभी की वेदना, जुड़े प्यार की रीत ॥

चमकेगा सूरज अभी, भागेगा आँधियार।
चलने से कटता सफ़र, चलना जीवन सार ॥

जो खोया वह सोचकर, होना नहीं उदास।
जब तक साँसें हैं मिलीं, रख खुशियों की आस ॥

कौंटें बदले फूल में, महकेंगे घर-द्वार।
तपकर दुःख की आग में, हमको मिले निखार ॥

डॉ. प्रियंका सौरभ

पिंजड़े के पछी उड़ें, करते हम बस शोक।